दिल्ली के 22 खाजा

हज़रत खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का मकबरा

मोहम्मद अब्दुल
हफीज, बी.कॉम. द्वारा अनुवादित
अनुवादक 'मुस्लिम संत और रहस्यवादी' (फरीद एल्डिन
अत्तार हैदराबाद, भारत का तधकिराह अल-औलिया)

प्रस्तावना

दिल्ली के लिए यह गर्व की बात है कि यह पवित्र व्यक्तियों के साथ-साथ फकीरों का घर भी है। यहां अल्लाह के लोगों से जुड़े और अनुमति प्राप्त कई हजार प्रसिद्ध और मशहूर हस्तियां हैं जो अपने अंतिम विश्राम स्थलों में मीठी नींद में आराम कर रहे हैं।

इस किताब में अल्लाह के 22 पवित्र व्यक्तियों के जीवन विवरण शामिल हैं और किन्हें अपने समय का कुतुब कहा जा सकता है?
और अपने काल के आध्यात्मिक गुरु। और इसी कारण से, दिल्ली को कभी-कभी "22 ख्वाजाओं का निवास" भी कहा जाता है
(देहलीज़) क्योंकि 22 सूफी संत या ख्वाजा यहीं दफन हैं। "देहली" नाम "देहलीज़" से जुड़ा है।

कुतुब के कुतुब हज़रत ख़ाजा कुतुब उद्दीन बख़्तियार काकी अपने आध्यात्मिक गुरु हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के आदेशानुसार दिल्ली में बस गए थे। उन्होंने दिल्ली में जो राज्य स्थापित किया, उसकी आध्यात्मिक नींव और उसकी निशानियाँ आज भी देखने को मिलती हैं। धरती, समय की परिस्थितियाँ और घटनाएँ जो इस राज्य को इस मामले में समाप्त नहीं कर सकीं। वे नियम और कानून जिनके आधार पर इस राज्य की नींव रखी गई और वे नियम जो मानव कल्याण की गारंटी देते थे।

उन पवित्र व्यक्तियों में जो बहुत प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध हुए, कुछ को कुतुब अल-अक्ताब कहा गया, अन्य को महबूब इलाही, चिराग देलहवी, मुतवकिल, बाकी बिल्लाह, फ़िना फ़िल्लाह, मुहिब नबी, मकदूम कहा गया और कुछ अल्लामा (विद्वान) बन गए।

उन पवित्र व्यक्तियों से सूफी सिलसिले शुरू हुए जो भारत और पाकिस्तान तथा दूर-दूर के देशों के साथ-साथ उनके शहरों और गांवों में भी पाए गए।

इस पुस्तक में, दिल्ली के 22 पवित्र व्यक्तियों के जीवन विवरण और जीवनी, विचित्र घटनाओं और कहानियों, दुर्लभ उपयोगों, शानदार जीवन छोड़ने, रहस्योद्घाटन और दैनिक पाठ, वजीफों (अल्लाह ने कुरान में कई स्थानों पर कई नबियों के कष्टों के समय के वजीफों) का उल्लेख किया है।

इस प्रकार के पाठ समान कठिनाइयों से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण और लाभदायक होते हैं तथा कार्यक्रम, कथन, रहस्योद्घाटन और चमत्कार, प्रयास और आराधना विवरण, जिन्हें इस पुस्तक में जोड़ा गया है।

यह पुस्तक इस विषय में पवित्र व्यक्तियों की नई श्रेणी की संक्षिप्त रूप में पहली प्रस्तुति है।

यदि यह पुस्तक लगभग 22 पवित्र व्यक्तियों द्वारा स्वीकार की जाएगी तो यह मेरे लिए गर्व की बात होगी।

इस पुस्तक में अल्लाह के 22 पवित्र व्यक्तियों के जीवन विवरण शामिल हैं। और जिन्हें कुतुब (कुतुब, कुतुब, कुतुब, कुतुब या कोटब (अरबी: □□□ (जिसका अर्थ है 'धुरी', 'धुरी' या 'ध्रुव') कहा जा सकता है। कुतुब आकाशीय गति को संदर्भित कर सकता है और इसे खगोलीय शब्द या आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सूफीवाद में, कुतुब एक संपूर्ण मानव है, अल- इंसान अल-कामिल ('सार्वभौमिक पुरुष'), जो अपने समय के संत पदानुक्रम का नेतृत्व करते हैं, अपने काल के आध्यात्मिक गुरु। और इसी कारण से, दिल्ली को कभी-कभी "22 ख्वाजाओं का निवास" (देहलीज़) कहा जाता है क्योंकि 22 सूफी संत, या ख्वाजा, यहाँ रहते हैं।

वहाँ दफनाए गए। "देहली" नाम "देहलीज़" से जुड़ा हुआ है।

कुतुबों के कुतुब हज़रत ख़ाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी अपने आध्यात्मिक गुरु हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के आदेशानुसार दिल्ली में बस गए थे। उन्होंने दिल्ली में जिस राज्य की आध्यात्मिकता की नींव रखी, उसकी निशानियाँ आज भी देखने को मिलती हैं। वे सांसारिक परिस्थितियाँ और घटनाएँ जो इस राज्य को इस मामले में समाप्त नहीं कर सकीं। वे नियम और कानून जिनके आधार पर इस राज्य की नींव रखी गई और वे नियम जो मानव कल्याण की गारंटी देते थे।

उन पवित्र व्यक्तियों में जो बहुत प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध हुए, कुछ को कुतुब अल-अक्ताब कहा गया, अन्य को महबूब इलाही, चिराग दिल्ली, मुतवकिल, बाकी बिल्लाह, फ़िना फ़िल्लाह, मुहिब नबी, मकदूम कहा गया और कुछ अल्लामा बन गए।

उन पवित्र व्यक्तियों से सूफी सिलसिले शुरू हुए जो भारत और पाकिस्तान तथा दूर-दूर के देशों के साथ-साथ उनके शहरों और गांवों में भी पाए गए।

इस पुस्तक में 22 पवित्र व्यक्तियों के जीवन विवरण तथा उनकी जीवनी, विचित्र घटनाएं, कहानियां, दुर्लभ प्रयोग, सरल एवं साधारण जीवन, रहस्योद्घाटन एवं दैनिक पाठ कार्यक्रम, कथन, रहस्योद्घाटन एवं चमत्कार, प्रयास, तथा उपासना विवरण आदि को संक्षिप्त रूप में जोड़ा गया है।

इस पुस्तक का उर्दू संस्करण सबसे पहले जहूर खान ने लिखा था।
अल-हसन शरीब, मई 1964, द्वारा प्रकाशित, तथा इसका अंग्रेजी संस्करण मेरे (मोहम्मद अब्दुल हफीज,) द्वारा अनुवादित है।

अमेज़न किंडल लेखक) को अगस्त 2024 में अंग्रेजी भाषा में लॉन्च किया जाएगा।

यह पुस्तक इस विषय में अपनी नई श्रेणी की पहली प्रस्तुति है।

यदि यह पुस्तक स्वीकार कर ली जाती है तो यह दोनों लेखकों के लिए गर्व की बात होगी।

अंग्रेजी संस्करण की प्रस्तावना

इस पुस्तक का उर्दू संस्करण पहली बार मई 1964 में जहूर अल-हसन शारिब द्वारा लिखा और प्रकाशित किया गया था, और अंग्रेजी संस्करण का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद मेरे (मोहम्मद अब्दुल हफीज, अमेज़न किंडल लेखक) द्वारा वर्ष अगस्त 2024 में किया गया है।

अंतर्वस्तु

लेखक के प्रकाशन का रिकार्ड calmeo.com पर इस प्रकार है

Calameo.com BASIC खाते के नीचे मेरे
रिकॉर्ड खोजें और मेरे

प्रकाशन और दर्शकों की संख्या आदि का रिकॉर्ड दिखाएं। 368 प्रकाशन 44.6k (चवालीस हजार छह सौ)

व्यूज 7

डाउनलोड

0

टिप्पणियाँ

~~CALAMEO.COM कैलामेओ -~~

दस्तावेज़ों और पत्रिकाओं के लिए प्रकाशन मंच

रिकॉर्ड पुष्टीकरण

<confirmation@indiabookofrecords.in> 10:14PM (1 घंटा पहले) मेरे लिए, नीरजा, ibr

आवेदन आईडी: 91655

प्रिय मोहम्मद अब्दुल हफीज,

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की ओर से शुभकामनाएं!

बधाई हो, इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के तहत आपका दावा 'आईबीआर अचीवर' शीर्षक के रूप में अंतिम रूप से स्वीकार कर लिया गया है। हम आपके द्वारा दिखाए गए प्रयास और धैर्य की सराहना करते हैं।

आपके कौशल को स्वीकार किया गया है और सत्यापन के अनुसार

'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' के संपादकीय बोर्ड द्वारा किए गए कार्यों में से केवल सर्वश्रेष्ठ का ही चयन किया गया है और हमारे द्वारा अनुमोदित किया गया है।

शीर्षक और सामग्री हमारे सत्यापन के अनुसार बनाई गई है और नीचे दी गई है। शीर्षक और सामग्री को रिकॉर्ड लेखन के निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार तैयार किया गया है, जिसमें साक्ष्य और बुक रिकॉर्ड्स डेटाबेस के सावधानीपूर्वक सत्यापन के साथ व्यापक जांच शामिल है, जिसमें विसंगतियों की कोई गुंजाइश नहीं है।

इसलिए, श्रेणी, शीर्षक और विवरण के मामले में परिवर्तन पर विचार नहीं किया जाएगा, साथ ही चूंकि रिकॉर्ड अनन्य है, इसलिए अन्य प्रतिभागियों/समर्थकों/माता-पिता/मित्रों के नाम किसी व्यक्ति के रिकॉर्ड में शामिल नहीं किए जाएंगे।

शीर्षक एवं विवरण

हैदराबाद, तेलंगाना के

आईबीआर अचीवर मोहम्मद अब्दुल हफीज (जन्म 10 जनवरी, 1945) को एएसएन इस्लामिक बुक्स द्वारा प्रकाशित 'मुस्लिम सेंट्स एंड मिस्टिक्स' (आईएसबीएन: 978-9830653-54-9) नामक एक संपूर्ण पुस्तक का अंग्रेजी से कन्नड़ में गूगल अनुवाद का उपयोग करके अनुवाद करने के लिए 'आईबीआर अचीवर' की उपाधि दी गई है, जिसकी पुष्टि 8 अगस्त, 2024 को हुई है।

`.

मोहम्मद अब्दुल हफीज की पुस्तकें - गुडरीड्स
वैश्विक वेब आइकन

https://www.goodreads.com/author/list/
15034155.मोहम्मद_...

« पिछला 1 2 3 4 5 6 7 अगला » द्वारा क्रमबद्ध करें * नोट: ये हैं
इस लेखक की सभी पुस्तकें Goodreads पर उपलब्ध हैं। और अधिक जोड़ने के लिए

मोहम्मद अब्दुल हफीज की 161 किताबें, यहाँ क्लिक करें

गुडरीड्स पर 309 रेटिंग के साथ किताबें। मोहम्मद अब्दुल
हफीज का सबसे ज्यादा

भारत से शीर्ष समीक्षाएँ

श्रीनिन

5 में से 5 स्टार

पुस्तक बाबा ताजुद्दीन के लिए मोहम्मद अब्दुल हफीज द्वारा

Amazon.com पर

https://www.amazon.in/Biography-Hazrat-Baba- ताजुद्दीन-नागपुर-
ebook/dp/B01LFEKEGO

सभी आध्यात्मिक साधकों के लिए एक पुस्तक

21 जून 2020 को भारत में समीक्षा की गई

यह एक मूल्यवान पुस्तक है जिसमें अद्भुत और महानतम सूफी संतों में से एक ताजुद्दीन बाबा के जीवन से संबंधित दुर्लभ और रोचक विवरण हैं, जिन्होंने स्वतंत्र भारत में अपना अधिकांश जीवन नागपुर में बिताया था।

मुझे इस संत का नाम मास्टर ई. भारद्वाज द्वारा लिखित शिरडी साईं बाबा के जीवन इतिहास में मिला था। वहाँ बताया गया है कि एक बार शिरडी बाबा ने अपने शिष्यों को अपने सटका (एक छोटी छड़ी जिसे वे अपने साथ रखते थे) से पानी के बर्तन पर रहस्यमय तरीके से ढोल बजाकर भ्रमित कर दिया था। उन्होंने अपनी हरकत को यह कहकर समझाया कि वे नागपुर में ताजुद्दीन बाबा की झोपड़ी में लगी आग को बुझा रहे हैं।

दूसरी ओर, ताजुद्दीन बाबा ने बापू साहब बूटी नामक एक धनी आगंतुक को अपना शिष्य बनाने से इनकार कर दिया। उन्होंने उसे शिरडी बाबा से मोक्ष पाने के लिए कहा। दोनों संत आध्यात्मिक स्तर पर एक दूसरे के साथ संवाद में थे!

फिर मुझे ताजुद्दीन बाबा की संक्षिप्त जीवनी पढ़ने का सौभाग्य मिला, जिसे उन्हीं लेखक मास्टर भारद्वाज ने लिखा था, जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया। इस संक्षिप्त लेकिन बहुत मूल्यवान जीवनी की कमी यह थी कि इसमें वर्णित तथ्य और विवरण पूर्ण नहीं हैं या तार्किक क्रम में स्पष्ट नहीं किए गए हैं। जिससे असंतोष की भावना पैदा होती है। फिर भी पाठक को ताजुद्दीन की जबरदस्त आध्यात्मिक शक्ति और सार्वभौमिक प्रेम का अंदाजा हो जाता है। लेकिन इसने इस संत के बारे में और अधिक जानने की मेरी रुचि को जगाया।

इसने मुझे हमेशा संत की पूरी जीवनी और अधिक विवरण के साथ खोजने के लिए प्रेरित किया। जब मुझे संयोग से मोहम्मद अब्दुल हफीज की कृति मिली तो मैं रोमांचित हो गया और मैंने तुरंत इसका ऑर्डर दे दिया और अब मैं इस पुस्तक का एक खुश मालिक हूँ।

इस सूफी संत के जीवन से संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारियां, जो गुम हुई कड़ियों की तरह थीं, मुझे इस पुस्तक से प्राप्त हुईं:

1. संत के वंश के बारे में।

2. उनका बचपन तथा सांसारिक जीवन से ईश्वरीय जीवन की ओर संक्रमण; वे महत्वपूर्ण घटनाएँ जो उनकी पूर्णता के मार्ग में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती रहीं।

3. नागपुर के महाराजा और अभिजात वर्ग के अन्य सदस्यों के साथ उनके संबंध।

4. हिंदू शिष्यों और अनुयायियों के साथ उनके संबंधों का विस्तृत विवरण।

भारत आध्यात्मिकता का देश है। इसके कई आध्यात्मिक गुरुओं ने धर्म की संकीर्ण सीमाओं को पार करते हुए सार्वभौमिक मानवतावाद का प्रचार और अभ्यास किया है। उनके लिए यह मायने नहीं रखता था कि उनके आगंतुक किस धर्म के थे - उन्हें बिना किसी भेदभाव के मदद की जाती थी, क्योंकि केवल उनकी योग्यता मायने रखती थी, न कि उनकी जाति या पंथ।

स्वामी वीरब्रह्मेंद्र के मुख्य शिष्य सैयद नामक एक मुसलमान थे। शिरडी बाबा एक मस्जिद में रहते थे और उनकी पूजा मुसलमान और हिंदू दोनों ही समान रूप से करते थे। ताजुद्दीन बाबा भी इस मामले में अलग नहीं थे।

जैसा कि अब्दुल हफीज ने इस पुस्तक में एक हिंदू-शिष्य, वेंकट राव के बारे में लिखा है, जो रेलवे गार्ड के रूप में काम करता था।
लोगों ने उसे ताजुद्दीन के पास बैठे देखा, हालाँकि उसे वह स्थान छोड़कर नागपुर से बम्बई जाने वाली ट्रेन में बैठ जाना चाहिए था। उसकी नौकरी की यही माँग थी। लेकिन वेंकट राव वहाँ से नहीं जाता, क्योंकि वह बाबा की उपस्थिति में पूरी तरह से लीन है। अन्य लोगों को आश्चर्य हुआ कि उसे भी उसी समय उस ट्रेन में जाते हुए देखा गया, जो बम्बई के लिए रवाना हुई थी!

पश्चिमी भोगवाद इस घटना को "द्विस्थान" कहता है - ताजुद्दीन बाबा द्वारा अपनी अलौकिक शक्तियों के कारण कई बार दिखाया गया एक चमत्कार। लेकिन हफीज के वर्णन में एक सवाल खुला रह जाता है: क्या संत किसी स्थान पर प्रकट हुए थे?

ट्रेन में वेंकट राव का रूप? या फिर उन्होंने यह अलौकिक शक्ति अपने शिष्य को हस्तांतरित कर दी ताकि वह एक ही समय में दो स्थानों पर प्रकट हो सके? आध्यात्मिक गुरु दोनों ही काम करने में सक्षम हैं।

इस पुस्तक का एक बहुत ही रोचक हिस्सा यह है कि यह मुस्लिम या सूफी रहस्यवाद की झलक देती है (पृष्ठ 81 देखें) और यह समझाने की कोशिश करती है कि चमत्कार कैसे होते हैं। यदि लेखक दूसरे संस्करण की योजना बना रहा है तो इस विषय पर विस्तार से चर्चा करना आवश्यक है।

आधुनिक भारतीय इतिहास के दृष्टिकोण से यह पुस्तक अत्यधिक महत्वपूर्ण है। योग और रहस्यवाद को अभी तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पीछे की प्रेरक शक्तियों के रूप में पूरी तरह से मान्यता नहीं मिली है।

"गांधी और अली ब्रदर्स" नामक अध्याय में गांधीजी को ताजुद्दीन बाबा के पास ले जाते हुए दिखाया गया है और बाबा ने दो भविष्यवाणियाँ की हैं – एक गांधी के लिए और दूसरी अली ब्रदर्स के लिए। दोनों ही सच साबित होती हैं! मैं लेखक से अनुरोध करता हूँ कि यदि संभव हो तो इस अध्याय को अधिक विवरण और तस्वीरों के साथ विस्तृत करें। इससे इस पुस्तक का मूल्य सौ गुना बढ़ जाएगा!

भाषा के संबंध में कुछ कमियाँ हैं।

अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है। सही पूर्वसर्ग या सहायक क्रिया चुनना हमेशा आसान नहीं होता। इसके बावजूद पाठक संत ताजुद्दीन की ईश्वरीय छवि को देखता है

विदेशी भाषा की भाषाई कंटीली बाड़ के पीछे चमकते बाबा।

यह पुस्तक उन सभी लोगों के लिए अनुशंसित है जो रहस्यवाद, सार्वभौमिक प्रेम में रुचि रखते हैं जो धर्मों की संकीर्ण सीमाओं को पार करता है और आध्यात्मिक साधकों के लिए है।

डॉ. वनमाली गुंटुरू

परिचय

वास्तविकता का दर्पण

अल्लाह के पवित्र लोगों ने अपनी बातचीत और चरित्र से इस मामले में एक आदर्श जीवन शैली का नमूना पेश किया है। यह उनकी कम खाने, कम बोलने, कम सोने और अन्य लोगों के साथ कम संपर्क रखने की पद्धति थी।

वे अल्लाह से प्रेम करने की ऐसी अचेतन अवस्था में रहते थे कि उन्हें इस मामले में अपने अस्तित्व की स्थिति का पता ही नहीं था। अल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पण, भरोसा और संतोष, आशा और निराशा, प्रेम और भाईचारा, ईमानदारी और सेवा, गरीबी और भूख, तथा निस्वार्थता और दृढ़ता इस जीवन में उनका आदर्श उद्देश्य था।

मामला।

वे अपनी परेशानी और समाधान, दवा और उपचार, प्रार्थना, जुनून और संगीत, मृत्यु और जीवन, सफलता और इस मामले में अल्लाह की ओर से हार पर विचार करते हैं। वे अल्लाह के प्रेम के कैदी थे।

और अल्लाह के दीन के सहायक थे। गरीबों के सहायक थे। वे प्रबुद्ध बुद्धि वाले थे। और पूर्ण समकक्ष और बहुमूल्य और अतुलनीय मोती थे।

जब छात्र उनके शराब घरों में जाते हैं, तो वे उन्हें मार्गदर्शन दिखाते हैं और उनसे दुनिया की गंदगी साफ करते हैं।

1.हजरत खाजा कुतुब उद्दीन बख्तियार काकी

Machine Translated by Google

था

कुतुब वह

[illegible] या 'ध्रुव'। कुतुब आकाशीय रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सूफीवाद में, एक कुतुब एक आदर्श इंसान है, अल-इन्सान अल-कामिल ('सार्वभौमिक मनुष्य'), जो संतों के पदानुक्रम का नेतृत्व करता है। कुतुब सूफी आध्यात्मिक नेता है जिसका ईश्वर के साथ दिव्य संबंध है और वह ज्ञान देता है जो उसे सूफीवाद का केंद्र या धुरी बनाता है, लेकिन वह दुनिया के लिए अज्ञात है।] प्रत्येक युग में पाँच कुतुब होते हैं, और वे अचूक और विश्वसनीय आध्यात्मिक नेता होते हैं। वे केवल रहस्यवादियों के एक चुनिंदा समूह के सामने प्रकट होते हैं क्योंकि कुतुब व्यक्तियों के बीच "ईश्वर के प्रत्यक्ष ज्ञान की मानवीय आवश्यकता" होती है। हज़रत ख़ाजा कुतुब उद्दीन बख्तियार काकी दुनिया के कुतुब हैं।

सभी की सहमति के अनुसार, वह पवित्र व्यक्तियों के कुतुब के साथ-साथ लागू होने वाले शेख थे। वह विश्वासियों में से एक थे। सलीक (छात्र) व्यक्तियों के लिए एक आदर्श और समझदार व्यक्ति। वह चिसिट कुलीन लोगों के परिवार का प्रकाश और दीपक है। वह अजमेर के हजरत खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के प्रिय हैं। और बाबा फरीद गंज शकर के मार्गदर्शक हैं।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, हज़रत अलाउद्दीन सबा, हज़रत नसीरुद्दीन चिश्ती देहलवी और ख़्वाजा बंदे नवाज़ के आध्यात्मिक गुरु। वे अपना देश छोड़कर भारत आए। उन्होंने ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की सेवा और संगति को इस मामले में अपने लिए वरदान समझा। इस संगति और सेवा से उन्हें यह फल मिला

वह अजमेर के ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के उत्तराधिकारी, पहले खलीफा और संरक्षक थे। ख्वाजा अजमेरी ने उन्हें दिल्ली की संतता प्रदान की।

हज़रत ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती जिन्होंने अजमेर में अल्लाह और हक़ीकत व सच्चाई के इल्म की रौशनी का चिराग जलाया और इस चिराग के लिए ख़्वाजा कुतुब को तेज़ और तेज़ हवाएँ भी कम नहीं कर सकीं और न ही उन्हें इस चिराग की रौशनी कम करने दी गई और उनके बाद उनके वारिस बाबा फ़ैरद गंज शकर और उनके वारिस भी हुए जो इस चिराग की रौशनी को कायम रखने में सक्षम रहे और इस चिराग को इस मामले में रौशनी के साथ पाया जाता है।

इस दीपक के दीये भारत के प्रत्येक शहर और गांव में पाए जाते हैं।

जो सफलता मसीह के पवित्र व्यक्तियों को मिली और जिस पर वे गर्व महसूस करेंगे, वह इस मामले में कम होगी। मसीह के पवित्र व्यक्तियों ने चरित्र और बातचीत से ऐसी क्रांति ला दी है कि उसका प्रभाव भारतीय सभ्यता और संस्कृति, विचार ज्ञान और साहित्य, कविता, संक्षेप में जीवन के सभी क्षेत्रों में ऐसा प्रभाव और उसकी विशेषताएं हैं जो इस मामले में अभी भी पाई जाती हैं।

वंशावली रिकॉर्ड : हज़रत कुतुब उद्दीन बख्तियार काकी हुसैनी सादात के परिवार से हैं।

उनके पिता का वंशावली रिकॉर्ड: उनके वंशावली रिकॉर्ड के बारे में बहुत मतभेद है और उनकी वंशावली का उल्लेख इस प्रकार है।

खाजा कुतुबुद्दीन बिन सैयद मूसा बिन कमालुद्दीन बिन सैयद अहमद बिन सैयद मोहम्मद बिन इशाक हसन बिन सैयद मारूफ बिन सैयद अहमद बिन सैयद रजीउद्दीन बिन सैयद हुसम उद्दीन बिन सैयद रशीदुद्दीन बिन सैयद अब्दुल्ला जाफर मारूफ बिन अली बिन अली अलनातकी बिन सैयदना तकी अलजवाद अबू जाफर बिन सैयदना अली रेजा सैयदना मूसा काजिम बिन सैयदना जाफर सादिक बिन सैयदना अबू जाफर सैयदना मोहम्मद बाकर बिन सैयदना अली औसत इमाम जैनल आबिदीन बिन सैयदना इमाम हुसैन बिन इमाम औलिया हजरत अली करम अल्लाह वाज।

उनका वंशावली रिकॉर्ड 'सैर-अलक़ताब' पुस्तक से इस प्रकार जोड़ा गया है: हज़रत बख्तियार काकी बिन सैयद मूसा

बिन सैयद अहमद बिन सैयद कमाल बिन सैयद मोहम्मद बिन सैयद अहमद बिन सैयद इशाक बिन सैयद मारुफ़ बिन सैयद अहमद चिश्ती बिन सैयद रज़ीउद्दीन बिन सैयद हुसामुद्दीन बिन सैयद रशीदुद्दीन बिन सैयद जाफ़र बिन हज़रत इमाम मोहम्मद नकी अलजवाद बिन हज़रत इमाम अली मूसा रज़ा बिन हज़रत इमाम मूसा काज़िम बिन इमाम मोहम्मद बाक़र बिन हज़रत इमाम ज़ैन अल-आबिदीन बिन हज़रत सैयदना अली करम अल्लाह वाजा।

जन्म: उनकी जन्म तिथि आत्मा को प्रसन्न करने वाली खुशखबरी है। और शांति और सौहार्द का संदेश है। यह आध्यात्मिकता में प्रसन्नता और खुशी की प्रस्तावना है। जब वे अपनी माँ के गर्भ में थे, और उस समय से, उनकी पवित्रता और उत्कृष्टता प्रबल हुई, और उनकी माँ ने उनके बारे में बताया,

गर्भावस्था के दौरान, जब वह सुबह-सुबह तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठती थी, तो उसे 'अल्लाह अल-अल्लाह' की आवाज़ सुनाई देती थी, और यह आवाज़ उसके गर्भ से एक घंटे तक आती थी।

आधी रात के समय हज़रत इस फ़ानी दुनिया में आए। और उनके घर के चारों तरफ़ रोशनी थी। और रोशनी की वजह से उनकी माँ ने सोचा कि उस समय सूरज उग रहा है। तो उनकी माँ को इस बात पर आश्चर्य हुआ। उनकी माँ ने देखा कि हज़रत का सिर सजदे में झुका हुआ था। और अपनी एहसान भरी ज़बान से वो अल्लाह, अल्लाह कह रहे थे। कुछ देर बाद जब हज़रत ने अपना सिर सजदे से हटाया तो वो रोशनी घर में नहीं थी। एक अदृश्य आवाज़ हुई जिसमें कहा गया, "जो रोशनी तुमने देखी है वो हक़ीकत के राज़ों में से है और जो तुम्हारे बेटे के दिल में डाल दी गई है।"

उनका जन्म अवाश नामक स्थान पर हुआ था। यह स्थान बगदाद के उपनगरीय क्षेत्र में पाया गया था। इसे फ़ारसी क्षेत्र में भी दर्शाया गया है। कुछ लोगों ने अवाश को मरवा अल-नहर गाँव में लिखा है। कुछ लोगों ने फरगाना क्षेत्र के तवाबा जान में लिखा है। राजकुमार दार शिक्वा ने लिखा है कि उनका जन्म फरगाना के टोबा इंड जाम क्षेत्र के अवाश में हुआ था।

जन्म स्थान : उनका जन्म स्थान और उनके परिवार का संबंध अवसा फरगाना से जुड़ा हुआ है और वह गांव तोवाबा इंदजाम के नाम से जाना जाता है।

जन्म तिथि: उनकी जन्म तिथि के विषय में बहुत मतभेद है। उनकी जन्म तिथि 569 हिजरी है।

नाम: उसका नाम कुतुबुद्दीन है, लेकिन कुछ लोग सोचते हैं कि उसका नाम बख्तियार था, और कुतुबुद्दीन अल्लाह द्वारा दी गई एक उपाधि है।

लेकिन उन्हें बख्तियार कहने का कारण यह है कि उनके आध्यात्मिक गुरु हजरत खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती उन्हें बख्तियार कहकर पुकारते थे और इसी कारण वे बख्तियार के इस नाम से प्रसिद्ध थे।

उन्हें हजरत खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के हाथों प्रतिज्ञाबद्ध किया गया था, क्योंकि उन्होंने सूफी चिश्ती श्रृंखला में प्रतिज्ञाबद्ध किया था, इसलिए उन्हें चिश्ती कहा जाता था।

उपाधि: उनके आध्यात्मिक गुरु हजरत खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को कुतुब अल-अक्तब की उपाधि दी गई थी।

उनका पारिवारिक नाम काकी है। और उन्हें काकी कहने के पीछे कुछ कारण हैं। जब हज़रत कुतुबुद्दीन काकी दिल्ली में रहने लगे, तो उन्होंने जीवन के साधन बंद कर दिए थे। उन्होंने अपने परिवार के साथ बहुत ही खराब जीवन व्यतीत किया। हज़रत ख़ाजा कुतुब हमेशा तल्लीनता में रहते थे।

घर में खाने-पीने का प्रबंध उनकी पत्नी करती थीं।

एक पंसारी था, उसका नाम शराफुद्दीन था। और वो उसके पड़ोस में रहता था। और हजरत कुतुब की बीवी पंसारी की बीवी से उधार खरीदती थी और पैसे मिलने पर उसका इस्तेमाल करती थी

इस मामले में उसे रकम देने के लिए कहा गया था। और इस तरह के लेन-देन हो रहे थे।

एक दिन पंसारी की बीवी ने उसे ताना मारा "अगर उसकी तरफ से उधार नहीं है, तो उसका काम कैसे चलेगा?" और यह कहावत कुतुब साहब की बीवी को पसंद नहीं आई. उसने उससे किराने का सामान लेना बंद कर दिया. जब यह बात कुतुब साहब को पता चली, तो उन्होंने अपनी बीवी को उधार लेना बंद करने की सलाह दी. लेकिन ज़रूरत पड़ने पर बिस्मिल्ला को इस मामले में खिड़की से रोटी ले जाने को कहा. और उसकी बीवी ने ऐसा करना शुरू कर दिया. एक बार जब उसने यह बात पंसारी की बीवी को बताई, तो उसके बाद से पंसारी से रोटियाँ आनी बंद हो गईं.

अदृश्य स्रोत.

दार शिकवा ने अपने नाम के बारे में लिखा है कि जब हज़रत कुतुब ने अपना घर बसाना शुरू किया तो उन्हें काकी कहा जाने लगा। उन्हें किसी से कोई फ़ायदा नहीं मिला।

हज़रत हमेशा तल्लीनता में रहते थे और उनके लड़के गरीबी में जीवन गुजारते थे। भूख लगने पर वे किराने का सामान किराने वाले की पत्नी से उधार में ले लेते थे। जो उनके पड़ोस में रहता था। और इस तरह से वे अपना जीवन यापन करते थे।

एक दिन पंसारी की पत्नी ने उससे कहा, "अगर वह पड़ोस में नहीं रहेगी, तो तुम्हारी हालत बहुत खराब हो जाएगी।" यह कहावत कुतुब साहब की पत्नी को पसंद नहीं आई। उनकी पत्नी ने उधार न लेने का फैसला किया और एक दिन यह घटना कुतुब साहब को पता चली। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि वह किसी से उधार नहीं लेती। जरूरत पड़ने पर हाथ बँटाना।

कमरे की खिड़की में एक खिड़की होती थी, जिसमें से वह अपनी जरूरत के हिसाब से पकी हुई रोटी निकाल लेता था, और खुद भी उसका इस्तेमाल करता था और दूसरों को भी देता था। इसके बाद वह अपनी जरूरत के हिसाब से रोटी निकाल लेता था। और उन रोटियों को काकी कहते थे।

काकी कहने का दूसरा कारण यह है कि एक दिन अमीर खुसरो ने हजरत निजामुद्दीन औलिया से पूछा कि खाजा कुतुब को काकी क्यों कहते हैं? तो विद्वानों के सुल्तान ने कहा, "एक दिन वह अपने मित्रों के साथ दिल्ली में शम्सी जलाशय पर मौजूद थे, उस समय वहां ठंडी हवा चल रही थी, और उस समय मित्रों ने मुझसे कहा था कि अगर वहां गरम रोटी मिल जाए तो अच्छा है। यह सुनकर कुतुब साहब पानी के अंदर चले गए, और वहीं से मित्रों को गरम रोटी देने लगे। और इस तरह उस दिन से वह काकी के नाम से प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध हो गए।

उनके जीवन की शुरुआत: उनका लालन-पालन उनके माता-पिता के संरक्षण में हुआ और उनके पिता और माता दोनों को उन पर गर्व था। वे सोचते थे कि घर की बरकत दूध पीते लड़के के कारण ही हुई है।

जीवन का पहला सदमा: अभी उनकी उम्र डेढ़ वर्ष की थी, तभी उनके पिता इस नश्वर संसार से चले गये।

पालन-पोषण: कुतुब साहब के पालन-पोषण का सारा भार उनकी मां पर था, और वह उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण को अपना पवित्र कर्तव्य समझती थीं, और उनकी शिक्षा का प्रारंभिक भाग उनकी मां ने ही किया था।

1177 ई./573 हिजरी में बिस मिल्ला का पाठ

जब कुतुब साहब 4 साल, 4 महीने और 4 दिन के थे, तब उनकी माँ को उनके बीस मिल्ला पढ़ने की रस्म के बारे में चिंता होने लगी। संयोग से उन दिनों हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन ओवेश में रह रहे थे। वे अपने दौरे से वहाँ पहुँचे और ओवेश की यात्रा की। पूरे ओवेश शहर में उनकी पवित्रता की ख्याति थी। कुतुब साहब की माँ ने सोचा कि हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का ओवेश में रहना उनके बेटे के लिए एक अच्छी भविष्यवाणी थी। उन्होंने अपने बेटे की बीस मिल्ला रस्म को समय के पवित्र संत हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा पढ़ने का फैसला किया है। और उन्होंने कुतुब साहब को बीस मिल्ला रस्म के पाठ के लिए ख़ाजा साहब की उपस्थिति में आशीर्वाद के साथ भेजा है।

गरीब नवाज कुतुब साहब की स्लेट पर लिखना चाहते थे, तभी उन्हें एक अदृश्य पुकार सुनाई दी जिसमें कहा गया कि "अरे खाजा अब लिखना बंद कर दो क्योंकि काजी हमीद उद्दीन नागोरी वहां आ रहे हैं।" इतने में काजी हमीद उद्दीन नागोरी वहां आ गए और उनसे पूछा गया कि स्लेट पर क्या लिखना है। और कुतुब साहब ने उनसे कहा कि "सुब्हान लजी अस्सरा बिबादिही लिलन मिन मस्जिद हरम" लिखो। यह सुनकर काजी साहब हैरान हो गए और उन्होंने पूछा कि यह आयत कुरान के 15वें भाग में है। जब तुम कुरान पढ़ चुके हो। कुतुब साहब ने कहा "मेरी मां ने कुरान के 15 भाग याद कर लिए हैं। जो मैंने अपनी मां के पेट में अल्लाह की शिक्षा के कारण याद किए हैं।" यह सुनकर काजी साहब ने "सुब्हान लजी अस्सरा

इस आयत के अंत तक “बिबादीही लिलन मिन मस्जिद हरम” का पाठ करते हैं। उन्होंने चार दिनों में क़ुरआन से लेकर कुतुब साहिब तक की आयतें याद कर ली हैं।

स्कूल में दाखिला: जब कुतुब साहब पाँच साल के थे, तब उनकी माँ ने उन्हें स्कूल में दाखिला दिलाना चाहा। यह खुशी का मौका था। इस मौके पर उनकी माँ ने एक पार्टी रखी। और कुतुब साहब को मिठाई और कुछ पैसे लेकर नौकर के ज़रिए मोहल्ले के स्कूल में भेजा। रास्ते में एक फ़कीर की मुलाक़ात कुतुब साहब से हुई। फ़कीर ने नौकर से पूछा, “तुम इस ख़ुशनसीब को कहाँ ले जा रहे हो?”

और उसने उससे कहा कि वह उसे इलाके के स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए ले जा रहा है। पवित्र व्यक्ति ने उसे बताया और उसे अबा हाफ़ज़ के पास ले जाने के लिए दबाव डाला, क्योंकि वह पूर्ण है। और इस लड़के की शिक्षा इस मामले में उसके साथ जुड़ी हुई है।

कुतुब साहब ने पवित्र व्यक्ति की सलाह के अनुसार स्थानीय स्कूल शिक्षक की बजाय अबा हफ़ज़ के पास जाकर प्रार्थना की। जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अबा हफ़ज़ से कहा, "इस लड़के को उचित शिक्षा दी जानी चाहिए। और उससे बहुत से काम करवाने होंगे।"

कुतुब साहिब को अबा हफ़ज़ को सौंपकर वह पवित्र व्यक्ति वहाँ से चला गया। पवित्र व्यक्ति के वहाँ से जाने पर अबा हफ़ज़ ने सेवक से पूछा "क्या तुम जानते हो कि यह पवित्र व्यक्ति कौन था?" और उसने उसे बताया

“मैं उसके बारे में नहीं जानता।” और अबा हाफ़ज़ ने उससे कहा “वह ख़ाजा ख़िज़र था।”

हक़ीकत की तलाश: हज़रत कुतुब साहब हक़ीकत की तलाश में अपना देश छोड़कर चले गए और एक शहर में पहुँचे।
वह उस शहर में रह रहा था। शहर से बाहर एक मस्जिद थी। और मस्जिद के प्रांगण में एक ऊँची मीनार थी।

हज़रत कुतुब साहब को मालूम था कि रात में दो रकात नमाज़ पढ़कर और मीनार पर चढ़कर वह व्यक्ति ख़ाजा खिजर से मिल सकता है। कुतुब साहब ने सोचा कि यह उनके लिए अच्छा मौक़ा है और उन्होंने दो रकात नमाज़ पढ़कर मीनार पर नमाज़ पढ़ी और मीनार से नीचे उतर आए और वहीं ख़ाजा खिजर का इंतज़ार करने लगे। मस्जिद में कोई नहीं था। और वह मस्जिद से बाहर आए। उन्होंने एक पवित्र व्यक्ति को देखा। उस व्यक्ति ने कुतुब साहब से पूछा कि आप यहाँ रेगिस्तान में क्या कर रहे हैं?

हज़रत कुतुब ने उनसे वहाँ ख़ाजा ख़िजर से मिलने की अपनी गहरी प्रार्थना के बारे में बताया। यह सुनकर पवित्र व्यक्ति ने पूछा है, क्या आप दुनिया चाहते हैं? और ख़ाजा कुतुब ने कहा "नहीं," तब पवित्र व्यक्ति ने उन्हें बताया कि वे किसी व्यक्ति के कर्ज में हैं। हज़रत ने कहा "नहीं," तब उस पवित्र व्यक्ति ने इस मामले पर दबाव डालते हुए उनसे पूछा है कि वह ख़ाजा ख़िजर से क्यों मिलना चाहता है? "आप उसे क्यों खोज रहे हैं? वह भी आपके उदाहरण की तरह भटकने के प्रयासों में लगा हुआ है।" तो इस शहर में, एक है

पवित्र व्यक्ति जो अल्लाह की इबादत में लगा हुआ है। उसने उनसे (ख़ाजा ख़िजर) सात बार मिलने की इच्छा की, लेकिन इस मामले में उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई।

वहाँ बातचीत हो रही थी, और उसी समय मस्जिद से एक और पवित्र व्यक्ति वहाँ आया और वह पहले पवित्र व्यक्ति के पास खड़ा हो गया, और उसने हज़रत कुतुब का हाथ पकड़ लिया, और उसने पहले पवित्र व्यक्ति से कहा, "उसे दुनिया की चाहत नहीं है, या वह किसी व्यक्ति का कर्जदार नहीं है। और वह केवल आपसे मिलने की इच्छा रखता है।"

जब कुतुब ने यह सुना तो वह इस बात से बहुत खुश हुआ और उसे पता चल गया कि पहला पवित्र व्यक्ति एक अदृश्य व्यक्ति है और दूसरा व्यक्ति ख़ाजा ख़िजर है और इस समय तक उसने देखा कि दोनों पवित्र व्यक्ति वहाँ से गायब हो चुके थे।

सन् ११८६/५८२ हिजरी में प्रतिज्ञा: खाजा बख्तियार काकी शिष्य बनना चाहते थे और उस समय एक महमूद असफ़हानी थे जो अपने समय के पूर्ण दरवेश व्यक्ति थे। और कुतुब साहब का उनसे गहरा सम्बन्ध और श्रद्धा है। और वह उनके हाथों प्रतिज्ञा करना चाहते हैं। लेकिन ऐसा ही होगा, जो इस मामले में अल्लाह चाहता है। और उन्हीं दिनों खाजा मोइनुद्दीन चिश्त भ्रमण और यात्रा के लिए असफ़हान पहुँचे। जब खाजा कुतुब को मालूम हुआ तो उनसे मिलने की इच्छा हुई। और वह उनके आशीर्वाद की उपस्थिति में गए। उस समय खाजा अजमेरी ने दो ताई पहन रखी थी, जो उन्होंने खाजा कुतुब को दे दी। दो ताई देने का अर्थ है

खाजा अजमेरी ने खाजा कुतुब की प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली है। खाजा कुतुब को खाजा अजमेरी से अलगाव बर्दाश्त नहीं था, इसलिए वह खाजा अजमेरी के साथ रहने लगा। और उसके दौरे और यात्रा के दौरान भी उसके साथ रहने लगा।

आध्यात्मिक गुरु के साथ यात्रा: खाजा अजमेरी ने अपना यात्रा बैग पैक किया, और वह असफहान से काबा की यात्रा करने के लिए मक्का पहुंचे, और कुतुब शाहिब उनके साथ थे। इस यात्रा के बारे में, खाजा कुतुब ने कहा कि "जब यह शुभचिंतक खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के साथ मक्का की यात्रा में था। हमारी यात्रा में एक दिन, हमारी सुबह की प्रार्थना के बाद, हम एक शहर में पहुँचे हैं। और जहाँ हम वहाँ एक पवित्र व्यक्ति से मिले हैं। और जो एतेकाफ (एकांत, एकांत (भक्ति के लिए, पूजा के स्थान पर, विशेष रूप से मक्का में), रमजान के दौरान अल्लाह के स्मरण के लिए एतिकाफ के स्पष्ट इरादे (नियाह) के साथ मस्जिद में खुद को एकांत में रखना) की स्थिति में था।

एक गुफा में सूखी लकड़ी की तरह हवा में अपनी आँखें खोलकर खड़े हो गए और हैरान की हालत में पाए गए। और हम एक महीने की अवधि के लिए उनके साथ थे। उस अवधि में, वह होश की स्थिति में आ गए, और फिर हमने खड़े होकर उन्हें सलाम किया।

उन्होंने उत्तर दिया, और उन्होंने कहा, "अरे प्यारे, इस स्थिति से तुम्हें दुख होगा। लेकिन तुम्हारे दुख के कारण, प्रतिशोध में तुम्हारे लिए मुक्ति होगी। क्योंकि पवित्र व्यक्तियों के लोग कहते हैं कि जो दरवेश व्यक्तियों की सेवा करता है, वह प्रसिद्ध होगा। संक्षेप में, उसने हमें बैठने के लिए कहा।

फिर हम वहाँ बैठ गए। फिर उसने कहा, "मैं शाह असलम तोई का बेटा हूँ। और पिछले 30 सालों से मैं हैरान हूँ। मुझे इस मामले में दिन-रात की खबर नहीं है। तुम्हारे लिए अल्लाह ने मुझे होश में ला दिया। तुम्हारे लिए यहाँ फिर आना मुश्किल होगा। जब तुमने रहस्यवाद की राह पर अपना कदम रख दिया है, तो मानवीय इच्छाओं के कारण दुनिया की ओर ध्यान मत दो। और इंसानियत से निवृत्त हो जाओ। और जो कुछ भी मिले उसे खर्च करो। और उसमें से कुछ भी बचाकर मत रखो क्योंकि संग्रह करना अच्छा नहीं है।

और अल्लाह के सिवा किसी से काम न लेना, कहीं ऐसा न हो कि तुम बीमार पड़ जाओ। वह व्यक्ति यह सलाह देकर अपनी हैरानी की हालत में लौट गया।

वर्ष 1187/583 हिजरी में मक्का की यात्रा: हजरत कुतुब 583 हिजरी में खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के साथ मक्का पहुंचे और उन्हें काबा की यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

1189/585 हिजरी में बगदाद आगमन: मदीना से ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के साथ बगदाद पहुंचे और वहां पहुंचकर कुछ दिनों तक बगदाद में रहे।

खिलाफत: हजरत कुतुब के शिष्य बनने और खिलाफत का विवरण इस प्रकार है।

हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने पैगम्बर और अन्य पवित्र व्यक्तियों की आत्माओं को अपने सपने में देखा है

लगातार 40 दिनों तक। उसने देखा कि वह निम्नलिखित बातें कह रहा था।

“ओह, मोइनुद्दीन, कुतुब अल्लाह का दोस्त है। और उसे खिलाफत दे और उसे क़िरका (संत की पोशाक) पहनाओ।” एक दिन खाजा मोइनुद्दीन ने कहा कि रात को मैंने अपने सपने में अल्लाह को देखा है और वहाँ से आदेश दिया गया है, “ओह मोइनुद्दीन, क़िरका और दरवेश लोगों की ख़िलाफ़त कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को दे दो क्योंकि वह हमारा दोस्त होने के साथ-साथ मोहम्मद (उन पर शांति हो) का दोस्त भी है और हमने उसे एक पवित्र व्यक्ति बनाया है। और उसका नाम हमारे दोस्तों के नामों में दर्ज किया है।” इसलिए खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को कुतुब साहब से वचन लिया गया और उन्हें अबुल लाईस समरकंदी की मस्जिद में संत की पोशाक दी गई। इस अवसर पर शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी, शेख दाऊद किरमानी और शेख ताजुद्दीन मोहम्मद असफहानी वहाँ मौजूद थे।

रहस्यमय क्रम का वंशावली अभिलेख
कुतुबुद्दीन
ख़ाजा मोइनुद्दीन हसन संजरी
ख़ाजा उस्मानउस्मान हारुनी
हाजी शरीफ जिंदानी
कुतुबुद्दीन मौद चिश्ती
खाजा नसीरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती
ख़ाजा अबू मोहम्मद चिश्ती
ख़ाजा अबू अहमद अब्दाल चिसीती

ख़ाजा अबू इसहाक चिश्ती
ख़ाजा शमशाद अल्वी डेनुअरी
शेख अमीनुद्दीन हाबरा बसरी
सईदुद्दीन हदीफतल मर्शी
सुल्तान इब्राहिम बिन अधम बालकी
अबू फ़ज़ल बिन अयाज़
ख़ाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ायद
खाजा हसन बसरी
इमाम औलिया सैयदना हजरत अली करम अल्लाह

बगदाद से प्रस्थान: आख़िरकार ख़ाजा मोइनुद्दीन ने 586 हिजरी सन् 1190 में बगदाद से प्रस्थान किया और हज़रत कुतुब साहिब अपने आध्यात्मिक गुरु के साथ थे। बगदाद से प्रस्थान करने के बाद ख़ाजा मोइनुद्दीन को कुतुब साहिब के साथ चिश्त पहुँचाया गया और उसके बाद उन्हें कुतुब साहिब के साथ हेरात पहुँचाया गया। और हेरात से ख़ाजा साहिब कुतुब साहिब के साथ सब्ज़वार पहुँचे।

सब्ज़वार में कुछ दिन रुकने के बाद ख़ाजा साहब कुतुब साहब के साथ लाहौर पहुँचे और इस यात्रा के बारे में कुतुब साहब ने कहा, "587 हिजरी में लाहौर से रवाना होकर दो महीने का सफ़र तय करके अजमेर पहुँचे।

बाबा फ़रीद गंज शकर की उपस्थिति में आगमन
कुतुब साहिब

अजमेर में कुछ दिन रहने के बाद खाजा साहब अजमेर छोड़कर गजनी चले गए। उनके साथ उनके भक्त और शिष्य भी थे। अपनी मां से मिलने के लिए उन्हें काफी समय बीत चुका था, इसलिए कुतुब साहब अपनी मां से मिलने के लिए आवेश चले गए। जब खाजा मोइन्दून वापस अजमेर आए, उस समय कुतुब साहब भारत वापस आ रहे थे। और वे 1194/590 हिजरी में मुल्तान पहुंचे।

उन दिनों मुल्तान शिक्षा और कला का केंद्र था और यहाँ पर जाने-माने संत और विद्वान रहा करते थे। लोग दूर-दूर से ज्ञान की शिक्षा लेने के लिए यहाँ आते थे। बाबा फ़रीद गंज शकर भी ज्ञान की खोज में यहाँ थे। वे मुल्तान में 'मिनहाजुद्दीन तिरमाज़ी' की मस्जिद में ठहरे हुए थे।

एक दिन की घटना है कि बाबा गंज शकर क़िबला की तरफ़ बैठे हुए थे और एक किताब पढ़ रहे थे। और उस किताब का नाम है 'नफ़े'। जब कुतुब साहब मुल्तान की यात्रा पर थे, तो वे उस मस्जिद के अंदर गए, जिसमें बाबा फ़रीद किताब पढ़ रहे थे। और जब उन्होंने कुतुब साहब को देखा, तो वे बेचैन हो गए। जब उनकी नज़र कुतुब साहब के चेहरे पर पड़ी, और किसी के जुनून के असर से वे खड़े हो गए। और उन्होंने उन्हें सलाम किया और सम्मान दिया। और बाबा साहब सम्मानपूर्वक एक तरफ़ बैठ गए।

कुतुब साहिब साहब ने दो रकात नमाज़ अदा की (दो झुकने वाली नमाज़ें)

मस्जिद में। कुतुब साहब ने उनसे पूछा, "आप क्या पढ़ रहे हैं?" और बाबा ने सम्मानपूर्वक उत्तर दिया, पुस्तक 'नफ़ा'।
यह उत्तर सुनकर कुतुब साहब ने कृपालु भाषा में उनसे कहा, ''क्या आप जानते हैं कि इस पुस्तक से कोई लाभ होगा?'' और बाबा साहब ने असहाय अवस्था में उनसे कहा, ''इस विषय में उनके चरण चूमने से उन्हें सद्गति मिलेगी।'' और यह कहकर उन्होंने भावविभोर होकर खड़े होकर कुतुब साहब के चरणों पर अपना सिर रख दिया।

कुतुब साहब की रासायनिक क्रिया का प्रभाव पहले ही पड़ चुका था, अतः , कौन अब हजरत बाबा साहब के लिए कुतुब साहब की संगति से विदा होना कठिन था।

वह हमेशा उनकी संगत में रहने लगे और बाबा साहब की कुतुब साहब में बहुत श्रद्धा थी।

कुतुब साहब कुछ दिन मुल्तान में रहने के बाद दिल्ली चले गए। लेकिन बाबा साहब कुतुब साहब के साथ दिल्ली जाना चाहते थे। लेकिन कुतुब साहब ने अपनी शिक्षा पूरी करने की जिद की। बाबा साहब कुतुब साहब के साथ उनकी तीसरी मंजिल तक गए और वहां से वापस मुल्तान आ गए। और मुल्तान से वे बल्ख और बुखारा गए। वे कुतुब साहब से मिलने के लिए बेचैन थे। और दिल्ली पहुंचकर उनकी मुलाकात कुतुब साहब से हुई।

बाबा फ़रीद की प्रतिज्ञा सन 590 हिजरी में : हज़रत बाबा साहब को पहली बैठक में हज़रत कुतुब साहब के हाथों प्रतिज्ञाबद्ध किया गया था। हज़रत निज़ामुद्दीन ने

शपथ के समय बाबा फ़रीद की आयु 15 वर्ष बताई गई।

दिल्ली में बाबा साहब का प्रवास: बाबा साहब कुछ दिन दिल्ली में रहे। अपने आध्यात्मिक संघ का आदेश प्राप्त करने के बाद वे खंडहर चले गए। और वहाँ प्रकट ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किए। वहाँ से प्रकट ज्ञान प्राप्त करने के बाद वे इराक, खुरासान और मवार अल-नहर गए और मक्का और मदीना जाकर पवित्र व्यक्तियों के दर्शन करके उनसे आध्यात्मिक कृपा प्राप्त करके अपने आध्यात्मिक गुरु के आशीर्वाद से वापस आ गए।

दिल्ली में बाबा फ़रीद गंज शकर के आगमन पर हज़रत कुतुब साहब बहुत खुश हुए। बाबा साहब दिल्ली में ग़ज़नी गेट के पास एक कमरे में रहने लगे। वे आध्यात्मिक गुरु के आदेशानुसार पूजा-पाठ, साधना और रहस्यमय अभ्यास में लगे रहते थे। और उन दिनों बाबा साहब ने कठोर रहस्यमय अभ्यास किया था और बाबा साहब हज़रत कुतुब की सेवा में प्रतिदिन उपस्थित नहीं होते थे, बल्कि वे दो सप्ताह के अंतराल पर उनसे मिलने आते थे। और अपने आध्यात्मिक गुरु की शानदार कृपा से धन्य हो गए।

हज़रत बाबा फ़रीद आज भी रहस्यमयी अभ्यास और प्रयासों में लगे रहते हैं। और इसी दौरान हज़रत मोइनुद्दीन चिश्ती दिल्ली आए। और वे दिल्ली में हज़रत कुतुब की दरगाह में ठहरे। ख़ाजा ग़रीब नवाज़ का दिल्ली में रहना लोगों के लिए एक वरदान था

दिल्ली का। और अब आध्यात्मिक कृपा का वसंत, जो उनके करीब था। और ज्ञान की वर्षा हो रही थी। और वहाँ सभी प्रकार की संपत्ति वितरित की जा रही थी। और हर कोई अपनी इच्छाओं की कमीज के किनारे को भरने की इच्छा कर रहा था। और हर किसी की किस्मत और भाग्य था, साथ ही इस मामले में उसकी कमीज के किनारे के अनुसार।

कुतुब साहब के हिस्से में इतने समय तक ऐसी कृपा और धन-संपत्ति रही जिस पर वह गर्व कर सकें, जो उनके लिए कम होगी।

हज़रत कुतुब साहब ने अपने सभी शिष्यों को ख़ाजा मोइनुद्दीन की उपस्थिति में पेश किया। हर कोई जो इस मामले में अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार ख़ाजा मोइनुद्दीन की कृपा से धन्य था।

जब ख़ाजा मुअनुद्दीन ने अपनी ज्ञान-संपत्ति अपनी इच्छा और इच्छा के अनुसार वितरित कर दी, तब उन्होंने स्वयं कुतुब साहब से पूछा, "क्या उनकी ओर से अनुग्रह पाने के लिए कोई शिष्य बचा है?"

कुतुब शाहिब ने कहा, "मसूद चिल्ला में बैठे हुए चले गए, जिसे चिल्ला-नाशिनी के नाम से भी जाना जाता है , यह सूफीवाद में तपस्या और एकांत की एक आध्यात्मिक प्रथा है जिसे ज्यादातर भारतीय और फारसी परंपराओं में जाना जाता है।"

चिल्ला (पीछे हटना) यह सुनकर खाजा गरीब खड़ा हो गया और उसने कुतुब साहब से कहा, “आइये, हम उसे देखें।”

हज़रत ग़रीब नवाज़ और कुतुब साहब वहाँ गए जहाँ बाबा फ़रीद चिल्ला में बैठे थे। और वहाँ पहुँच कर,

उसने कमरे का दरवाजा खोला जहाँ बाबा साहब बैठे थे। वह इतना कमज़ोर हो गया था कि हज़रत ग़रीब नवाज़ को सम्मान देने के लिए खड़ा नहीं हो सकता था। और आँखों में आँसू भरकर उसने अपना सिर ज़मीन पर रख दिया।

यह हालत देखकर हजरत गरीब नवाज ने कहा, 'अरे कुतुब, कब तक तुम इसे इस जद्दोजहद में उलझाए रखोगे। आओ, हम इसे कुछ दे सकें।'

यह कहते ही हजरत गरीब नवाज ने उनका दाहिना हाथ पकड़ लिया और कुतुब साहब ने उनका बायां हाथ पकड़ लिया। इस तरह दोनों पवित्र व्यक्तियों ने उन्हें खड़ा कर दिया। खाजा गरीब नवाज ने आसमान की तरफ देखा और अल्लाह की बारगाह में बाबा फरीद के लिए दुआ मांगी। खाजा गरीब ने कहा, "या अल्लाह, हमारे फरीद को स्वीकार करो। और पूर्ण स्थिति तक पहुंचाओ।"

एक अदृश्य आह्वान हुआ: "हमने फ़रीद को स्वीकार कर लिया है, और वह अपने समय से आगे होगा।" तब उन्हें कुतुब साहिब की सलाह दी गई और उन्हें इसाम-ए-आज़म (अल-इस्म अल- आज़म_ (अरबी: □□□□□ □□□□□(शाब्दिक रूप से "सबसे बड़ा नाम", जिसे इस्म अल्लाह अल-अकबर के रूप में भी जाना जाता है) के लिए निर्देश देने की सलाह दी गई, जो इस्लाम में अल्लाह के सबसे बड़े नाम को संदर्भित करता है, जो छाती से छाती तक चिश्तिया में आ रहा है।

इस महान नाम के लिए, बाबा फ़रीद एक पवित्र व्यक्ति थे, और उनके ज्ञान के रहस्योद्घाटन पर, पर्दे के सभी पर्दे हटा दिए गए थे, और खाजा गरीब नवाज को बाबा फ़रीद सम्मान से सम्मानित किया गया था।

बाबा फ़रीद को ख़िलाफ़त दी गई; हज़रत ग़रीब नवाज़ को पगड़ी, शॉल और ख़िलाफ़त की अन्य चीज़ें दी गईं।

बाबा फ़रीद के बारे में भविष्यवाणी: इस अवसर पर, हज़रत ग़रीब नवाज़ ने एक भविष्यवाणी की है, और वह हज़रत कुतुब साहिब को संबोधित थी: "हे कुतुब, आपने एक बड़े बाज़ को फँसाया है और अपने नियंत्रण में लाया है, और उसका गंतव्य सिद्रतुल-मुन्तहा होगा (सिद्रतुल-मुन्तहा एक इस्लामी शब्द है जिसका अनुवाद "सबसे दूर की सीमा का लोटे का पेड़" है। यह एक बड़े लोटे के पेड़ को संदर्भित करता है जो सातवें आसमान की सीमा को चिह्नित करता है, जहाँ फ़रिश्तों का ज्ञान समाप्त होता है। "सिद्रा" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "लोटे का पेड़" और "मुन्तहा" का अर्थ है "अंत का स्थान"।

बैठक में सूफी लोग, महान साथियों के साथ-साथ विद्वान व्यक्ति भी उपस्थित थे, जिनमें काजी नागोरी, मौलाना अली किरमानी, सैयद नूर उद्दीन गजनी, मौलाना मुबारक, शेख निजामुद्दीन अबुलमोइद, मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क, खाजा मोहम्मद मोइया दोज और अन्य व्यक्ति भी मौजूद थे।

ऊश की यात्रा और वापसी: हज़रत कुतुब अपनी माँ से मिलने के लिए ऊश में बेचैन थे। वे 602 हिजरी में ऊश गए और वहाँ अपनी माँ के पैर चूमे।

ओश से वह बगदाद गए, जहां उनकी मुलाकात शेख शबुद्दीन उमर सुहरवर्दी और शेख औहद किरमानी से हुई।

और वहां उनकी मुलाकात अन्य महान पवित्र व्यक्तियों से भी हुई।

बगदाद में उन्हें शेख जलालुद्दीन तबराजी से पता चला कि उनके आध्यात्मिक गुरु खुरासान से भारत चले गए हैं और अब वे दिल्ली में रह रहे हैं।

1214/611 हिजरी में मुल्तान आगमन: जब कुतुब साहब को यह जानकारी मिली तो वे अपने आध्यात्मिक गुरु से मिलने की चाहत में भारत चले गए और उनके साथ शेख जलालुद्दीन तबराज़ी भी थे। वे शेख जलालुद्दीन तबराज़ी के साथ मुल्तान पहुंचे।

यह सुल्तान अल्तमश का शासन काल था और मुल्तान का शासक कबाचा बेग था। मुल्तान में हज़रत बहाउद्दीन ज़िकेरिया मुल्तानी सही दिशा में मार्गदर्शन का काम कर रहे थे।

कबाचा बेग का अनुरोध 1214/611 हिजरी: हज़रत कुतुब दिल्ली जा रहे थे। और मिर्ज़ा कबाचा बेग उन्हें मुल्तान में रोकना चाहते थे। और उन्होंने लाचार हालत में हज़रत कुतुब से मुल्तान में रुकने की विनती की।

हज़रत कुतुब ने मुल्तान के शासक मिर्ज़ा कबाचा बेग की प्रार्थना स्वीकार नहीं की। उन्होंने कहा, "यह स्थिति अदृश्य दुनिया से शेख बहाउद्दीन ज़िकरिया मुल्तानी के पक्ष में लिखी गई है। साथ ही अपने आध्यात्मिक गुरु ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की अनुमति के बिना, वह इस मामले में किसी भी स्थान पर नहीं रहेंगे।"

प्रस्थान 1214/611 हिजरी: हज़रत कुतुब साहब दिल्ली गए। और उन्हें मुल्तान से दिल्ली पहुँचाया गया। और वहाँ से शेख जलालुद्दीन तबराज़ी वापस ग़ज़नी चले गए।

मुल्तान में लोग हजरत कुतुब साहब के हाथों प्रतिज्ञा करना चाहते हैं, इस कारण से उन्हें इस मामले में मना किया गया था क्योंकि मुल्तान शेख बहाउद्दीन ज़िकेरिया मुल्तानी के अधिकार क्षेत्र में था।

जब हज़रत मुल्तान से चले तो कुछ लोग उनके साथ यात्रा में शामिल हुए। हज़रत कुतुब ने मुल्तान की सीमा से बाहर हांसी नामक स्थान पर उनकी प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली।

क़ाज़ी हमीद उद्दीन नागौरी का सपना

काजी हमीद उद्दीन नागौरी को उस समय स्वप्न में दिखाई दिया कि चमकता हुआ सूर्य दिल्ली में आ गया है, जिसने पूरे दिल्ली राज्य को प्रकाशित कर दिया है। तथा जो उसके घर में है और कह रहा है कि मैं तुम्हारे घर में निवास करूंगा।

और जब इस स्वप्न का ज्ञान हुआ तो पता चला कि सूर्य पूर्ण पवित्र व्यक्ति है जो दिल्ली में आएगा और वह काजी साहब के घर में निवास करेगा।

दिल्ली आगमन: हज़रत कुतुब साहब। दिल्ली पहुँचने पर वे किलो कड़ी इलाके में रहने लगे। और उनका निवास स्थान काफ़ी दूर था। और लोगों को

और राजा को भी वहां तक पहुंचने में बहुत समय लगेगा।

राजा की विनती: राजा शम्सुद्दीन ने ख़ाजा कुतुब से विनती की है कि अगर वह किलोकड़ी की बजाय महारावली इलाके में रहेगा तो वह खुद और दूसरे लोगों के लिए लंबी दूरी की यात्रा की परेशानी से सुरक्षित रहेगा। और राज्य के कामों में कोई व्यवधान नहीं आएगा। और इस मामले में लोगों को बहुत आराम मिलेगा।

कुतुब साहब ने कृपा और दया के कारण राजा अल्तमश की प्रार्थना स्वीकार कर ली। और वह किलोकड़ी से महारावली आ गए; पहले वह एक नानबाई के घर में रहे। और उस नानबाई की कुतुब साहब के प्रति बहुत श्रद्धा है।

इसके बाद काजी हमीदुद्दीन नागोरी उसे अपने घर ले गए और कुछ दिन वह उनके घर में रहा।

फिर वह अजुद्दीन की मस्जिद के पास रहने लगे।

दूसरी गुजारिश: शेख जमालुद्दीन बुस्तामी जो दिल्ली में इस्लाम के शेख (आदरणीय) के उच्च पद पर कार्यरत थे और उनकी मृत्यु के बाद राजा अल्तमश की इच्छा थी कि कुतुब साहब यह पद स्वीकार करें। जब दिल्ली के राजा अल्तमश ने हज़रत कुतुब साहब से गुजारिश की तो उन्होंने यह पद स्वीकार करने से इंकार कर दिया। अंत में सुल्तान अल्तमश ने शेख नजम उद्दीन सुकरा को दिल्ली में इस्लाम का शेख नियुक्त किया।

उनकी दरख्वास्त: हज़रत कुतुब को अपने आध्यात्मिक गुरु के चरणों को चूमने का बहुत शौक है। और उन्होंने एक दरख्वास्त भेजी है

अजमेर में अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति का उल्लेख किया है। और अपने अनुरोध में, उन्होंने उनके चरणों को चूमने के अपने शौक का उल्लेख किया है। और अजमेर की यात्रा करने की अनुमति देने का अनुरोध किया है।
हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन ने उन्हें जवाब दिया, "हालाँकि प्रत्यक्ष मार्ग में दूरी है, लेकिन आध्यात्मिक मार्ग में आप निकट हैं। इसलिए वहीं रहो।"

611 ई. में खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का दिल्ली आगमन

हिजरी/1214

हज़रत ग़रीब नवाज़ ने हज़रत कुतुब साहब को अजमेर आने से मना किया और खुद दिल्ली चले गए। हज़रत कुतुब साहब की दरगाह में ठहरे और इज्जत से नवाज़ हुए और कुछ दिन दिल्ली में रहे और दिल्ली में इल्म की दौलत बांटने के बाद ख़ाजा ग़रीब नवाज़ वापस अजमेर चले गए।

621 हिजरी/1224 में उनका दूसरी बार दिल्ली आगमन

इस बार खाजा गरीब नवाज हजरत कुतुब साहब को बिना बताए दिल्ली आ गए, इसलिए उन्हें इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ।

इस बार वे किसान की मान्यता के लिए तथा अपने बेटे फखरुद्दीन के लिए मंडन गांव की भूमि का राजस्व माफ कराने के लिए दिल्ली आए थे।

जब कुतुब साहब को इस बात का पता चला तो वे राजा अल्तमश के पास गए और उन्होंने समझौता कर लिया।

किसान के पक्ष में किसान का मामला। उन्होंने अपने बेटे खाजा फखरुद्दीन के पक्ष में मंडन गांव की भूमि राजस्व की कटौती का आदेश प्राप्त किया।

दुश्मनी: शेख नजम उद्दीन सुगरा दिल्ली में इस्लाम के एक शेख थे। और उनके ख़ाजा ग़रीब नवाज़ से लंबे समय से अच्छे संबंध थे। ख़ुरसन में उनकी मुलाक़ात हुई थी। दिल्ली में सभी लोग ख़ाजा ग़रीब नवाज़ से मिलने आते थे, लेकिन नजमुद्दीन सुगरा उनसे मिलने नहीं आते थे। ख़ाजा ग़रीब नवाज़ को इस बात पर आश्चर्य हुआ। इसलिए वे उनसे मिलने उनके घर गए।

उस समय वह उनके लिए सोफा बनाने का काम देख रहे थे। उनका ध्यान खाजा गरीब नवाज की ओर नहीं गया। अनदेखी के कारण खाजा गरीब नवाज को सदमा लगा।

नजामुद्दीन सुगरा से कहा गया कि हे नजामुद्दीन, तुम पर क्या मुसीबत आ पड़ी कि शेख इस्लाम के पद के गर्व में तुम मानवता और पुराने संबंधों और संपर्कों के साथ-साथ पुरानी शान-शौकत को भी अचानक छोड़ बैठे।

यह सुनकर उसे इस बात पर बहुत पछतावा हुआ और उसने अपना सिर खाजा साहब के चरणों पर रख दिया और उसे बताया गया कि वह पहले की तरह ईमानदार था, अब वह उसके साथ उसी स्थिति में है।

लेकिन कुबुद्दीन ने इस मामले में मेरी स्थिति बहुत बिगाड़ दी। जब वह यहाँ आया, तब से आपका शिष्य बन गया। सारी मानवजाति उसका अनुसरण कर रही है। मैं दिल्ली में केवल नाम के लिए इस्लाम का शेख बन गया हूँ।

कोई भी मेरा अनुसरण नहीं कर रहा है। इस मामले में हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती से शिकायत है कि "वे अपने शिष्य को यहीं छोड़ गए हैं। दिल्ली की सारी मानवजाति उनके दरवाज़े पर रह रही है। और इस मामले में हरी पत्ती की तरह किसी ने उन्हें याद नहीं किया, और किसी ने मेरा अनुसरण नहीं किया।"

अजमेर की ओर प्रस्थान: यह सुनकर खाजा मोइनुद्दीन मुस्कुराए और उन्होंने नजमुद्दीन सुगरा से कहा, "आप इस मामले में चिंता न करें। आपके दिल पर भारी बोझ है और वह अपने साथ अजमेर जा रहा है।"

अजमेर के लिए प्रस्थान करते समय, खाजा मोइनुद्दीन ने हजरत कुतुब से कहा "बाबा कुतुब, आप भी मेरे साथ अजमेर की यात्रा पर चलें क्योंकि कुछ लोग आपसे नाराज हैं।"

ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर प्रस्थान के समय हज़रत कुतुब को अपने साथ ले लिया और कुतुब को उनके आध्यात्मिक गुरु के साथ दिल्ली छोड़ दिया गया।

और यह खबर पूरे दिल्ली शहर में फैल गई। इस कारण से सभी लोग उनके साथ उनकी यात्रा पर निकल पड़े। चूँकि कुतुब साहब दिल्ली में इतने लोकप्रिय थे कि कोई भी उनके साथ नहीं गया।

इस मामले में उनका अलग होना उन्हें पसंद नहीं आया। जब यह खबर सुल्तान अल्तमश तक पहुंची तो वे खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के हुजूर में गए और उनसे कहा, "हुजूर, हजरत कुतुब को दिल्ली से अजमेर न ले जाएं और उन्हें यहीं रहने दें। हजरत खाजा साहब लोगों के दिलों को दुखाना पसंद नहीं करते थे। जब उन्होंने देखा कि हजरत कुतुब के चले जाने से दिल्ली के लोग दुखी हैं तो उन्होंने कुतुब साहब से कहा, "बाबा कुतुब, आप यहीं रहते हैं। आपके जाने से शहर के लोग बेचैन हैं। मैं अलगाव की आग से बड़ी संख्या में लोगों के दिलों को दुखाना नहीं चाहता और उन्हें इस मामले में कबाब नहीं बनाना चाहता। मैंने आपकी मदद के लिए यह शहर छोड़ा है।"

खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती हजरत के हुक्म के मुताबिक

कुतुबुद्दीन के कहने पर वह वापस आ गये और दिल्ली में रहने लगे।

चरण चूमने का शौक: दिल्ली में कुछ दिन रहने के बाद हजरत कुतुब अपने गुरु के चरण चूमने के लिए बेचैन हो गए। उन्होंने उनके समक्ष अजमेर में उनसे मिलने के लिए अपनी प्रार्थना भेजी। इस संबंध में उन्हें अपने गुरु की ओर से उत्तर मिला, जिसमें उन्होंने लिखा है कि मेरा इरादा आपको यहां बुलाने का था, लेकिन इस दौरान आपका पत्र मिला है, और आपको जल्द से जल्द यहां आना होगा, और हमारी यह मुलाकात दुनिया में हमारी आखिरी मुलाकात होगी।

आध्यात्मिक गुरु कुतुब साहब की उपस्थिति में यह उत्तर पाकर वे अजमेर की ओर चल पड़े।

अजमेर पहुँचने पर उन्हें अपने आध्यात्मिक गुरु से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और वे धन्य सान्निध्य में रहने लगे। अंतिम मुलाकात का विवरण खाजा कुतुब ने इस प्रकार लिखा है।

यह कहकर खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती रोने लगे। खाजा साहब ने कहा, "अरे दरवेश, मुझे जिस मकसद से इस मुल्क में भेजा गया है, वह यह है कि यहीं उनकी कब्र मिलेगी और कुछ दिनों में हम कूच करेंगे।"

अवशेषों का सौंपना: इस बैठक में हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने आदेश जारी करना शुरू किया, जिसे हज़रत कुतुब ने निम्नलिखित रूप में लिखना शुरू किया।

शेख अली संजरी वहाँ मौजूद थे। उन्हें हुक्म लिखने का हुक्म दिया गया। हमारे कुतुब शेख बख्तियार काकी को हुक्म दिया जाना चाहिए कि वे दिल्ली चले जाएँ। हमने उन्हें खिलाफत दी है। और हम उन्हें दिल्ली में रहने का सुझाव देते हैं। और जब हुक्म लिखा गया, तो यह इस शुभचिंतक को दिया गया। मैंने सम्मान दिया है। मेरे पास आने का हुक्म था। और मैं उनके पास गया।

उन्होंने अपने पवित्र हाथों से मेरे सिर पर पगड़ी और टोपी पहनाई है। मुझे खाजा हारुनी की छड़ी और संत की पोशाक दी गई है। साथ ही कुरान और प्रार्थना कालीन भी दिया है। उन्होंने अल्लाह के पवित्र पैगम्बर की यह पवित्र सौंपी गई बातें कही हैं। और जो चिश्तिया श्रृंखला के शेखों के माध्यम से हम तक पहुंची हैं। मैं आपको दे रहा हूँ। यह आपके लिए जरूरी है कि जैसे हमने इन सभी चीजों का ध्यान रखा है, वैसे ही आप भी इस मामले में ध्यान रखें। ताकि मुझे कोई पछतावा न हो

हज़रत कुतुब ने उल्लेख किया है कि इस शुभचिंतक ने फिर से सम्मान किया और धन्यवाद की दो रकात नमाज़ें पढ़ीं।

उन्होंने कहा कि जाओ, मैंने तुम्हें सम्मान और संतत्व का दर्जा दिया है।

आध्यात्मिक गुरु की सलाह : कुतुब साहिब के आध्यात्मिक गुरु, खाजा गरीब नवाज़ ने उन्हें सलाह दी और उनमें से चार चीजें बहुत अच्छी हैं।

और उन पर अमल करने से कल्याण और बरकत होगी। वे चार बातें इस प्रकार हैं।

1.ऐसी दरवेशी होनी चाहिए जिससे अमीरी झलके।

2. भूखे व्यक्तियों का पेट भरना।
3.दुख की स्थिति में खुशी का दिखावा करना।
4.यदि कोई व्यक्ति शत्रुता का व्यवहार करता है तो उसके प्रत्युत्तर में अपनी मित्रता प्रदर्शित करें।

गुरु जी की प्रार्थना: यह अंतिम मुलाकात का प्रसंग है। खाजा गरीब नवाज ने कुतुब साहब को आने को कहा और कुतुब साहब ने आगे बढ़कर उनके पैर चूमे। और खाजा साहब ने आशीर्वाद की फातहा पढ़कर कहा, "दुखी मत हो और बहादुर बनो।"

अजमेर: कुतुब साहब से अपने आध्यात्मिक गुरु को अलविदा कहकर वापस दिल्ली आ गए। और वे दिल्ली में ही रहे। और अपना शेष जीवन दिल्ली में ही बिताया।

बड़ा सदमा: अजमेरे खाजा गरीब से कुतुब साहब के जाने के 20 दिन बाद नवाज इस नश्वर दुनिया से चले गए।

उनका सपना: जब उन्हें ख्वाजा गरीब नवाज़ की मौत की खबर मिली, तो वे गम और दुख में नमाज़ के बाद नमाज़ की चटाई पर सो गए। उन्हें सपने में अपने आध्यात्मिक गुरु के दर्शन हुए। उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु के पैर चूमे और उनसे विस्तृत जानकारी मांगी। उन्होंने कहा, "अल्लाह ने उन्हें विशेष कृपा से नवाज़ा है। फ़रिश्तों और आसमान के निवासियों के स्थान के पास उनका स्थान निर्धारित किया गया था और मैं इस स्थान पर हूँ।"

पत्नियाँ और बेटे: उनकी पहली शादी उनके पैतृक स्थान अवाश में हुई थी। उनकी माँ ने उनका विवाह एक औरत से कर दिया था, और तीन दिन बाद ख़ाजा कुतुब ने उसे तलाक दे दिया। और इस शादी के कारण उनके दैनिक पाठ में व्यवधान आने लगा। और यह बात उन्हें पसंद नहीं थी।

ख़ाजा कुतुब साहब के पैग़म्बर पर दुआ पढ़ने का यह सिलसिला रोज़ाना इतना ज़्यादा था कि सोने से पहले वे 3,000 बार पैग़म्बर पर दुआ पढ़ते थे और शादी के बाद वे तीन दिन तक दुआ नहीं पढ़ पाए।

तीसरे दिन उनके एक शिष्य रईस अहमद ने स्वप्न में देखा कि वहां एक भव्य महल है और वहां बहुत से लोग हैं, तथा एक व्यक्ति जिसके चेहरे से प्रकाश दिखाई दे रहा है, वह महल के अंदर आ-जा रहा है।

अंदर मौजूद लोगों के संदेश और अंदर से आने वाले उत्तरों का आना।

रईस अहमद यह सुनकर अब्दुल्लाह बिन मसऊद के पास गया और उससे अनुरोध किया कि वह पैगम्बर तक अपना संदेश पहुंचा दे कि वह आपके दर्शन करने के लिए उत्सुक है।

अब्दुल्ला मसूद संदेश लेकर महल के अन्दर गये और अन्दर से संदेश लेकर आये कि अभी भी उस व्यक्ति में इस मामले में अपनी योग्यता और उपयुक्तता नहीं है। कुतुबुद्दीन ओशी को मेरा सलाम।

और उसकी ओर से कहो कि वह प्रति रात्रि अपना उपहार मेरे पास भेजा करेगा, परन्तु इस विषय में क्या कारण है कि उसने तीन रात्रि से उसे उपहार नहीं भेजा है?”

जब रईस अहमद को होश आया तो वह पैगम्बर का संदेश देने के लिए उत्सुक था। वह ख़ाजा कुतुबुद्दीन के पास गया और उसे अपना सपना बताया। जब उसने पैगम्बर का संदेश सुना तो वह खड़ा हो गया और उसने रईस अहमद से पूछा कि उसने क्या बताया? रईस अहमद ने उससे कहा, "जो तोहफ़ा तुम मुझे भेजा करते थे, उसे तुम तीन रातों से क्यों नहीं भेज रहे हो?"

हज़रत कुतुब साहब इस मामले में तोहफ़े का मतलब अच्छी तरह समझते हैं। उनकी शादी के कारण इस मामले में दुआ पढ़ने का काम 3 रातों के लिए रोक दिया गया था।

खाजा साहिब, जिसके साथ उसने उस महिला से विवाह किया है, जिसे उसका नाम दिया गया है, को उसका महर दिया गया (इस्लाम में, महर एक अनिवार्य भुगतान या उपहार है जो दूल्हा दुल्हन को शादी के हिस्से के रूप में देता है)

विवाह अनुबंध का। यह दुल्हन के प्रति सम्मान और उसकी स्वतंत्रता की मान्यता का संकेत है। दुल्हन को महर एक अधिकार के रूप में प्राप्त होता है, और वह इसे अपनी इच्छानुसार खर्च कर सकती है) राशि, और उस महिला को तलाक दे दिया गया। फिर वह अपने गायन में व्यस्त हो गया, और उसके बाद, उसने लंबे समय तक फिर से शादी नहीं की।

दूसरी शादी: दिल्ली में रहने के बाद उन्होंने दूसरी शादी की। और यह शादी उन्होंने अपने जीवन के आखिरी दौर में की। उनके दो बेटे हुए। 1.अहमद 2.शेख मोहम्मद। और जब वे सात साल के थे, तब उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद, जब उनकी पत्नी के रोने की आवाज़ आई, तो उन्होंने शेख बदरुद्दीन से पूछा कि हमारे घर से रोने की आवाज़ क्यों आ रही है? और उन्होंने उन्हें बताया कि उनका बेटा शेख मोहम्मद इस दुनिया से चला गया। और उसकी माँ रो रही है।"

यह कुतुब सुनकर साहिब ने कहा कि उन्हें अफसोस है कि उन्हें कोई खबर नहीं मिली। अगर उन्हें इस मामले में पता चल जाए तो वह अल्लाह से शेख मोहम्मद की जान मांगेंगे।

अपनी पत्नी को सांत्वना देने के बाद, वह इस मामले में फिर से रहस्योद्घाटन में लगे हुए थे। उनकी दौड़ उनके बड़े बेटे खाजा अहमद के साथ आगे बढ़ी, और वह अहमद तमाची के नाम से प्रसिद्ध थे। और वह एक महान पवित्र व्यक्ति थे।

दफ़न स्थान: मृत्यु से पहले ईद के अवसर पर वहाँ से लौटते समय वे एक निर्जन और सुनसान स्थान पर गये।

सुनसान जगह है, और यही वह जगह है जहाँ दिल्ली में उनकी कब्र है। उस जगह पर वे कुछ देर तक सोच में डूबे रहे, तो उनके साथ आए साथियों ने उनसे पूछा, "हजर, आप इस मामले में क्या सोच रहे हैं?" और उन्होंने कहा, "इस ज़मीन से मैं लोगों के दिलों की खुशबू महसूस कर सकता हूँ। ज़मीन का वर्तमान मालिक।" ज़मींदार वहाँ आया, और उसने अपनी ख़ास निजी जेब से ज़मीन खरीदी। उसने इस ज़मीन को अपनी कब्र और इस मामले में पवित्र कब्र के लिए माना।

दफ़न स्थल की श्रेष्ठता: जिस भूमि पर ख़ुतुब साहिब की क़ब्र है, वह इस मामले में विशेष श्रेष्ठता रखती है। एक बार पैगम्बर सुलेमान का सिंहासन उड़कर वहाँ पहुँचा, जहाँ ख़ुतुब साहिब की क़ब्र है। वह यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि धरती से आकाश तक प्रकाश फैल रहा है। और फ़रिश्ते आकाश से प्रकाश की थालियाँ लाकर धरती पर डाल रहे थे। हज़रत सुलेमान ने पूछा कि यह सुंदर स्थान और घर किस पवित्र व्यक्ति का निवास या दफ़न स्थल है? फ़रिश्तों ने उनसे कहा, "यह निवास और दफ़न स्थल अल्लाह के प्रिय व्यक्ति, हज़रत ख़ाजा कुतुबुद्दीन का है, जो अल्लाह के अंतिम पैगम्बर मोहम्मद (उन पर शांति हो) की क़ौम में से हैं और वह इस मामले में अपना अंतिम विश्राम स्थल लेंगे।

पिछले दिनों: एक दिन शेख अली संजरी की दरगाह में परमानंद की एक बैठक हुई। बैठक में सिद्ध और सिद्ध संत उपस्थित थे।

हज़रत कुतुब भी बैठक स्थल पर मौजूद थे।
गायक निम्नलिखित दोहे गा रहे थे।

आप अपनी दृष्टि का प्रेम कहां देख सकते हैं?
आपने पैकेज का निपटान कहां किया?

कुतुब साहब पर खुशी छा गई। और गायक कुछ देर तक इस दोहे को दोहराते रहे। और उसके बाद गायकों ने अहमद जाम की शान में गीत गाना शुरू किया। तभी सल्लाहुद्दीन और उनके बेटों करीम उद्दीन और नासिर उद्दीन ने निम्नलिखित दोहे सुनाना शुरू किया।

आत्मसमर्पण खंजर को मार डालो.
किसी भी समय किसी अन्य जीवन से अनुपस्थित है।

तो इस कारण से हज़रत ख़ुतुब साहब पर ऐसी ग़ुस्सा छा गया कि आप बेहोश हो गए। क़ाज़ी हमीद उद्दीन नागोरी और शेख़ बदरुद्दीन ग़ज़नी ने शायरों को ऐसी हालत में उस जगह दोहे दोहराने को कहा है। तो फिर इस मामले में कुतुब साहब पर ग़ुस्सा छा गया। चार दिन तक ऐसी ही हालतें उन पर छाई रहीं।

हज़रत बेहोश हो जाते थे, नमाज़ के वक़्त सामान्य हो जाते थे, नमाज़ पढ़ते थे और फिर उन पर होश की हालत हो जाती थी।

तीसरे दिन उसके मुँह से लगातार अल्लाह के नाम की तिलावत होने लगी। और लगातार खून की बूँदें धरती पर गिरने लगीं, और उस खून से अल्लाह की तस्वीर बनेगी। और उस खूबसूरत सजावट से अल्लाह की आवाज़ सुनाई देगी। और दूसरे दिन उसके मुँह से लगातार 'सुभान अल्लाह' की आवाज़ सुनाई देगी। और खून की बूँदें, जो 'सुभान अल्लाह' की सजावट की धरती पर बनेगी।

जब वे पहला दोहा गाते थे तो गायकों का गायन जारी रहता था, तब खाजा साहब की आत्मा उनके शरीर से गायब हो जाती थी। और जब वे दूसरा दोहा गाते थे, तब उनकी आत्मा उनके शरीर में वापस आ जाती थी जब हज़रत दर्द से रोना चाहते थे या नारा लगाना चाहते थे।

तब काजी हमीदुद्दीन नागौर अपना मुंह बंद कर लेंगे।
और उससे कहते थे, "चाहे इस मामले में पूरी दुनिया को जला दो।" इस मामले में उसका मुंह बंद था, लेकिन उसका शरीर जल चुका था। उसकी नब्ज को धड़कता देखकर हकीम शम्सुद्दीन ने कहा, "यह इश्क की बीमारी का मामला है। इश्क की आग ने उसके दिल और जिगर को पूरी तरह जला दिया। और अब उसे ठीक करने का कोई रास्ता नहीं है।"

दसवीं रब्बिल अव्वल को उन पर ऐसी ही हालत हुई और चार दिन और रात उन पर ऐसी ही अवहेलना हुई पाँचवीं रात को जब पहली आयत दोहराई गई तो उस समय हज़रत कुतुब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि

साहब 14 रब्बिल अव्वल वर्ष 632 हिजरी अर्थात 27 नवम्बर वर्ष 1225 ई. को इस नश्वर संसार से चले गये।

कुतुब साहब की मृत्यु के कारण दिल्ली में आम जनता में शोक व्याप्त हो गया, जिससे शहर में कोहराम मच गया। सुल्तान अल्तमश, दिल्ली के फकीर, शेख और सूफी लोग, आम जनता और आम लोग, संक्षेप में कहें तो सभी लोग उनकी जनाजे की नमाज में शामिल हुए।

हज़रत कुतुब साहब की अंतिम सलाह: जब जनाज़ा तैयार हो गया, तब मौलाना अबू सईद ने इस मामले में कुतुब साहब की अंतिम सलाह के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "हमारे ख़ाजा साहब ने मुझे बताया कि उनके जनाज़े को ऐसे व्यक्ति के हाथों में पढ़ा जाए, जिसने कभी कोई अवैध काम न किया हो। और उनकी सुन्नत से असर की नमाज़ और पहली तकबीर (यह एक आम अरबी अभिव्यक्ति है, जिसका इस्तेमाल दुनिया भर के मुसलमानों और अरबों द्वारा विभिन्न संदर्भों में किया जाता है: औपचारिक नमाज़ (प्रार्थना) में, अज़ान (प्रार्थना के लिए इस्लामी आह्वान) में ।

_____________ _________

________ __________

जनाज़ा की नमाज़: जब लोगों को आख़िरी सलाह मालूम हुई तो वे इस बात पर हैरान हो गए कि वह ख़ुशनसीब शख़्स कौन है? और ख़ाजा साहब की जनाज़ा की नमाज़ कौन पढ़ाएगा? कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। आख़िर में बादशाह अल्तमश आगे आए और उन्होंने कहा, "मैं नहीं चाहता कि यह बात किसी को पता चले, लेकिन हज़रत कुतुब साहब की एक आख़िरी इच्छा है।

सुल्तान अल्तमश ने जनाजे की नमाज पढ़ाई।

जनाज़े का जुलूस: जनाज़े के जुलूस में बड़ी संख्या में लोग थे और जनाज़े की नमाज़ अदा करने के बाद सुल्तान अल्तमश ने एक तरफ़ जनाज़े के सहारे को अपने कंधे पर उठा लिया और बाकी तीन तरफ़ जनाज़े के सहारे को दिल्ली के लोगों ने अपने कंधों पर उठा लिया।

उन्हें उसी स्थान पर दफनाया गया जहां उन्होंने अपने जीवनकाल में अंतिम विश्राम के लिए भूमि का चयन किया था।

उनकी समाधि नई दिल्ली के निकट मेहरवाली क्षेत्र में स्थित है, जहां विशेष एवं सामान्य व्यक्ति आते हैं।

हर साल उनका सालाना उर्स (पुण्यतिथि) रब्बिल अव्वल महीने की 13 तारीख को महारवाली में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसी ही एक तारीख को अजमेर में उनके चिल्ला गाह (चिल्ला गाह एक ध्यान स्थल है) पर उनका उर्स मनाया जाएगा।

उनके कुछ खलीफाओं में से एक खाजा फ़रीद गंज शकर को उनके उत्तराधिकारी और खाजा कुतुबुद्दीन के पहले खलीफा बनने पर गर्व और संतुष्टि है। कुछ अन्य शिष्यों के नाम इस प्रकार हैं।

1. शेख बदरुद्दीन गजनवी 2. शेख बुरहानुद्दीन बल्खी। 3. शेख जिया रूमी 4. मौलाना फखरुद्दीन हलवाई। 5. मौलाना बुरहानुद्दीन हलवाई 6. शेख मोहम्मद समाजी। 7. शेख अहमद बैनी 8. शेख हुसैन 9. शेख फ़िरोज़; 10. शेख बदरुद्दीन मोइताब

11. शाह खिजर कलंदर 12. शेख नजमुद्दीन कलंदर 13. शेख सादुद्दीन; 14. शेख महमूद बिहारी; 15. मौलाना जाबरी 16. सुल्तान नसीरुद्दीन गाजी 17. बाबा बहरी बहार दरिया।

बाबा फ़रीद को अपने आध्यात्मिक गुरु के अवशेष मिले: अपने आध्यात्मिक गुरु की संगति में रहने से, बाबा फ़रीद को आध्यात्मिक अनुग्रह और आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

एक दिन की घटना है कि बाबा फ़रीद अपने आध्यात्मिक गुरु हज़रत कुतुबुद्दीन के सामने बैठे थे। अचानक वे खड़े हो गए और उनसे हांसी जाने की अनुमति मांगी। हज़रत कुतुब को बाबा फ़रीद से बहुत प्यार और स्नेह था। उनकी आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा, "अरे फ़रीद, लेकिन तुम जाओ।" हज़रत बाबा फ़रीद ने उनसे कहा, "वह जैसा आदेश देंगे, वैसा करेंगे।" हज़रत कुतुब ने उनसे कहा: "जाओ, इस मामले में मैं जो कर सकता हूँ, करो। इस मामले में प्रकृति की इच्छा है जो तुम मेरी मृत्यु के समय नहीं पाओगे। मैं ख़ाजा मोइनुद्दीन की मृत्यु के समय भी मौजूद नहीं था।"

हज़रत कुतुब साहब ने ऐसा ही कहा और फिर इस मामले में अजीब सोच में पड़कर अपना सिर नीचे कर लिया। फिर उन्होंने अपना सिर ऊपर उठाया और श्रोताओं से कहा, "आओ, हम सब मिलकर इस दरवेश की तरक्की, दोनों जहान की नेमत और दृढ़ता के लिए दुआ करें और आयत फ़ातिहा और आयत अख़्लास पढ़ें। सभी ने आयत फ़ातिहा और आयत अख़्लास पढ़ी। हज़रत कुतुब साहब ने भी आयत फ़ातिहा और आयत अख़्लास पढ़ी और बाबा फ़रीद की सलामती के लिए दुआ की। और उन्होंने कहा,

"अल्लाह आपको महान शेखों में शामिल करे और आपको संतुष्ट व्यक्तियों की श्रेणी में पहुंचाए।" फिर उसने अपनी विशेष नमाज़ की चटाई और छड़ी उसे दे दी।

और उससे कहा, "मैं तुम्हें एक प्रार्थना कालीन, संत की पोशाक, पगड़ी और चप्पल दूंगा जो कि चिश्त के पवित्र संतों के हाथों से मेरे पास पहुंचाए गए थे, जिन्हें मैं काजी हमीद उद्दीन नागौरी को दे दूंगा, और जब तुम मेरी मृत्यु के पांचवें दिन हांसी से मेरी कब्र पर आओगे, और जो ये चीजें तुम्हें सौंप देगा और तुम्हें संत की पोशाक पहनाएगा। इस मामले में मेरे स्थान को अपना स्थान समझें। आप इस स्थान पर प्यार और आराम के साथ बैठेंगे।"

और सीधे मार्ग का मार्गदर्शन प्रदान करो और अपनी कृपा से आम और खास लोगों को लाभ पहुंचाओ।

जब हज़रत कुतुब साहब ने अपनी बात ख़त्म की तो सभा में चीख पुकार मच गई और लोग रोने लगे। सभी ने बाबा फ़रीद गंज शकर की सलामती के लिए दुआ की।

सलाह: जिस बैठक में हज़रत कुतुब की मृत्यु हुई थी, और उस बैठक में उन्होंने काज़ी हमीद उद्दीन नागोरी और हज़रत बदरुद्दीन ग़ज़नवी को अपनी अंतिम सलाह दी थी कि जब मेरी मृत्यु के बाद बाबा फ़रीद मेरी क़ब्र पर आएँ, तो उनके द्वारा दिए गए पवित्र संतों के अवशेष बाबा फ़रीद को सौंप दें। और सौंपी गई चीज़ों को बहुत सम्मान के साथ बाबा फ़रीद को सौंप दें। और उन्हें उनके संत के कपड़े पहनाएँ।

हजरत कुतुब ने काजी हमीदुद्दीन नागोरी और बदरुद्दीन गजनवी को बैठक में विशेष संत पोशाक, छड़ी, लकड़ी के चप्पल, डबल सुईयां दिखाईं।

स्वप्न: जिस रात हज़रत कुतुब इस नश्वर संसार से चले गए, उसी रात बाबा फ़ैरद ने स्वप्न देखा कि हज़रत कुतुब उन्हें बुला रहे हैं।

यह सपना उसके लिए बहुत बड़ा संकेत था और वह समझ गया कि कुतुब साहब इस दुनिया से चले गए हैं। वह बड़ी मुश्किल और चिंता की हालत में था और आश्चर्य में था कि हज़रत निज़ामुद्दीन हांसी से दिल्ली के लिए रवाना हो गए और उसकी आँखों से आँसुओं की नदी बह रही थी। उधर काजी हमीद उद्दीन नागौरी ने सुबह ही हज़रत निज़ामुद्दीन को हांसी से दिल्ली लाने के लिए दूत भेजा था और उसने उसे एक पत्र दिया था जिसमें हज़रत कुतुब की मृत्यु का समाचार था।

चौथे दिन हजरत बाबा फ़ैर्द दिल्ली पहुँच गये।
और पांचवें दिन उन्होंने कुतुब साहब की रौशनी वाली मजार का दौरा किया।

हज़रत काजी हमीद उद्दीन नागोरी और हज़रत बदरुद्दीन गजनवी ने हज़रत कुतुब के आदेशानुसार सभी अवशेष बाबा फ़रीद को समर्पित कर दिए।

हज़रत बाबा फ़रीद ने अपने आध्यात्मिक गुरु की पवित्र पोशाक पहन ली है और उस नमाज़ की चटाई पर दो रकात नमाज़ पढ़ी है।
और वह शेख कुतुब के घर में रहे हैं। कुछ दिन दिल्ली में रहने के बाद बाबा फ़रीद वापस लौट आए।

हांसी। उन्होंने कहा, "अल्लाह ने जो कृपा उसे दी है और जो मेरे साथ रहेगी चाहे मैं शहर में रहूं या जंगल में।"

शुद्ध जीवनी: हज़रत कुतुब उद्दीन बख्तियार काकी। वे भारत में अल्लाह के पैगम्बर के नायब हैं। वे हज़रत ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और कुतुब (कुतुब, कुतुब, कुतुब, कुतुब या कोटब (अरबी: ▯▯▯ (जिसका अर्थ है 'धुरी', 'धुरी' या 'ध्रुव') के उत्तराधिकारी और पहले ख़लीफ़ा हैं। कुतुब का अर्थ आकाशीय गति से हो सकता है और इसे खगोलीय शब्द या आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सूफ़ीवाद में, कुतुब एक संपूर्ण इंसान है, अल-इंसान अल-कामिल ('सार्वभौमिक मनुष्य'), जो संतों के पदानुक्रम का नेतृत्व करता है। कुतुब सूफ़ी आध्यात्मिक नेता है जिसका ईश्वर के साथ दिव्य संबंध है और वह ज्ञान देता है जो उसे सूफ़ीवाद का केंद्र या धुरी बनाता है, लेकिन वह दुनिया के लिए अज्ञात है। प्रत्येक युग में पाँच कुतुब होते हैं, और वे अचूक और विश्वसनीय आध्यात्मिक नेता होते हैं। वे केवल रहस्यवादियों के एक चुनिंदा समूह के सामने प्रकट होते हैं क्योंकि "ईश्वर के प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए मानव की आवश्यकता होती है"।) शेखों के। हज़रत शेख अब्दुल हक मुहादित देहलवी के बारे में इस प्रकार लिखा गया है।

"वे अल्लाह के महान पवित्र व्यक्तियों में से हैं। साथ ही वे शानदार सूफ़ी व्यक्तित्व भी हैं।" उनकी महानता और श्रेष्ठता के बारे में कोई संदेह या शंका नहीं है। साथ ही इस मामले में कोई मतभेद भी नहीं है।"

"उसके समय के सभी शेख जो उसके भक्त थे और जो उसकी भक्ति मंडली में शामिल थे। और सभी प्रतिष्ठित लोग थे और उच्च पद और ओहदे के धारक थे। उनकी प्रार्थनाएँ अल्लाह द्वारा स्वीकार की जाएँगी। वह जो कुछ भी कहेगा, इस मामले में वैसा ही होगा। जो व्यक्ति उसकी संगति में रहेगा, वह फिर एक संत व्यक्तित्व बन जाएगा। जब वह किसी व्यक्ति को देखेगा, तो वह व्यक्ति स्वर्ग से लेकर न तो क्षेत्र तक सब कुछ देख सकता है।

इबादत: इबादत में उन्हें बहुत लगाव होगा। वे कुरान के जानकार थे और हज़रत कुतुब रोज़ाना एक कुरान पूरा करते थे। वे लोगों से छिपकर इबादत में शामिल होते थे। वे हमेशा समय के पाबंद रहते और पाँचों नमाज़ों को बदलते थे। इसके अलावा हज़रत कुतुब रोज़ाना 300 नफ़िल (नफ़्ल नमाज़ें क्या होती हैं? नफ़्ल नमाज़ या गैर-वाजिब नमाज़ें, क्योंकि नफ़्ल का मतलब अतिरिक्त होता है, जो अनिवार्य नहीं बल्कि स्वैच्छिक या ऐच्छिक होता है। अगर आप नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हैं तो आपको अल्लाह से अतिरिक्त सवाब मिलेगा, लेकिन अगर आप न पढ़ें तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप पापी हैं क्योंकि यह ऐच्छिक है।) नमाज़ की रकात अदा करते थे। सोते समय हज़रत नबी पर 3,000 बार दुआ पढ़ते थे।

अकेलापन: हज़रत कुतुब को अकेलापन और तन्हाई बहुत पसंद थी। उन्हें कम खाने, कम सोने और कम बोलने की आदत थी और वह खुदा से जुड़े रहते थे और इंसानों से दूर रहते थे।

हज़रत गेसू दरज़ ने उनके बारे में लिखा है कि "उन्हें हमेशा सन्नाटा ही मिलता था और हज़रत अपना ज़्यादातर समय रोते-बिलखते बिताते थे। और वे दरवाज़ा बंद करके कमरे में अकेले रहते थे। और लोगों से दूर रहते थे।"

शेख नूर बक्श ने उनके बारे में लिखा है कि "हज़रत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी रहस्यवादी दीक्षा लेने वालों, संन्यासियों और मुजाहिदों में से थे। (मूल अर्थ: अरबी में, "मुजाहिदीन" शब्द का अर्थ है "प्रयास करने वाले" जो ईश्वरीय शासन या सही आचरण की तलाश करते हैं। जिहाद में मूल रूप से "सही आचरण" शामिल था, जैसे गरीबों को पैसा देना।

और अकेलेपन और एकाकी जीवन जीता था। वह कम खाता था, कम सोता था, और कम बोलता था। वह छुपकर पूजा-पाठ में लीन रहता था। वह अपनी हालत और अपने कामों को छिपाने की कोशिश करेगा।”

रात्रि जागरण: जीवन के आरम्भ में वे रात्रि में कुछ समय सोते थे तथा कुछ समय विश्राम करते थे, किन्तु जीवन के अन्तिम काल में उन्होंने रात्रि निद्रा तथा विश्राम त्याग दिया। हजरत रात्रि में जागते रहते थे तथा पवित्र कुरान की तिलावत तथा जिक्र जाली (जोकि जोर से पढ़ा जाता है) और जिक्र खफी (जिक्र खफी, जो धीमी आवाज से या मन ही मन किया जाता है) के स्मरण में लगे रहते थे।

गरीबी और भूख: कुतुब शाहिब को अपनी गरीबी और भूख पर गर्व था। उनका जीवन कठोरता से गुजरेगा

और तंगी। उसके परिवार के सदस्यों के लिए हमेशा भोजन नहीं होगा, और उसके आस-पास के लोग आमतौर पर भूख का सामना करेंगे। लेकिन वे यह नहीं बताएंगे कि घर में भूख होगी। गरीबी और भूख की स्थिति में, वे धैर्य और कृतज्ञता की कमीज का किनारा नहीं छोड़ेंगे। अपने जीवन की शुरुआत में, उनके घर में बर्तन, प्लेट और कप परोसने के लिए कपड़े का एक टुकड़ा नहीं था।

उपहार स्वीकार करने से इंकार: हज़रत ने उपहार स्वीकार नहीं किये और एक दिन की घटना है कि राजा अल्तमश ने उनके समक्ष कुछ रुपये और सोने के सिक्के भेजे और उनसे अनुरोध किया कि वे उनका उपहार स्वीकार करें, लेकिन हज़रत ने स्वीकार नहीं किया।

महान आध्यात्मिक गुरुओं का अनुसरण: कुतुब साहब महान आध्यात्मिक गुरुओं का अनुसरण करना अपने लिए गर्व और दासता समझते थे। और इस मामले में वे कठोर प्रयास करते थे। एक बार की बात है कि राजा अल्तमश के मंत्री उनके सामने आए और उन्हें छह गांवों के आवंटन के कागजात और सोने के सिक्कों से भरा एक थाल दिया और मंत्री ने उनसे कहा कि राजा अल्तमश की इच्छा है कि आप इसे स्वीकार करें। यह आपके सेवकों और ईमानदार व्यक्तियों के लिए है।

उस समय बाबा फ़रीद भी वहाँ उपस्थित थे।

हज़रत कुतुब ने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरे आध्यात्मिक गुरुओं ने ऐसी चीज़ों को स्वीकार नहीं किया। और मैंने भी स्वीकार नहीं किया। आज अगर मैं उनका अनुसरण नहीं करूँगा और गाँव और सोना स्वीकार नहीं करूँगा

"अगर मैं सिक्के खरीदूंगा, तो मैं न्याय के दिन अपने गुरुओं का सामना कैसे करूंगा? और मैं उनकी श्रेणी में कैसे शामिल होऊंगा?"

व्यस्तता: हज़रत कुतुब दिन रात व्यस्तता में लगे रहते थे। नमाज़ के समय आँखें खोलते और ताज़े वज़ू से स्नान करके नमाज़ अदा करते। उनकी तल्लीनता का आलम यह था कि जब कोई व्यक्ति उनसे मिलने आता तो वे इसी बात पर प्रतीक्षा करते। और उसे सूचित करने पर सामान्य स्थिति में वापस आ जाते।

उनके नशे और परमानंद की हालत ऐसी थी कि एक बार तो वे सात दिन और सात रात तक आश्चर्य की ऐसी ही स्थिति में रहे और प्रार्थना के बाद वे सामान्य हो गए।

अल्लाह पर भरोसा: हज़रत को इंसानों से दूर रखा जाता था। बाबा फ़ैरद ने कहा है कि हज़रत कुतुब का अल्लाह पर भरोसा ही सच्चा भरोसा था। वे 20 साल तक अल्लाह के भरोसे पर रहे। और उन्होंने किसी से कोई रिश्ता नहीं रखा। रसोई के खर्च की व्यवस्था इस तरह से चलती थी कि जब भी कोई ज़रूरत होती तो कोई नौकर उनके पास आता और हज़रत उसे इशारा करके पैसे दे देते कि वह अपनी ज़रूरत के हिसाब से पैसे ले ले। जब सूफ़ी लोगों की ज़रूरत होती तो वे अपनी नमाज़ के नीचे पैसे लेकर नौकरों को दे देते। और रोज़मर्रा के खर्च के लिए यह सारा पैसा खर्च हो जाता। कोई भी ज़रूरतमंद या मुसाफ़िर उनके दर से खाली हाथ नहीं जाता था।

अपना हाल-चाल छिपाना: हजरत कुतुब साहब अन्य व्यक्तियों से अपना हाल-चाल नहीं जानते थे।

तपश्चर्या, रहस्यमय व्यायाम, पूजा और प्रयास, जिन्हें वह छिपाते थे। और अपने शिष्यों को इसकी सलाह देते थे।

एक बार बाबा फेयरड ने चिल्ला काशी के लिए उनकी अनुमति मांगी। चिल्ला (फारसी: □□□, अरबी: □□□□□□□, दोनों शाब्दिक रूप से "चालीस"), जिसे चिल्ला-नाशिनी के रूप में भी जाना जाता है , सूफीवाद में तपस्या और एकांत की एक आध्यात्मिक प्रथा है जिसे ज्यादातर भारतीय और फारसी अनुष्ठान, परंपराओं में जाना जाता है। इस अनुष्ठान में, एक भिक्षु या तपस्वी अरबाईन की नकल में 40 दिन और रात बिना भोजन के ध्यान तकनीकों का अभ्यास करते हुए एक घेरे में बैठने का प्रयास करता है, और उसे उसकी अनुमति नहीं दी गई और उससे कहा गया, "इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि ऐसे मामलों से नाम और प्रसिद्धि मिलेगी। और फकीरों के लिए, नाम और प्रसिद्धि उनके लिए समस्याएँ हैं और हमारे साथियों के बीच, वे साथी, उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया है।"

समा सभाओं का शौक: कुतुब साहब को समा सभाओं में बहुत रुचि और शौक है। और समा से उनका स्वभाव संतुष्ट नहीं होगा। और समा में परमानंद की स्थिति होगी, फिर वे खड़े होकर आंगन में नाचने लगेंगे। लेकिन नमाज के समय वे सामान्य स्थिति में आ जाएंगे और नमाज अदा करेंगे, फिर उन पर वही स्थिति हावी हो जाएगी।

यह एक दिन की घटना है कि प्रगति हुई

समा की बैठक में हजरत कुतुब साहब उपस्थित थे।

Machine Translated by Google

बैठक में गायकगण फ़ारसी भाषा में एक दोहा गा रहे थे।

और इस दोहे को सुनते ही उनमें परमानंद की स्थिति उत्पन्न हो गई और वे सात दिन तक अचेत रहे और प्रार्थना के समय वे सामान्य स्थिति में आ जाते और प्रार्थना करने लगते।

ज्ञान के प्रति उनका प्रेम: हजरत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी अपने समय के महान लेखक होने के साथ-साथ कवि भी थे।

दलेल आरिफीन: और इस पुस्तक में उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु की मालफ़ुज़ात (मालफ़ुज़ात रहस्यवादी या सूफी संतों और पीरों और शेखों की शिक्षाओं को दर्ज करता है) को दर्ज किया है।

जुबादल हक़ीक़: यह पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है।

रिसाला: उन्होंने रिसाला नाम से इस पुस्तक का संकलन किया है।

मथनवी: उनसे संबंधित एक मथनवी (एक प्रकार की तुकांत दोहों में लिखी कविता, या अधिक विशेष रूप से स्वतंत्र, आंतरिक रूप से तुकांत पंक्तियों पर आधारित कविता) पुस्तक है।

दीवान (कविता) दीवान (फारसी: □□□r□□, divân, अरबी: □□□□□, dīwān) एक लेखक द्वारा लिखी गई कविताओं का संग्रह है, जिसमें आमतौर पर उसकी लंबी कविताएँ (मथनावी) शामिल नहीं होती हैं।

फ़ारसी में एक दीवान प्रकाशित है और इस पुस्तक में इसका उल्लेख कुतुब अल-दीन या कुतुब के रूप में किया गया है

दीन। और अपनी कविता में उन्होंने सत्य, एकेश्वरवाद, (तौहीद) और ज्ञान, वास्तविकता का उल्लेख किया है और म'रिफा सूफीवाद का एक केंद्रीय सिद्धांत है जो "ज्ञान" या "अनुभवजन्य ज्ञान" की धारणाओं को मूर्त रूप देता है। इसे आध्यात्मिक पथ का अंतिम शिखर माना जाता है।

उनकी शिक्षाएँ: हज़रत कुतुब की शिक्षाओं में वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान छिपा है। उनकी आशीर्वादों की मलफ़ुज़ात उनके पहले ख़लीफ़ा और शिष्य हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने अपने आध्यात्मिक गुरु की बैठकों से एकत्रित की गई पुस्तक 'फ़वाद सलीक़ीन' में संकलित की। और उसका अनुसरण करने से हज़रत की शिक्षाएँ, महत्व और इस मामले में लाभ ज्ञात होंगे।

गुरु का कर्तव्य : गुरु के पास इतनी शक्ति और जाँच करने का अधिकार होता है कि जब कोई शिष्य उसका शिष्य बनने के लिए उसके समक्ष उपस्थित होगा, तो वह अपनी पहली दृष्टि से ही उसके सीने से सभी कारणों से संसार की गंदगी को बाहर निकालकर उसे साफ कर देगा, जिससे उसमें किसी भी प्रकार की दुर्भावना और संसार की सदृश्यता का कलंक नहीं रहेगा।

और उसे उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार आशीर्वाद दिया और अल्लाह की ओर ले चलो।
यदि गुरु में शक्ति नहीं होगी तो समझ लीजिए कि गुरु और शिष्य दोनों ही इस मामले में अज्ञानता की गर्त में हैं।

दरगाह भवन के संरक्षक: हज़रत कुतुब साहब ने हज़रत शिबली की एक मुलाक़ात का ज़िक्र दरगाह भवन के संरक्षक से अपनी मुलाक़ात और इस मामले में उनकी विशिष्टता का ज़िक्र निम्नलिखित शब्दों में किया है।

“ऐ शिबली, जो व्यक्ति संरक्षक की गद्दी पर बैठता है, तो उसके पास दूसरे व्यक्ति का हाथ थामने की शक्ति होनी चाहिए, फिर उसके पास उसके साथ शक्ति होनी चाहिए, और शक्ति वाले व्यक्ति को इस मामले में उस व्यक्ति को शिरने भवन का संरक्षक बनाना चाहिए जो उसका हाथ थामे।”

व्यक्ति की पूर्णता: हजरत कुतुब साहब ने लिखा है, “रहस्यवादी लोगों ने लिखा है कि व्यक्ति की पूर्णता चार चीजों पर निर्भर करेगी।

कम सोने, कम बोलने, कम खाने और इंसानों के साथ कम संगति करने से उसे कभी दरवेशी रत्न नहीं मिलता। दरवेश लोगों का समूह ऐसा समूह है जिसने अपने लिए सोना अवैध बना दिया है। और इंसानों की संगति सांप से भी बदतर है।

दुनिया की गंदगी: हजरत कुतुब ने बाबा फैरद से कहा, "ओह, दरवेश पैगंबर ईसा, जो तजरीद और तफरीद में परिपूर्ण थे, दोनों इस्लामी अवधारणाएं अलगाव और एकांत से संबंधित हैं। जब उन्हें आकाश में ले जाया गया, तो एक आवाज आई कि उन्हें अकेला रखा जाना चाहिए। क्योंकि दुनिया की गंदगी अभी भी उनके साथ है। पैगंबर ईसा इस मामले में आश्चर्यचकित थे और उन्होंने दुनिया की संतों की पोशाक देखी है।

और उसने अपने पवित्र वस्त्र में एक सुई और लकड़ी का कटोरा पाया। उसने अल्लाह से पूछा कि "वह इन चीज़ों का क्या करेगा।" और उन्हें फेंकने के लिए ईश्वरीय प्रकाश हुआ।

तब ये सब बातें उससे दूर कर दी गईं, और वह आकाश में चला गया। यह घटना कहने पर उसने कहा, "ओह,

दरवेश, जब ऐसी नीच और छोटी बातें होंगी, जब अल्लाह के ऐसे महान नबी पर आपत्ति उठेगी, तो ऐसे पवित्र व्यक्ति के लिए जो दुनिया में पूर्ण रूप से प्रभावित है, अफसोस की बात है।

तस्लीम और रेडा (प्रसन्न या संतुष्ट होने का तथ्य; संतोष)। हज़रत कुतुब ने कहा, "जब हज़रत पैगम्बर यहियाह के गले पर छुरी रखी गई और उनकी गर्दन काटने लगे, तो वह दर्द से रोना चाहते थे और इस मामले में अनुरोध करना चाहते थे। और उस समय फ़रिश्ते जिब्रील वहाँ आए, उन्होंने कहा, "वह कहते हैं कि यदि आप रोते हैं या शिकायत करते हैं, तो आपका नाम नबियों के जरीदा (आवधिक) से हटा दिया जाएगा।" हज़रत यहियाह ने अल्लाह का यह आदेश सुना, और उन्होंने कुछ नहीं किया, और धैर्य के साथ उन्हें जीवन दिया गया।

हज़रत ज़केरिया की घटना: हज़रत कुतुब ने हज़रत ज़केरिया की घटना के बारे में बताया है कि "जब पवित्र व्यक्ति के सिर पर आरी लगाई गई और फिर वह उसे काटने लगी और वह दर्द के कारण रोना भी चाहता था। तब उस समय फ़रिश्ते जिब्रील वहाँ आए और उन्होंने कहा, "अल्लाह कहता है कि अगर तुम रोओगे या शिकायत करोगे, तो तुम्हारा नाम नबियों की जरीदी (काल) से हटा दिया जाएगा। अल्लाह का यह आदेश सुनकर, उसने कुछ नहीं किया और धैर्य के साथ उसे जीवनदान दिया गया। और उसके शरीर को दो टुकड़ों में काट दिया गया।

राबिया बसरी का तरीका: हज़रत ने कहा है कि "राबिया बसरी के साथ एक तरीका था कि जिस दिन उन पर कोई मुसीबत आ जाएगी, तो वह

इस विषय में वह बहुत खुश होती थी और कहती थी कि मित्र ने उसे इस विषय में याद दिलाया है। जिस दिन कोई समस्या नहीं रहेगी, उस दिन वह इस विषय में बहुत दुखी होगी और कहेगी कि क्या कारण है कि मित्र ने उसे याद नहीं दिलाया।

शिष्यों की भक्ति: शिष्यों की भक्ति के बारे में चर्चा शुरू हुई और कुतुब साहब ने कहा, "बगदाद में एक दरवेश को किसी अपराध के लिए गिरफ्तार किया गया था और उसे काजी (न्यायाधीश) के सामने पेश किया गया, जिसने मामले की जांच की और उसे मार डालने का आदेश दिया। अभियोक्ता ने उसे ले लिया और, आदेश के अनुसार, उसे क़िबला (मक्का की दिशा, जहाँ मुसलमान नमाज़ में जाते हैं, मस्जिदों में दीवार में एक आला (मीहराब) द्वारा संकेत दिया जाता है।) की दिशा में खड़ा कर दिया और उसे मारना चाहा। दरवेश ने अपना चेहरा क़िबला से अपने आध्यात्मिक गुरु की कब्र की ओर कर लिया। और जल्लाद ने उसे मृत्यु के समय अपना चेहरा क़िबला की ओर करने के लिए कहा। दरवेश ने उससे कहा, "तुम अपना काम करो, और मुझे अपना चेहरा अपने क़िबला की ओर करना चाहिए।" दोनों भ्रमित थे, और फिर बगदाद के खलीफा का आदेश आया कि "हमने दरवेश की गलती को माफ कर दिया है, और उसे रिहा करना अनिवार्य है।" इस घटना पर चर्चा करते हुए खाजा साहब ने कहा, "यह देखना है कि उनकी भक्ति के कारण, इस मामले में दरवेश की हत्या नहीं हुई।"

तकबीर: एक दिन तबकीर (तकबीर अरबी मुहावरा अल्लाहु अकबर का नाम है, ,जिसका अर्थ है "ईश्वर हर चीज़ से बड़ा है"। यह इस्लामी आस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और कई तरीकों से इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें शामिल है) और क्यों दरवेश गलियों और मोहल्लों में तकबीर कहते थे, इस पर चर्चा हुई। हज़रत कुतुब ने कहा कि "यह नहीं लिखा है कि हर गली और मोहल्ले में तकबीर कहा जाए। और यह कोई पवित्र तरीका नहीं है। लेकिन हदीस (पैगंबर की बातें) में उल्लेख किया गया है कि शुक्र के लिए तकबीर कहने से कृपा में वृद्धि होगी। और बाद में उन्होंने कहा, "काकबीर का अर्थ हमाद (ईश्वर की प्रशंसा) है, और कृपा के लिए हमें हमाद करना चाहिए।"

अल्लाह के विशेष लोग: उन्होंने कहा कि अल्लाह के विशेष लोग हैं, और जब वे अपने स्थान पर होंगे, तो अल्लाह काबा को आदेश देगा कि वे अपने स्थानों पर जाएं ताकि वे वहां परिक्रमा कर सकें।

भोजन का उत्तर: एक दिन की घटना है कि खाजा साहब के सामने भोजन लाया गया और अभी भी बैठक समाप्त नहीं हुई थी। उन्होंने वहीं भोजन करना शुरू कर दिया। इस समय तक शेख निजामुद्दीन अबू मोईद वहां आ चुके थे और उन्होंने सलाम करने का आग्रह किया। लेकिन हजरत ने इस मामले पर ध्यान नहीं दिया और उनके सलाम का जवाब नहीं दिया।

जब हज़रत खाना खा चुके तो उस समय शेख निज़ामुद्दीन अबू मोहम्मद ने उनसे इस मामले में शिकायत की और हज़रत कुतुबुद्दीन ने जवाब दिया कि "मैं आज्ञाकारिता में व्यस्त था और इसलिए मैं आपको क्या जवाब दे सकता था?"

जैसे दरवेश इबादत की ताकत के लिए खाना खाते थे और जब ऐसी नीयत होती है तो वह इबादत में होता है और उस समय कोई जवाब नहीं होता। इसलिए यह जरूरी है कि जब कोई खाना खा रहा हो तो उसे सलाम न कहा जाए और खाना खत्म होने पर उसे सलाम कहा जाए।

उच्च कोटि की उक्तियाँ: हज़रत कुतुब की कुछ उक्तियाँ इस प्रकार प्रस्तुत हैं।

आरिफ (रहस्यवादी व्यक्ति) वह व्यक्ति है जिसके दिल पर हर पल, हर पल अजीबोगरीब ख्याल हावी रहेंगे और वह मस्ती की दुनिया में मग्न रहेगा। अगर उसके सीने में समय और स्थान और दुनिया और उसमें जो कुछ भी है, वह प्रवेश कर जाए तो उसे उसके प्रवेश का पता नहीं चलना चाहिए।

आरिफ एक ऐसा इंसान है जिस पर हर वक्त कई हजार राज हावी रहेंगे फिर वह इस कदर मग्न रहेगा कि अगर कोई घुसकर निकल जाए और 18000 दुनियाएं उसके सीने में घुस जाएं तो उसे इस बात का पता ही नहीं चलेगा।

रहस्यवादी मार्ग: रहस्यवादी मार्ग पर दरवेशी एक अलग बात है। और चीज़ों को रखना अलग बात है। रहस्यवादी मार्ग पर बहुत हिम्मत की ज़रूरत होती है ताकि राज़ों की दृढ़ता बनी रहे और वे जाने न पाएँ। क्योंकि राज़ दोस्त का ख़ास होता है।

रहस्यवादी मार्ग का सुल्तान ऐसा व्यक्ति है : जो मित्र के प्रेम की नदी में सिर से पैर तक डूबा हुआ है। और उसके पास समय नहीं है, तो उसके सिर पर संसार के प्रेम की वर्षा नहीं होगी।

सालिक (देवता): सालिक के लिए संसार से बड़ा कोई पर्दा नहीं है।

प्रेम: जो व्यक्ति प्रेम का दावा करता है और कठिनाई के समय शिकायत करता है, वह अपने प्रेम में सच्चा नहीं है, बल्कि वह झूठा और असत्य है।

कामिल (उत्तम): वह व्यक्ति उत्तम है जो मित्र का रहस्य उजागर नहीं करता।

कामिल अकमल (परफेक्ट): ऐसे कौन लोग थे, जिनसे किसी भी हालत में दोस्त का राज लीक नहीं होता था, और वे दूसरे राज भी जान लेते थे।

*दरवेश वह व्यक्ति है जो यात्रा करते समय अपने पैरों से चलकर कई हजार देशों से गुजरेगा और अपने पैरों को आगे रखेगा।

*दरवेश के एक फ़राज़ में आग होगी और दूसरे में पानी होगा।

*जब दरवेश पूर्ण हो जाएगा, तब वह जो आदेश देगा वही होगा।

*दरवेश को तब तक निकटता का स्थान नहीं मिलेगा जब तक कि वह अज्ञात और ज्ञात चीजों से दूर नहीं रहेगा और एकांत का पालन नहीं करेगा और दुनिया की गंदगी से दूर नहीं रहेगा।

*जो दरवेश दुनिया को दिखाने के लिए अच्छे कपड़े पहनता है, वह दरवेश नहीं है। बल्कि यह रहस्यवाद के रास्ते पर लूट है।

*जो दरवेश पाप की इच्छा से पेट भरकर खाता है, वह दरवेश नहीं है।

* दरवेश अविवाहित रहते हैं इसलिए उनकी स्थिति में उन्नति होगी।

*दरवेश की भूख उसके लिए एक विकल्प है।

*अल्लाह ने अपना सारा राज्य दरवेश के अधिकार में रखा है।

*दरवेश के लिए यह आवश्यक है कि वह अविवाहित अवस्था में रहे और प्रतिदिन देश से बाहर जाए तथा इस मामले में प्रगति करे।

*दरवेशी सुख सुविधा नहीं है, बल्कि दुनिया की परेशानियों में जीना है।

*दरवेशी में सबसे कठिन काम रात के समय रोज़े की हालत में रहना है ताकि वह दर्जा हासिल कर सके और ऐसी कोई दूसरी फ़ज़ीलत नहीं जो दरवेशी से बेहतर हो।

* दरवेश के पीर में ऐसी शक्ति अपेक्षित है कि वह अपनी अंतरतम शक्ति से शिष्य के हृदय के अंधकार को दूर कर दे और उसे अल्लाह की ओर पहुंचा दे।

*शिष्य को गुरु की उपस्थिति और अनुपस्थिति में एक ही स्थिति में रहना चाहिए। जब गुरु संसार से चला जाता है, तो उसके प्रति अधिक आदर होना चाहिए।

*यदि उसे गुरु का सान्निध्य न मिले और पश्चाताप में कोई त्रुटि हो तो अपना वस्त्र गुरु के सामने रखकर इस विषय में प्रतिज्ञा कर ले।

समा (परमानंद मिलन): समा मिलन में ऐसी कोई सुख-सुविधा नहीं है, जो अन्य वस्तुओं में न मिलती हो, तथा वह ऐसी अवस्था है, जो समा मिलन के बिना नहीं मिलती।

*पैगम्बर निर्दोष हैं, और पवित्र व्यक्ति सुरक्षित हैं।
और परमानंद की स्थिति में उनसे कोई भी ऐसा काम नहीं होगा जो इस्लामी कानून (शरीयत) के विरुद्ध हो।

*अच्छे मृत: वह व्यक्ति जो अच्छे मृत के कारण वास्तविकता के स्थान पर पहुंच गया हो।

*अल्लाह का डर: अल्लाह के डर का कोड़ा व्यक्ति को सचेत करने के लिए है और जब यह दिल में प्रवेश करेगा, तो यह दिल को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

*सभा का तरीका: जब कोई व्यक्ति किसी सभा स्थल में प्रवेश करता है तो उसे वहां जो स्थान खाली मिले, वहीं बैठ जाना चाहिए।

* रहस्योद्घाटन और चमत्कार: वास्तव में, वह व्यक्ति साहसी है जो अपने व्यक्तित्व को रहस्योद्घाटन और चमत्कारों की स्थिति में नहीं दिखाएगा ताकि वह रहस्यवाद में स्थान प्राप्त कर सके।

*रहस्य और चमत्कारों की स्थिति का खुलासा करने से इस मामले में अन्य शेष स्थान से वंचित हो जायेंगे।

* जो बात बुद्धि से न जानी जा सके तथा बुद्धि की उस तक पहुंच न हो, उसे चमत्कार कहते हैं।

अमृत: संतों की कही बातें अमृत के समान प्रभाव वाली होती हैं।

दैनिक पाठ और वज़ीफ़ा (वज़ीफ़ा कुरान की आयतों, हदीसों और सूफीवाद के अनुयायियों द्वारा की जाने वाली दुआओं का एक नियमित संग्रह है। वज़ीफ़ा शब्द अरबी से आया है और इसका बहुवचन रूप वज़ैफ़ है।): नीचे हज़रत कुतुब साहिब द्वारा बताए गए कुछ पाठ और वज़ीफ़ का उल्लेख किया गया है।

इच्छा और कामनाओं की पूर्ति के लिए: इच्छा और कामनाओं की पूर्ति के लिए हमें आयत बकरा पढ़नी चाहिए।

हज़रत बाबा फ़रीद ने कहा है कि हज़रत कुतुब साहब की अल्लाह से कुछ इच्छा थी। उन्होंने आयत पढ़ना शुरू किया

बकरा.फिर भी एक दिन भी पूरा नहीं हुआ और उसने अपनी नमाज़ पूरी नहीं की और इस समय तक इस मामले में उसकी इच्छाएँ और मुरादें पूरी हो चुकी थीं।

पवित्र कुरान को याद करने के लिए आयत यूसुफ़ को पढ़ना अच्छा है।

हज यात्रा का सवाब: जो व्यक्ति ज़िल्हज महीने के शुरू में 2 रकात नमाज़ अदा करता है, उसे यह मिलता है।

पहली रकात में आयत फातहा के बाद आयत एनाम से “अल्हम्द लिलाह लज़ी ख़ल्क़ संवत यहाँ से मा तकसीबुन तक” पढ़ें। और दूसरी रकात में आयत फातहा के बाद, और उसके बाद आयत “क़ुल या काफ़िरुन एक बार” पढ़ें।

अल्लाह उसके कर्मों में एक हज यात्रा का सवाब जोड़ देगा।

अशान्ति से सुरक्षित रखना: हज़रत कुतुब ने कहा है, "जो व्यक्ति आयत अल-कुरसी पढ़कर अपने घर से निकलता है, और इसके लिए अल्लाह के पैगंबर ने कहा है कि इस मामले में घर सुरक्षित और सुरक्षित रहेगा।

जीविका में वृद्धि: उन्होंने कहा है कि जो तंग हालत का सामना करेगा वही उसकी जीविका है तो उसे आमतौर पर यह पढ़ना चाहिए: "या डेम ईज़ वा मुलक वा बका या जुलजल वलजुद वलफसल अता या वदूद वा जुलराश अल-माजिद या फलु लीमा युरीद।"

रहस्योद्घाटन और चमत्कार: हज़रत कुतुब ने कई चमत्कार किए और संक्षेप में हम उनमें से कुछ का उल्लेख कर रहे हैं।

उन्हें समा सुनने का बहुत शौक है। जब वे दिल्ली आए तो वे और काजी हमीदुद्दीन नागोरी समा सुनते थे। और यह खबर सुल्तान शहाबुद्दीन तक पहुंची तो वे क्रोधित हो गए और उन्होंने कहा, "अगर उन्हें फिर से पता चला कि वे समा सुनेंगे, तो मैं उन्हें उसी समय सूली पर लटका दूंगा या आइन कजा की तरह इस मामले में जलाकर राख कर दूंगा।"

हज़रत कुतुब ने यह सुनकर कहा, "ठीक है, अगर वह जीवित है, तो वह हमें फांसी पर चढ़ा देगा या जलाकर राख कर देगा।"

और सुल्तान के उस महीने में, शाबुद्दीन खुरासान की ओर चला गया, और कुछ दिनों में वहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

हज़रत कुतुब मुल्तान में रहते थे और उस समय मुल्तान का शासक कबाचा था। और एक दिन वह वहाँ आया और उससे कहा, "मुगल सेना मुल्तान पर कब्ज़ा करने आई है और मेरे पास उनसे लड़ने और उनका मुक़ाबला करने की शक्ति नहीं है। भगवान के लिए, इस मामले में मेरी मदद करें।" हज़रत कुतुब ने उसे एक तीर दिया और उसे सलाह दी, "सूर्यास्त की नमाज़ के बाद हिसार के बुर्ज पर जाओ और धनुष की मदद से इस तीर को दुश्मन की तरफ़ फेंको और अल्लाह की तरफ़ से इसका नतीजा देखो।"

कबाचा ने उसके कहे अनुसार ही किया। तीर गिरने के बाद मुगल सेना वहां से चली गई और वापस लौट गई।

एक दिन काजी हमीदुद्दीन के घर समा की बैठक थी। हजरत कुतुब वहां अपने कृपापात्र के साथ मौजूद थे। बैठक खत्म होने के बाद काजी हमीदुद्दीन ने हजरत कुतुब से कहा कि दर्शकों के लिए भोजन की जरूरत है। और हजरत कुतुब ने अपनी आस्तीन हिलाई, तो समा की बैठक में मौजूद दर्शकों के सामने दो रोटियां गर्म मिठाई के साथ गिर गईं।

एक दिन काजी हमीदुद्दीन के घर समा की बैठक थी और काजी साहब बहुत खुश थे। काजी सादिक और काजी इमाद जो दिल्ली के बड़े काजी शख्सियतों में से थे। और वे दोनों बैठक स्थल पर पहुंचे। और उस समय हजरत कुतुब की उम्र 18 साल थी। और अभी भी उनके चेहरे पर दाढ़ी नहीं थी। दोनों ने उनसे कहा, "सूफी धर्म में रोटी के बिना लड़के का होना उसके नियमों और विनियमों के खिलाफ है।"

इस कुतुब साहिब को सुनने के बाद "अल्लाह के नाम पर (SWT) दयालु, कृपालु या □□ □□ □□□ □□ □□' पढ़कर:अरबी (रहीम रहमानिर बिस्मिल्लाहिर □ □□□ □ □□ □□□□□□□ " (एक अरबी वाक्यांश है जिसका अर्थ है "अल्लाह के नाम पर (SWT) दयालु, कृपालु या □□ □□ □□□ □□ □□" :अरबी (रहीम रहमानिर बिस्मिल्लाहिर □ □□□ □ □□ □□□□□□□ " (एक अरबी वाक्यांश है जिसका अर्थ है "अल्लाह के नाम पर (SWT) दयालु, कृपालु या □□ □□ □□□ □□ □□)

हे दयालु, अत्यन्त कृपालु परमेश्वर ने अपने दोनों हाथ उसके चेहरे पर फैलाये, और उस समय उसके चेहरे पर रोटी पाई गई।

उसने उन दोनों से कहा कि “वह रोटी से वंचित लड़का नहीं है, बल्कि वह एक पुरुष है।”

यह देखकर दोनों विद्वान् व्यक्ति आश्चर्यचकित और आश्चर्यचकित हो गये।

एक दिन सुल्तान अल्तमस को सपने में अल्लाह के पैगम्बर के रूप में देखा गया। उसने देखा कि दोनों जहानों का बादशाह घोड़े पर सवार होकर एक जगह पर विराजमान है और कह रहा है, "हे शम्सुद्दीन, इस जगह पर एक जलाशय बनवा दो ताकि इंसानों का भला हो।"

सुल्तान ने जागने के बाद हज़रत कुतुब को बताया कि उसने एक सपना देखा है और वह उसके सामने आने की अनुमति चाहता है। और जवाब में हज़रत कुतुब ने सुल्तान को निम्नलिखित संदेश भेजा है।

"मुझे सपने का विवरण पता है। मैं उस स्थान पर जा रहा हूँ जहाँ अल्लाह के पैगम्बर ने एक जलाशय बनाने का आदेश दिया है। तुम जल्दी से मेरे बताए स्थान पर आ जाओ।"

सुल्तान उस जगह पर पहुँच गया और उसने हज़रत कुतुब को वहाँ नमाज़ अदा करते हुए देखा और जब उसने नमाज़ पूरी कर ली तो उसे सलाम किया। उसने सपने में अल्लाह के नबी का स्थान देखा और उस स्थान पर उसे घोड़ों के खुरों के निशान मिले। और वहाँ पानी बह रहा था और उस स्थान पर सुल्तान शम्सुद्दीन ने हौज़ (देहली में शम्सी जल भंडार) बनवाया।

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश की दरियादिली की बहुत चर्चा हुई। मशहूर शायर नासिरी दिल्ली आए और हज़रत कुतुब की दरियादिली में नमाज़ पढ़ने गए। अपनी कृपा भरी ज़बान से उन्होंने कहा, "जाओ, तुम्हें बहुत सवाब मिलेगा।"

नासिरी ने दिल्ली राज्य के सुल्तान शम्सुद्दीन की प्रशंसा में 56 दोहों का एक स्तम्भ लिखा और सुल्तान के दरबार में उपस्थित हुआ। सुल्तान ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। नासिरी बहुत चिंतित हुआ। उसने मन ही मन हजरत कुतुब से सहायता मांगी। उसकी सहायता पाकर सुल्तान ने उससे कहा कि अपना लेख पढ़ने के लिए हाँ कर दो। उसने लेख पढ़ लिया। यह सुनकर सुल्तान बहुत खुश हुआ। और उसने नासिरी को 56 हजार रुपये इनाम में दिए। धन पाकर नासिरी प्रसन्नचित्त होकर हजरत कुतुब के समक्ष पहुंचा, उसने प्राप्त सारा धन इनाम में रख दिया। परन्तु कुतुब साहब ने उसमें से कोई धन नहीं लिया। वह अपने वतन वापस चला गया।

कुतुब साहब की मृत्यु के पश्चात उनके वसन्त ऋतु का आगमन हो रहा है। हजरत निजामुद्दीन औलिया कुतुब साहब की कब्र पर जाया करते थे, और उनके मन में यह विचार आया कि क्या कुतुब साहब के पास आने वालों की कोई खबर मिलती होगी या नहीं? और जब वे कब्र के पास पहुंचे, तो उन्होंने यह शेर सुना:

“मेरे प्रिय, मुझे जीवित कल्पना करो।”

एक व्यक्ति को हज़रत कुतुब के क़दमों के पास दफ़न किया गया था, और लोगों ने उसे ख़्वाब में देखा है कि वह जन्नत की सैर कर रहा है, और उससे पूछा गया कि उसे जन्नत कैसे मिली, जो कि उसका कर्म था। और उस व्यक्ति ने जवाब दिया है, "जब अज़ाब के फ़रिश्ते मेरे लिए सज़ा देने वहाँ आए, तो हज़रत कुतुब की रूह को तकलीफ़ हुई, इसलिए अल्लाह ने क़ब्र से अज़ाब हटा दिया और मुझे माफ़ कर दिया।"

उनकी अंतरतम की कृपा जारी है और उनकी अंतरतम की कृपा के कारण ही आज भी इस मामले में लोगों को लाभ मिल रहा है।

2.काजी हमीदुद्दीन नागोरी

काजी हमीदुद्दीन नागौर को बाह्य और आंतरिक ज्ञान की व्यापक पूर्णता प्राप्त है।

वह हजरत खाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के गुरु थे। वह एक महान विद्वान होने के साथ-साथ एक महान पवित्र व्यक्ति भी थे।

पारिवारिक विवरण : वह बुखारा राज्य के शाही परिवार से संबंधित हैं।

पिता : उनके पिता का नाम अता अल्लाह महमूद था और वे बुखारा राज्य के राजा थे। इसलिए उन्हें सुल्तान अता अल्लाह महमूद कहा जाता था।

उनके पिता का वंशावली रिकॉर्ड : शेख मोहम्मद बिन सुल्तान अता अल्लाह महमूद बिन सुल्तान अहमद बिन सुल्तान मोहम्मद शेख यूसुफ बिन शेख तैयब बिन शेख इस्माइल बिन ताहेर बिन याकूब बिन इसहाक बिन इस्माइल बिन कासिम बिन मोहम्मद बिन हजरत अबू बेकर सिद्दीक बिन कुहाफा बिन आमेर बिन उमर बिन काब बिन साद बिन तमीम बिन मार्रा (पैगंबर मोहम्मद के 7वें पूर्वज (उन पर शांति हो)।

जन्म तिथि : उनका जन्म 463 हिजरी में बुखारा में हुआ था

नाम : उसका नाम मोहम्मद है।

प्रारंभिक जीवन : उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन अपने पिता के संरक्षण में बिताया। उनके पिता ने उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया।

गद्दी पर बैठना : उनके पिता ने उनकी अधिक आयु तथा उनसे प्रेम के कारण उन्हें गद्दी पर बैठाया तथा स्वयं राजकाज से निवृत्त हो गए। उस समय काजी साहब की आयु 52 वर्ष थी। उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन उत्तम तरीके से किया।

पहला सदमा : उनकी पत्नी बीबी महारो इस नश्वर संसार से चली गईं।

और काजी साहब के लिए यह एक ऐसा सदमा था जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन में परिवर्तन आया और साथ ही इस मामले में उनकी जीवनशैली और सोच में भी बदलाव आया।

जीवन में परिवर्तन : अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद काजी एकांत में बैठकर जीवन-मृत्यु के दर्शन पर विचार करने लगे।

उसे लगा कि जीवन शाश्वत नहीं है और दुनिया में सब कुछ नश्वर है। तो क्यों न दुनिया के रचयिता से दिल जोड़ा जाए। और उसके लिए नैतिकता नहीं है, वह दिन-रात इसी सोच में जीता रहता था। एक दिन वह शिकार के उद्देश्य से गया। और उसने हिरण का पीछा किया और उस पर एक तीर फेंका और हिरण जंगल में घायल हो गया। जब वह हिरण के पास पहुंचा तो उसने वहां उससे बात की। "अरे प्यारे इंसान तुम अल्लाह के बंदे हो फिर तुमने उस पर तीर क्यों फेंका।" हज़रत महल वापस आ गए और सिंहासन और राज्य छोड़ दिया और इस मामले में वास्तविकता की तलाश में बुखारा शहर छोड़ दिया।

करमान में ठहरना :बुखारा शहर से निकलते समय उनके पिता भी उनके साथ थे और वे दोनों करमान पहुँच गए। और करमान में वे खाजा अबू बकर किरमानी के साथ ठहरे। किरमान में उनकी शादी खाजा किरमानी की दूसरी बेटी से हुई जिसका नाम बीबी हुमेरा है।

वास्तविकता की खोज में : उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को किरमान में छोड़ दिया है और वे स्वयं अपने पिता के साथ इस मामले में वास्तविकता की खोज के लिए निकल पड़े हैं।

ख़ाजा ख़िजर को मोहम्मद बिन अता को ज्ञान की शिक्षा देने का आदेश दिया गया और उन्होंने उसे 12 साल तक अपनी सेवा में रखा और उसे शिक्षा दी और जब शिक्षा पूरी हो गई तो ख़ाजा ख़िजर ने उसे बगदाद जाने के लिए कहा।

प्रतिज्ञा और खिलाफत : जब वह बगदाद पहुंचे, तो उनके पास उनकी चार किताबें थीं। बगदाद में उन्होंने शेख शहाबुद्दीन सुहेरवर्दी के हाथों प्रतिज्ञा की। और आध्यात्मिक गुरु ने उन्हें पैगंबर की पोशाक दी। और उन्हें खिलाफत भी दी।

मक्का और मदीना की यात्रा : बगदाद से हजरत मक्का गए और हज की यात्रा की। मक्का से वे मदीना की यात्रा पर गए। वे मदीना में एक साल दो महीने तक रहे। एक दिन उन्हें पैगम्बर के दरबार से काजी हमीदुद्दीन नागोरी की उपाधि मिली। उन्हें नागोरी के बारे में पता नहीं था। जब उन्हें पता चला कि नागोरी भारत में है, तो उन्होंने भारत जाने का इरादा किया।

भारत आगमन : वे मदीना से मक्का आये और हज यात्रा की, तथा मक्का में तीन वर्ष तक रहे। फिर मक्का से निकलकर बगदाद पहुंचे और अपने पिता की उपस्थिति में चले गये।

आध्यात्मिक गुरु। और बगदाद से हज़रत पवित्र पैगम्बर के लबादे के साथ भारत पहुँचे। रास्ते में करमान था। और वे वहाँ कुछ दिनों तक रुके। और किरमान से वे अपने परिवार के सदस्यों और अपने पिता के साथ पेशावर पहुँचे। और वे वहाँ कुछ दिनों तक रुके और अपने परिवार के सदस्यों और अपने पिता को वहीं छोड़ दिया, और वे स्वयं हज़रत ख़ाजा मोइनुद्दीन चिश्ती और पवित्र व्यक्तियों के साथ भारत पहुँचे।

नागौर आगमन : अंत में हजरत 561 हिजरी में नागौर पहुंचे और वहां एक वृद्ध महिला जो तेली की पत्नी थी, के पास ठहरे और अपनी आध्यात्मिक शक्ति से नागौर पर विजय प्राप्त की।

लोगों ने उनके वास्तविकता के संदेश को स्वीकार कर लिया है।

हज़रत नागौर में कुछ दिन रुके और फिर उन्हें एक अदृश्य आवाज़ सुनाई दी: « जाओ और हमारे कुतुब को शिक्षा दो। » और वे तुरंत अवाश चले गए। और वहाँ उन्होंने हज़रत बख्तियार काकी को बिस्मिल्लाह पढ़कर सुनाई और हज़रत कुतुब ने कुरान के 15 हिस्से पहले ही याद कर लिए थे। और हज़रत ने 15 हिस्से याद कर लिए। 15 हिस्से पढ़ाने के बाद हज़रत बगदाद पहुँच गए।

दिल्ली आगमन : बगदाद से वे दिल्ली पहुंचे तथा रास्ते में पेशावर में रुके तथा अपने साथ अपने परिवार के सदस्यों और पिता को भी दिल्ली ले गए तथा धोबी का एक मकान खरीदकर परिवार के सदस्यों के साथ उस मकान में रहने लगे।

उनके पिता की मृत्यु : उनके पिता की मृत्यु दिल्ली में हुई।

दिल्ली में समा (परमानंद) की बैठकें : हजरत कुतुबुद्दीन काकी और काजी साहब ने दिल्ली में समा (परमानंद) की बैठकें आयोजित कीं। लेकिन काजी साद और काजी इमाद की ओर से इस पर आपत्ति जताई गई। विचार-विमर्श के बाद यह तय हुआ कि काजी साहब बगदाद जाकर वहां समा (परमानंद) की बैठकें आयोजित करें। फिर इस मामले में कोई आपत्ति नहीं होगी।

बगदाद प्रस्थान : हज़रत काजी साहब बगदाद गए, और वहाँ अपने मुरीद के घर ठहरे, और बगदाद के दूसरे लोगों को भी बुलाया। विचार-विमर्श करने पर सब लोगों की सहमति हुई कि काजी साहब का मत है कि इस मामले में वास्तविक लोगों के लिए समा सुनवाई वैध है, और अयोग्य व्यक्ति के लिए समा सुनवाई वैध नहीं है।

समा की बैठक में काजी साहब 72 मिज़ामीर (अरबी शब्द मज़ामीर (□□□□□□□□□□ (मिज़मार (□□□□□(का बहुवचन है, जो अरबी संगीत में एक या दो रीड वाले वायु वाद्य यंत्र को संदर्भित करता है)) इकट्ठा हुए और आंगन में, उन्होंने उन पर पर्दा डाल दिया। तब काजी साहब ने ध्यान दिया और देखभाल की, और फिर उन मिज़मीरों से आवाज़ सुनाई दी। श्रोताओं पर परमानंद छा गया। और सभी सहमत हुए कि योग्य लोगों के लिए समा जायज़ है। और पात्रता एक ऐसी चीज़ है जो इस मामले में अल्लाह के अलावा किसी को नहीं पता। जो लोग समा सुनने के योग्य हैं, वही इसके बारे में जान सकते हैं।

पात्रता। और आम लोग इस मामले में जानने में असमर्थ हैं।

दिल्ली वापस आना : काजी साहब बगदाद से दिल्ली वापस आते हैं। हजरत काजी साहब और हजरत खाजा कुतुबुद्दीन समागमों में समा सुनते थे। दिल्ली में कुछ लोगों को काजी साहब की ताकत पसंद नहीं थी। और वे समा के मामले में उनका विरोध करने लगे। काजी साद और काजी इमाद पर कुतुब साहब के श्राप का असर हुआ और इसी वजह से वे दोनों इस मामले में दुनिया से चले गए।

नागौर के काजी की नियुक्ति : दिल्ली राज्य के राजा ने नागौर के काजी की नियुक्ति का आदेश जारी किया है। और उन्होंने इस पद को स्वीकार कर लिया है। और 30 वर्षों की अवधि के लिए काजी साहब ने काजी के पद को श्रेष्ठता प्रदान की है। उन्होंने रहलबा गांव को अपने अधीन कर लिया है। पैगंबर के आदेश के अनुसार काजी साहब मदीना चले गए। और उन्होंने काजी का पद अपने दूसरे बेटे मौलाना जहीरुद्दीन को सौंप दिया। इसके बाद वे मक्का और मदीना की यात्रा के बाद दिल्ली आए।

पत्नियाँ और बेटे : उन्होंने दो शादियाँ की हैं। और बीबी माहरो से शादी की और दूसरी शादी बीबी हुमेरा से की, और उनसे उन्हें 7 लड़के और 2 लड़कियाँ हैं। और लड़कों के नाम इस प्रकार हैं।

1. मौलाना नसीहुद्दीन 2. मौलाना जहीरुद्दीन 3.
शेख अलीमुदीन 4. शेख हुसामुद्दीन 5. शेख

वजीहुद्दीन 6. शेख अब्दुल्ला और 7वें लड़के का नाम किताब के उर्दू संस्करण में नहीं जोड़ा गया है।

1. बीबी हादिया 2. बीबी साहब दौलतत

मृत्यु : तरावीह में (अंग्रेजी में "तरावीह" शब्द का अर्थ "आराम" या "विश्राम" है)। यह एक स्वैच्छिक प्रार्थना का नाम है जिसे मुसलमान रमजान के दौरान करते हैं।

(यह प्रार्थना रमज़ान की हर रात ईशा की शाम की प्रार्थना में की जाती है।) उसने कुरान का पाठ पूरा कर लिया है। और, प्रार्थना के बाद, वह सजदे में चला गया है।

और जिसमें उन्होंने नश्वर संसार को त्याग दिया। और लोग सोचने लगे कि, अभी भी, वे सजदे में हैं। और उनकी मृत्यु की स्थिति का पता बहुत समय बाद चला। उन्होंने 641 हिजरी में 9 रमज़ान को इस नश्वर संसार को त्याग दिया। और उनकी मृत्यु के समय उनकी आयु 180 वर्ष थी। उनकी पवित्र कब्र भारत के दिल्ली में मेहरवाली इलाके में स्थित है।

उनके ख़लीफ़ा : 1. शेख अहमद नाहरवानी। 2. शेख ऐनुद्दीन कसाब। 3. शेख शाही मोइकतब 4. शेख महमूद मोइन्दोज़।

जीवनी विवरण : हज़रत काज़ी साहब एक नेक इंसान होने के साथ-साथ ज्ञानी भी थे। वे अपने व्यक्तित्व और अंतरात्मा में उत्कृष्ट थे। उन्हें समागमों में समा सुनने का बहुत शौक और रुचि थी। उन्होंने दिल्ली की समागमों में समा सुनना शुरू कर दिया है।

ज्ञान के प्रति उनका लगाव : काजी साहब ने समा के बारे में 72 पत्रिकाएँ लिखी हैं, और उनकी प्रसिद्ध और प्रसिद्ध किताबें इस प्रकार हैं।

1. तवला अल-शमस शरह 2. इस्माई हुस्नी 3. लुवामा 4.
लुवाह 5.मुताला चल हदीस 6.किताब हफत अहबाब 7.
रिसाला काजी हमीद उद्दीन नागौर।

उनकी शिक्षाएँ वास्तविकता के रहस्यों और रहस्यवाद के अर्थ के बारे में हैं।

*अल्लाह के साथ व्यवहार : उन्होंने कहा है: «अल्लाह के साथ किसी व्यक्ति का कोई व्यवहार नहीं होगा, फिर किसी व्यक्ति के दिल पर किसी भी चीज़ का कोई असर नहीं होगा।» आप जानते हैं कि नमाज़ में तकबीर (ईश्वर की बड़ाई करना) (अल्लाहु अकबर कहकर, 'ईश्वर महान है') खौफ़ का स्थान है। और ठहरना निकटता का स्थान है। और तिलावत बातचीत का स्थान है। और रुख (इस्लामी प्रार्थना में शरीर को झुकाना, सिर झुकाना) डर का स्थान है, सजदा गवाही का स्थान है, और क़ौव्वद (नमाज़ में कम समय तक बैठना) प्रेम का स्थान है।

चार क़िबला (दिशाएँ) :

1. क़िबला हवारिज, जो मुसलमानों पर फ़र्ज़ है, और इसी तरफ़ सभी मुसलमान नमाज़ में मुँह करते हैं।

2. दिल का क़िबला, और, इससे, रहस्यमय तरीके के लोगों का ध्यान है, और जिसमें वे इस मामले में संलग्न थे।

3. क़िबला पीर और उससे आगे का ध्यान रखना चाहिए
   शिष्य अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रति समर्पित होते हैं।

4 क़िबला वजीहा अल्लाह, जिसने सभी क़िबलों को मिटा दिया। सभी नबियों, रसूलों और सभी विशेष पवित्र व्यक्तियों का ध्यान इस पर है।

क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी की कुछ बातें इस प्रकार हैं।

1,आत्मा का त्याग ही वास्तविकता की याद है। तो वह हृदय जो कभी नहीं मरेगा जिसमें यह गुण है।

और जिसे वास्तविकता का स्मरण नहीं है वह नश्वर है।

2. हर चीज़ का एक उद्देश्य होता है। और उद्देश्य पूजा का ज्ञान है। और इसी कारण से, ज्ञान के बिना पूजा करना बेतुका और दुखद है। ज्ञान के बिना ज्ञान सिरदर्द है। न्याय के दिन, तर्क ही एकमात्र ज्ञान होगा।

3. दरवेश लोगों की हालत मोहब्बत और शेखी बघारने की है। जब दरवेश लोगों पर बेपनाह मोहब्बत होगी तो वो मोहब्बत में डूबे रहेंगे और इस वजह से उन्हें दूसरों की कोई फिक्र नहीं रहेगी।

4.उपवास वास्तव में वह है जो व्यक्ति को खाने-पीने से दूर रखता है और नींद और वास्तविकता में उपवास रखता है।

उठते-बैठते और खड़े होते हुए अल्लाह की इबादत में रहते हैं।

चमत्कार : बगदाद से आते समय काजी साहब को रास्ते में एक जोगी (हिन्दू तपस्वी) मिला, उसका नाम ज्ञान नाथ था। उसने जोगी को घास के पौधे की जड़ भेंट की, जिससे अमृत बनाया जा सकता है। काजी साहब ने उस जड़ को नदी में फेंक दिया। इस बात से जोगी बहुत दुखी हुआ। काजी साहब ने नदी में हाथ डालकर उस जड़ को बहा दिया। और जोगी (हिन्दू तपस्वी व्यक्ति) से कहा कि वह अपनी आंखें बंद कर ले, और जब उसने आंखें खोली, तो वह एम्पोरियम से लेकर पाताल तक देख पाया, और उसे हर तरफ सोना ही सोना दिखाई दे रहा था। तो जोगी उससे बहुत प्रभावित हुआ और उसने हाथ जोड़कर विनती की।

एक बार दिल्ली में बारिश नहीं हो रही थी। दिल्ली के राजा ने दिल्ली के पवित्र लोगों से दिल्ली में बारिश के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। हज़रत काजी साहब ने दिल्ली के राजा से इस मामले में समा बैठक आयोजित करने के लिए कहा।

दिल्ली के बादशाह ने इस मामले में समा बैठक के साथ-साथ भोजन की व्यवस्था भी कर दी थी। भोजन के बाद समा सुनने का कार्यक्रम शुरू हो गया। खैर मजालिस नामक पुस्तक के संदर्भ के अनुसार, दिल्ली में इतनी भारी वर्षा हुई कि लोग कहने लगे कि इस मामले में इस समय वर्षा बंद कर देना ही अच्छा है।

3.शेख बदरुद्दीन गजनवी

शेख बदरुद्दीन गजनवी अल्लाह के दरबार में एक मान्य व्यक्ति हैं। और वे हजरत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के शिष्य और खलीफा थे। और वे गजनी के निवासी थे।

उनका सपना: उन्हें एक रात सपना आया कि पैगम्बर अपने साथियों और पवित्र व्यक्तियों के साथ वहाँ आये हैं। और पैगम्बर ने एक दरवेश को अपने हाथों में पकड़ा और कहा “बदरुद्दीन तुम इस दरवेश के शिष्य बन जाओ। और वह दरवेश अभी भी जवान था और उसके चेहरे पर दाढ़ी के बाल उग रहे थे। और इस दरवेश का नाम ख़ाजा कुतुबुद्दीन है।”

आध्यात्मिक गुरु की खोज: स्वप्न में जागने पर उन्होंने ऐसे दरवेश की खोज करने का निश्चय किया, जो पैगम्बर ने उन्हें स्वप्न में दिखाए थे। अपने साथी की खोज में उन्होंने इस मामले में कई शहरों का दौरा किया। इस खोज में वे चिंतित थे, कठिनाइयों का सामना कर रहे थे और साथ ही वे हैरान भी थे। और इस मामले में उन्होंने अपना घर और देश, अपने माता-पिता और रिश्तेदारों को छोड़कर गजनी छोड़ दिया। अपनी यात्रा के विवरण के बारे में उन्होंने एक बार निजामुद्दीन औलिया को बताया कि "वे गजनी से लाहौर आए थे। और उन दिनों लाहौर पूरी तरह से आबाद था। और मैं वहाँ रहा था

कुछ दिन बाद मेरा इरादा यात्रा का था।
और मेरे दिल में दिल्ली जाने की इच्छा थी। और कभी-कभी गजनी वापस जाने की इच्छा होती थी। मैं बहुत चिंता और परेशानी में था। मेरे दिल में गजनी के प्रति बहुत आकर्षण था। क्योंकि मेरे माता-पिता और भाई और अन्य रिश्तेदार वहाँ रहते थे और दिल्ली में मेरे दामाद के अलावा कोई नहीं रहता था।

भविष्यवाणी : वह तय नहीं कर पा रहा था कि कहाँ जाए। और उसने इस मामले में कुरान से भविष्यवाणी करने का फैसला किया।
भविष्यवाणी के अनुसार वह इस मामले में निर्णय लेंगे। उन्होंने स्वयं कहा, "संक्षेप में, मैंने कुरान के अनुसार भविष्यवाणियाँ करने का निर्णय लिया।" और एक पवित्र व्यक्ति की उपस्थिति में गए।
पहले गजनी की नीयत से देखा, फिर अज़ाब की आयत पाई। फिर दिल्ली की नीयत से देखा तो आसमानी नदियों की आयत और आसमानी सैरगाह की खूबियाँ पाईं। हालाँकि दिल में गजनी जाने की तमन्ना थी, फिर भी कुरान की भविष्यवाणी के अनुसार दिल्ली आ गया। आखिर में वह दिल्ली पहुँच गया। और उसने कहा, "जब मैं दिल्ली पहुँचा और सुना कि मेरा दामाद कैद में है। मैं दिल्ली के बादशाह के दरवाज़े पर गया ताकि उसे इस मामले की सूचना दे सकूँ। मैंने देखा कि वह घर से निकला है और उसके हाथ में कुछ रुपये हैं। उसने मुझसे गले मिलकर मुझे बहुत खुश किया। उसने मुझे अपने घर में ले लिया और मुझे रुपये भेंट किए, जिससे मैं इस मामले में बहुत संतुष्ट हुआ।"

उनसे हजरत खाजा कुतुबुद्दीन के बारे में पूछा गया। और वह यह सुनकर बहुत खुश हुए कि दरवेश खाजा कुतुबुद्दीन दिल्ली में रहते हैं, जिन्हें उन्होंने अपने सपने में देखा था। और जो बहुत प्रसिद्ध हैं और उच्च श्रेणी के दरवेश व्यक्तित्व वाले हैं? हजरत खाजा कुतुबुद्दीन और खाजी हमीदुद्दीन नागोरी दोनों एक ही स्थान पर रहते हैं। फिर उन्होंने उनकी उम्र के बारे में पूछा। उन्हें बताया गया कि काजी हमीद नागोरी बहुत कमजोर हैं और उनकी उम्र लगभग 130 साल है।

लेकिन ख़ाजा कुतुबुद्दीन का जवानी का दौर अभी शुरू ही हुआ था।
और उसकी उम्र लगभग 17 साल होगी और उसके चेहरे पर अब दाढ़ी आने लगी है। यह सुनकर उसे इस बात का पूरा यकीन हो गया कि उसने सपने में जो पवित्र व्यक्ति देखा है वह दिल्ली का ख़ाजा कुतुबुद्दीन है। वह ख़ाजा कुतुबुद्दीन के सामने जाने के लिए बहुत उत्सुक था।

किसी व्यक्ति के माध्यम से उन्हें दिल्ली में ख़्वाजा कुतुबुद्दीन की दरगाह का पता मालूम हो गया। आख़िरकार वे वहाँ स्थित दरगाह तक पहुँच गए, उस समय वहाँ समा की बैठक चल रही थी, और हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन वहाँ पाए गए।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: वह भवन के अंदर गया और बहुत सम्मान और आदर के साथ समा बैठक में बैठ गया।
जब समा की बैठक समाप्त हो गई, तो उसने अपना सिर धरती पर रखकर सजदा किया और फिर बहुत सम्मान के साथ कहा, "यह गुलाम बदरुद्दीन, उसका शिष्य बनना चाहता है।" हज़रत कुतुब ने उससे कहा, "ऐ बदरुद्दीन, तुम उस रात मेरे शिष्य बन गए हो, जब पैगम्बर तुम्हें मेरे हवाले कर रहे थे। और

अल्लाह के दरबार से आदेश हुआ कि “ऐ कुतुबुद्दीन, इस मामले में तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार हो गई। हमने बदरुद्दीन गजनी को स्वीकार कर लिया है और उसे अपना दोस्त बना लिया है।” कुतुब साहब की एहसानमंदी की बात जबान से सुनकर वह बहुत खुश हुआ। हज़रत चिश्तिया ज़ंजीर की रीति को पूरा करना चाहते हैं। जहान में भी और इस दुनिया में भी इस मामले में वाजिब की बरकत होगी। और बदरुद्दीन गजनी को चार छोर वाली टर्की टोपी दी जानी चाहिए। इस मामले में हज़रत कुतुब साहब से कहा गया। और उनकी प्रार्थना किसने स्वीकार की? उन्हें वाजिब सम्मान से नवाजा गया और चार छोर वाली टर्की टोपी दी गई

“बदरुद्दीन, आसमान की तरफ़ देखो।”

वह आकाश के किनारे देखा गया था।

कुतुब साहब ने उससे पूछा, क्या तुमने कुछ देखा है?

“मैंने तुमसे कहा था कि मैंने सिंहासन और कुर्सी देखी है।”

फिर कुतुब साहब ने कहा, "तुम्हारे मालिक कौन हैं, और आकाश की ओर देखो और देखो कि पटिया पर क्या लिखा है?"

वह आकाश में दिखाई दिया और उसने कहा

“मैंने वहाँ देखा है कि मैं आपका शिष्य हूँ।”

फिर उसने उससे धरती की ओर देखने को कहा।

वह धरती पर भी देखे गए और न ही किसी क्षेत्र में देखे जा सकते हैं। प्रतिज्ञा के समय उनकी आयु 70 वर्ष थी। उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु की संगति में रहकर उच्च पद प्राप्त किया। हजरत कुतुब को खिलाफत दी गई। उन्हें यह पद उनके गुरु संत-वस्त्र से मिला।

मृत्यु से पहले हज़रत कुतुब ने उनसे कहा, "ऐ बदरुद्दीन, हमें जो गुरु कृपा प्राप्त हुई है, जो कृपा तुम्हें प्राप्त हुई है, अल्लाह से यही प्रार्थना है कि तुम मेरे प्रियतम बनो।"

अपने आध्यात्मिक गुरु की सलाह.

हज़रत कुतुब साहब ने उन्हें कुछ नसीहतें दी हैं जिन पर उन्होंने अमल किया है और वे नसीहतें इस प्रकार लिखी गई हैं।

1. अपने साथियों के साथियों का अनुसरण करना। और निर्धन और भूखमरी का अनुसरण करना।

भिखारियों और गरीबों की तरह रहो और दुनिया के लोगों से न जुड़ो। दुनिया से दूर रहो। और फटे कपड़े पहनो। हमेशा अल्लाह की याद में मशगूल रहो। और अल्लाह के दोस्तों से प्यार करते रहो। अमीर लोगों से ज़्यादा दरवेश लोगों को सम्मान दो। और दरवेश लोगों के हाथ अपने हाथों से धोओ।

उन्हें सेवा दी गई: हजरत कुतुब ने उन्हें दरगाह भवन के मस्जिद इमाम का कर्तव्य सौंपा था, जिसके लिए उन्होंने अपने आवंटित कर्तव्यों को अच्छी तरह और पूरी तरह से निभाया।

उन्हें सदमा लगा: गजनी से दिल्ली पहुंचने पर उन्हें पता चला कि मुगलों ने गजनी पर हमला कर दिया है और उसे लूट लिया है और उस हमले में उनके माता-पिता, भाई-बहनों के साथ-साथ उनके रिश्तेदार भी मारे गए, जिस कारण उन्हें इस बात का बहुत सदमा लगा।

गुरु की सेवा : वे सदैव अपने गुरु की सेवा हेतु उनके सान्निध्य में उपस्थित रहते थे तथा उनकी सेवा को ही अपना सौभाग्य समझते थे।

गुरु का आदर: जब वे अपने गुरु की सेवा में उपस्थित होते थे और उनकी दशा देखकर सिर झुकाकर बैठ जाते थे।

वास्तव में, वह प्रकाश द्वारा मारा गया था।
क्योंकि यह आपके पास तेल के साथ गया था।

एक घटना: एक बार काजी मिनहाजुद्दीन को काजी बदरुद्दीन गजनी के घर बुलाया गया। काजी साहब ने इस मामले में वादा किया। वे अपने उपदेश पर वहां आए। काजी बदरुद्दीन के घर पर समा की बैठक हुई।

यह बैठक नशे से भरी थी, और वहाँ था

काजी साहब पर बहुत क्रोध आया और काजी साहब ने इस बात पर अपनी पगड़ी, पोशाक आदि फाड़ ली।

काजी काहिब का भाषण: काजी मिनहाजुद्दीन उन्हें लाल बाघ कहते थे।

दुआ के लिए अनुरोध: हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने एक रात सपने में काजी बदरुद्दीन से उनके लिए दुआ करने का अनुरोध किया और उनसे यह अनुरोध किया कि वे कुरान को याद कर लें।

इच्छा: उनकी इच्छा है कि वे अपने आध्यात्मिक गुरु हजरत कुतुब साहब के प्रथम खिलाफत और उत्तराधिकारी तथा वायसराय बनें। लेकिन इस मामले में उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई।

उनकी धर्मोपदेश सभा में : उनकी धर्मोपदेश सभा में सभी वर्ग के लोग होंगे। उनकी बैठक में बाबा फरीद गंज शकर, सैयद मुबारक गजनवी, शेख जियाउद्दीन मुरीद ग़रीब, मौलाना जजरमी और काजी हमीद उद्दीन नागोरी शामिल थे।

अंतिम दिन: अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने शेख जियाउद्दीन मुरीद ग़रीब के भतीजे शेख़ ममामुद्दीन अब्दाल को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। और उन्हें अपना चीथड़ा पहनाया और इस मामले में उनके लिए प्रार्थना की।

हज़रत उम्र में इज़ाफे के लिए नमाज़ पढ़ते थे, जो महीने के आखिरी दिनों में अदा की जाती है।

रज्जब। जिस साल उनकी मृत्यु हुई, उस साल उन्होंने आयु वृद्धि की प्रार्थना नहीं की।

मृत्यु: उनकी आयु 100 वर्ष से अधिक थी। उनकी कब्र ख़ाजा कुतुबुद्दीन काकी की कब्र के पास है। और वहाँ हर साल उनकी वार्षिक पुण्यतिथि (उर्स) होगी।

उनकी पवित्र जीवनी: वे कुरान के जानकार थे और दिन में एक कुरान और रात में एक कुरान पढ़ते थे। वे उच्च कोटि के दरवेश थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही महान था। वे रात्रि में पूजा करते थे।

हज़रत देविश लोगों की सेवा को महानता समझते थे। और उन्होंने 200 विद्वानों से मुलाकात की और उनसे कृपा प्राप्त की। और उनकी कृपा दृष्टि से उन्हें इस मामले में बहुत लाभ हुआ। उनकी पवित्रता और साथ ही साथ साधुता के बारे में सभी ने स्वीकार किया और साथ ही साथ समर्पित थे; वह बहुत व्यस्त रहते थे

उपदेश.

समा की बैठकों से उन्हें बहुत लगाव है। अपनी कमज़ोरी और बुढ़ापे के बावजूद हज़रत समा की बैठकों में खूब नाचते थे। जब उनसे पूछा गया कि कमज़ोरी और बुढ़ापे के बावजूद आप खूब क्यों नाचते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, "इस मामले में तो वे नाचते ही हैं, लेकिन प्यार उन्हें नाचने पर मजबूर कर देगा।"

उन्हें कविता का बहुत शौक है। उनकी एक कविता इस प्रकार है:

नोहा मे कर्दमन नोहा गरदा मुजमे

आह ज़ैन सोज़म बरमद नोहा गर आतिश गिरफ़त

उनकी स्वर्णिम उक्ति इस प्रकार है।

"असहाय प्रेमी जो जुलजलाल (अल्लाह) की सुंदरता का दीवाना है, तो वह इस मामले में हूरियों से क्या कर सकता है।"

चमत्कार: उसकी मुलाक़ात ख़ाजा खिजर से होती है। एक बार उसके पिता ने उससे कहा कि ख़ाजा खिजर को दिखाओ, बहुत अच्छा होगा।

एक दिन वहाँ प्रवचन सभा थी, और उसके पिता भी वहाँ उपस्थित थे। एक ऊँचे स्थान पर, जहाँ कोई दूसरा व्यक्ति नहीं जा सकता था, एक व्यक्ति वहाँ बैठा था।

और बदरुद्दीन गजनवी ने अपने पिता से कहा कि ख़ाजा ख़िजर को वहाँ पर देख लो। उसके पिता धर्मोपदेश सभा के समाप्त होने पर उससे मिलना चाहते थे। और जब सभा समाप्त हुई तो उस स्थान पर कोई भी व्यक्ति बैठा हुआ नहीं था।

एक बार दिल्ली में बारिश कम हो रही थी, और राजा शम्सुद्दीन ने उनसे बारिश के लिए दुआ करने को कहा। उन्होंने कहा कि "जब तक बदर जीवित रहेगा, दिल्ली में भुखमरी नहीं होगी या बारिश कम होगी।" ऐसा कहते ही दिल्ली में बारिश शुरू हो गई।

हज़रत हर गुरुवार को मक्का और मदीना जाते थे।
और वह मक्का में पवित्र काबा और मदीना में पैगम्बर की कब्र की जियारत करके उत्कृष्टता प्राप्त करेगा।

4. शेख शेख नजीबुद्दीन मुतवक्किल

शेख नजीबुद्दीन मुतवकील पवित्र व्यक्तियों की एक शख्सियत थे। वे रहस्योद्घाटन और चमत्कारों के व्यक्ति थे। वे पवित्र व्यक्तियों के साथ-साथ विद्वानों के भी नेता थे। वे अवलोकन में अतुलनीय थे, और उस समय के सभी विद्वानों ने उनके बाह्य और आंतरिक गुणों की पूर्णता को पहचाना। वे बाबा फ़रीद गंज शकर के सगे भाई होने के साथ-साथ शिष्य और ख़लीफ़ा भी थे।

पारिवारिक स्थिति: वे फराक शाह के परिवार से हैं, जो अफगानिस्तान में काबुल के राजा थे। जब गजनी परिवार का वर्चस्व बढ़ा, तो फराक शाह का राज्य खत्म हो गया। और काबुल पर गजनी परिवार ने कब्ज़ा कर लिया। इस क्रांति के बाद फराक शाह ने काबुल नहीं छोड़ा और उनके बेटे काबुल में ही रहने लगे। चंगेज खान ने गजनी पर कब्ज़ा करके उसे नष्ट कर दिया। हजरत नजमुद्दीन मुतावकी के पिता काबुल की लड़ाई में मारे गए थे।

उनके पिता काजी हजरत शोएब फारुकी अपने बेटों के साथ लाहौर आए। लाहौर से वे कसूर गए। कसूर के काजी को उनके परिवार की धार्मिकता के बारे में पता था।

काजी शोएब फारुकी। और उसने राजा को अपने आगमन की सूचना दे दी है। राजा ने उसे तैसवाल का काजी नियुक्त कर दिया है। और वहाँ रहते हुए उसने अपने कर्तव्यों का बखूबी पालन करना शुरू कर दिया है।

ऐसा भी कहा जाता है कि उनके पिता सुल्तान शहाबुद्दीन गौरी के काल में मुल्तान आए थे। मुल्तान से वे कोंथवाल गांव गए, जहां उन्होंने काजी के पद पर काम करना शुरू किया और यहीं उनकी शादी हुई।

पिता: उनके पिता का नाम शेख जमालुद्दीन सुलेमान है। वह उमर फ़ारूक के बेटों में से थे और ज्ञान और उत्कृष्टता में परिपूर्ण थे।

माता : उनकी माता का नाम बीबी कुरैशम खातून है।
वह मौलाना वजीहुद्दीन की बेटी थीं और उनकी जीवनी और व्यक्तित्व शुद्ध था। उन्होंने चमत्कार किए थे।

एक रात की घटना है जब वह रात्रि पूजा में व्यस्त थी और एक चोर घर में घुस आया। और उस पर ऐसा भय छा गया कि वह वहीं अंधा हो गया। चोर चिंतित हो गया और पुकारा, "क्या कोई है? और जिसके भय से मैं अंधा हो गया था। मैं वादा करता हूँ कि अगर मेरी आँखों की रोशनी वापस आ गई, तो मैं चोरी के काम से बचूँगा।"

उसकी माँ: यह सुनकर, उसने चोर के लिए प्रार्थना की, और उसकी आँखों की रोशनी वापस आ गई।

सुबह वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ वापस आया और वह अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ मुसलमान बन गया।

भाई: उसके दो सगे भाई हैं, जो इस प्रकार हैं।

1.बड़े भाई हजरत अजुद्दीन महमूद।

2. छोटे भाई बाबा फ़रीद मसूद।

उनके पिता की ओर से वंशावली लिंक इस प्रकार है।

शेख नजीबुद्दीन बिन शेख जमालुद्दीन सुलेमान फारुकी बिन शोएब फारुकी बिन शेख अहमद अल-मारूफ बिन फर्क शाह काबिली फारुकी बिन शेख नसीर फारुकी बिन सुल्तान महमूद अल-मारुफ बिन शाहिनशा फारुकी बिन शेख शादमान शाह बिन सुल्तान मसूद शाह फारुकी बिन शेख अब्दुल गफ्फार फारुकी बिन शेख वाइज असगर फारुकी बिन शेख अबुल फतह कामक फारुक बिन शेख इशाक फारुकी बिन हजरत इब्राहिम फारुकी बिन नसीरुद्दीन फारुकी बिन शेख अब्दुल्ला फारुकी बिन हजरत उमर बिन क़त्ताब।

जन्म: उनका जन्म कोंथवाल गांव में हुआ था।

नाम: उसका नाम नजमुद्दीन है।

उपनाम: उनका उपनाम मुतवक्किल है। उन्हें मुतवक्किल कहने का कारण यह है कि अल्लाह के भरोसे उनके साथ परिवार के सदस्य होने के बावजूद, वह एक अद्वितीय व्यक्ति थे।

वह बहुत ही गरीबी में जीवन व्यतीत करते थे और साथ ही साथ

वह जीवन के संसाधनों को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखता। वह अल्लाह पर अतुलनीय रूप से भरोसा करने वाला व्यक्ति था।

दिल्ली आगमन: हज़रत अपने बड़े भाई बाबा फ़रीद गंजशकर के साथ दिल्ली आए। फिर बाबा फ़रीद दिल्ली से अजहोदन चले गए। लेकिन वे हज़रत बाबा फ़रीद गंजशकर के निर्देशों के अनुसार रहने लगे।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: उन्हें उनके बड़े भाई बाबा फ़रीद गंज शकर के हाथों प्रतिज्ञा दिलाई गई थी। उन्होंने बाबा फ़रीद गंज शकर की संत जैसी पोशाक पहनी हुई थी।

मस्जिद का इमाम: दिल्ली में एक व्यक्ति रहता था, उसका नाम एतम था। वह दिल्ली में एक मस्जिद बनवा रहा था और उसे मस्जिद का इमाम (नेता) नियुक्त किया गया था और उस व्यक्ति ने अपनी बेटी की शादी की और इस पर बहुत बड़ी रकम खर्च की। उसने उससे कहा कि "अगर वह शादी के खर्च की आधी रकम अल्लाह की राह में खर्च करेगा, तो पता नहीं इस मामले में क्या होगा।" यह बात उस व्यक्ति को पसंद नहीं आई और उसने उसे मस्जिद के इमाम के पद से हटा दिया।

घटना की जानकारी बाबा फ़रीद गंज शकर को दी गई: उन्होंने अजोधन जाकर अपने बड़े भाई को इस घटना की जानकारी दी। यह सुनकर बाबा फ़रीद ने कहा, "अगर तमरी जाएगी, तो एकतारी मिलेगी।" उस समय, एक व्यक्ति,

जिसका नाम एकतारी था, वहाँ आया था और जिसने इस परिवार की बहुत सेवा की है।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की उनके प्रति श्रद्धा: जब हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया दिल्ली आए तो वे उनके पड़ोस में ही रहते थे। और उनके प्रति उनकी बहुत श्रद्धा है।

अपनी मां की मृत्यु के बाद, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया उनके पास बहुत समय बिताते थे। एक बार उन्होंने उनसे काज़ी पद पर नियुक्ति के लिए प्रार्थना करने को कहा था।

लेकिन उन्होंने प्रार्थना नहीं की, और उन्होंने उससे कहा, “तुम काजी नहीं बनोगे, बल्कि कोई और व्यक्ति बनोगे।” एक बार महबूब इलाही उनके शिष्य बनना चाहते थे, लेकिन वे इस मामले में सहमत नहीं हुए और उनसे कहा, “यदि आप शिष्य बनना चाहते हैं, तो हज़रत बहाउद्दीन ज़िकेरिया मुल्तानी या बाबा फ़ैरद गंज शकर, उनमें से किसी एक के शिष्य बन जाओ।”

बीबी फातिमा सैम की सेवा: वह एक धर्मपरायण और बुजुर्ग महिला थीं। उनके प्रति उनके मन में बहुत प्रेम और भक्ति थी।
हज़रत उसे अपनी बहन समझते थे और उसकी हालत पर एहसान करते थे। जब हज़रत नजीब मुतवक्किल के घर में भूख लगती तो अगले दिन वह एक सेर या आधा किलो की रोटी पकाकर किसी भी व्यक्ति के हाथों उसके घर भिजवा देती थी। एक बार जब उसने उसके लिए सिर्फ़ एक रोटी भेजी तो उसने मज़ाक में कहा, "हे अल्लाह, जैसा कि तुमने इस औरत को, जो उस समय शहर की बादशाह भी थी, हमारा हाल बता दिया है, ताकि वह हमारे लिए कोई बरकत वाली चीज़ भेज सके।

इस मामले पर उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "राजाओं को यह बात पता चले, इसके लिए उन्हें कोई धर्मपरायणता नहीं मिलेगी।"

एक यात्रा की घटना: अजोधन में बसने के बाद बाबा फ़रीद ने अपने भाई नजीब मुतवक्किल को अपनी माँ को लाने के लिए भेजा। वह गया, और वह रास्ते में छाया में आराम कर रहा था। और पानी की ज़रूरत थी, इसलिए वह पानी लाने गया। जब वह पानी लेकर वहाँ वापस आया तो उसे अपनी माँ नहीं मिली। वह हैरान और बहुत चिंतित हुआ। उसने अपनी माँ को हर जगह ढूँढा, लेकिन उसे उसका कोई पता नहीं चला। अंत में, निराश होकर, वह बाबा फ़रीद गंज शकर के पास गया और उसे सारी कहानी सुनाई। यह सुनकर, उन्होंने उसे खाना पकाने और दान करने के लिए कहा।

काफी समय बाद वह पुनः उसी जंगल में पहुंचा।
और वह उसी पेड़ के नीचे चला गया, और उसके मन में यह विचार चल रहा था कि गांव के चारों तरफ जांच कर ली जाए।
ताकि वह उसे ढूंढ सके। उसने वही किया, और उसे वहाँ कुछ मानव हड्डियाँ मिलीं। उसने सोचा कि शायद वे उसकी माँ की हड्डियाँ थीं।

और यह भी हो सकता है कि उसे किसी बाघ या जानवर ने मारा हो। और यह सोचकर उसने उन हड्डियों को इकट्ठा करके थैले में डाल लिया है। वह थैला लेकर बाबा फ़रीद के सामने गया है। और उन्हें इस मामले की पूरी कहानी बताई है। यह सुनकर बाबा साहब ने उससे अपना थैला दिखाने को कहा। वह उसे चेक कर रहे थे, लेकिन थैले में हड्डियाँ नहीं थीं।

ख़ाजा ख़िजर से मुलाक़ात: एक दिन वे ईदगाह से लौट रहे थे (ईदगाह एक खुली जगह होती है जिसका इस्तेमाल ईद-उल-फ़ित्र और ईद-उल-अज़हा जैसे ख़ास मौकों पर मुस्लिम नमाज़ के लिए किया जाता है)। "ईदगाह" शब्द फ़ारसी शब्दों ईद (दावत) और -गाह (जगह) से आया है जो उनके घर के लिए था।

लोग उसके इर्द-गिर्द थे। वे उसके हाथ-पैर चूम रहे थे। कुछ दरवेश लोग जिन्होंने उसे पहले नहीं देखा था, उसका नाम पूछ रहे थे। जब वे उसका नाम जान पाए, तो उन्होंने उसके घर जाकर उसके साथ खाना खाने का फैसला किया। दरवेश लोग उससे मिलने आए, और उन्होंने उससे अपने घर में खाने का इंतज़ाम करने को कहा। उसने उनका स्वागत किया। और उन्हें वहाँ बैठने को कहा। उस दिन घर में भूख थी। उसने अपनी पत्नी से कहा कि अगर कुछ हो, तो इस मामले में खाना बना ले। जब उसे पता चला कि घर में कुछ नहीं है। तो उसने उससे कहा कि वह उसे अपने सिर से चादर (एक बड़ा कपड़ा जो सिर और शरीर के ऊपरी हिस्से पर लपेटा जाता है, सिर्फ़ चेहरा खुला रहता है, जिसे ख़ास तौर पर मुसलमान महिलाएँ पहनती हैं।) दे दे। ताकि वह बाज़ार से रोटी और करी ला सके। उसने चादर देखी है जिसमें कुछ पैच हैं। और इसे कौन खरीदेगा? फिर उसने अपनी नमाज़ की चटाई बेचने का सोचा, और उसमें भी कई पैच थे। लाचारी की हालत में उसने फकीर व्यक्ति की रीति के अनुसार यह किया कि अगर दरवेश को उसके घर में कुछ नहीं मिलेगा तो वे हाथ में पानी की बोतल लेकर बैठक स्थल पर खड़े हो जाएंगे। और उसने सभी दरवेश लोगों को पानी पिलाया। दरवेश व्यक्तियों ने पानी लिया।

उन्होंने उसके हाथ से पानी का गिलास लिया और पानी पीया, और सब उसके घर से चले गए।

दरवेश लोगों को अपने घर से विदा करके खाजा साहब अपने कमरे में चले गए और मन ही मन सोचने लगे, "ईद का दिन बीतता जा रहा है, लेकिन मेरे बच्चों के मुँह में खाना नहीं जा रहा है। और यात्री निराश होकर आ-जा रहे हैं।"

वह इसी प्रकार विचार कर रहा था कि इतने में एक व्यक्ति फारसी की एक पंक्ति सुनाता हुआ वहां आया। उसे पता चल गया कि वह खाजा खिजर है, इसलिए वह उसे सम्मान देने के लिए खड़ा हो गया। खिजर ने उससे पूछा तुम क्या शिकायत कर रहे हो। उसने दिल से लड़ते हुए कहा कि घर में कुछ भी नहीं है। तब खिजर ने उससे कहा कि उसके खाने के लिए कुछ खाना ले आओ। लेकिन उसने इस मामले में बहाना बना दिया। खिजर ने उससे कहा कि घर में जो कुछ भी है, ले आओ। वह घर के अंदर गया। उसने भोजन से भरा एक थाल देखा। अपनी पत्नी से पूछने पर उसने बताया कि एक व्यक्ति आया और थाल रखकर चला गया। और वह उस थाल में से कुछ खाना लेकर घर के ऊपर की तरफ गया। और जब वह वहां पहुंचा तो उसे वहां कोई नहीं मिला। उसने अपने दिल में कहा कि उसे जो यह दर्जा मिला है, वह गरीबी और दरिद्रता के कारण मिला है।

उनके पुत्र: हज़रत के तीन पुत्र थे। 1. शेख इस्माइल 2. शेख अहमद 3. शेख मोहम्मद।

मृत्यु: खाजा साहब 19 बार बाबा फरीद के पास गए। हर बार उनके पास से जाते समय वे उनसे दुआ मांगते थे। ताकि अगली बार वे उनके पास आ सकें। जब खाजा साहब आखिरी बार बाबा फरीद के पास गए तो उन्होंने उनसे प्रार्थना की, लेकिन उस समय बाबा फरीद चुप थे।

हजरत निजामुद्दीन ने कहा कि बाबा फरीद ने खिलाफत के कागजात दिए हैं और उन्हें हांसी में मौलाना जलालुद्दीन और दिल्ली में काजी मुंतकब को दिखाने का निर्देश दिया है।

उन्हें इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि बाबा फ़रीद ने इस मामले में शेख नजीबुद्दीन मुतवक्किल का नाम क्यों नहीं लिया। उन्होंने सोचा कि शायद इस मामले में कुछ औचित्य हो।

जब वह दिल्ली आये तो उन्हें पता चला कि उनकी मृत्यु 7 रमजान को हो गयी थी।

दिल्ली में उनकी कब्र शेख नजीबुद्दीन शेर सवार के नाम से मशहूर है। उनकी कब्र बीबी जुलेखा की कब्र के पास ही है।

जीवनचरित्र: वे अपने समय के महान दाउश थे। उन्होंने अल्लाह पर भरोसे का उच्च कोटि का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनकी तल्लीनता के बारे में हजरत निजामुद्दीन औलिया ने कहा, "मैंने दिल्ली में ऐसी शख्सियत नहीं देखी। यहां तक कि उन्हें भी नहीं पता कि आज क्या है। या कौन सा महीना है? अनाज की बिक्री का भाव क्या है और मटन की बिक्री का भाव क्या है? इसलिए उन्हें इस मामले में कुछ भी पता नहीं था। वे केवल अल्लाह की इबादत में व्यस्त रहते थे।" हजरत बाबा फरीद ने उनसे कहा, "आप भी अब्दाल (अब्दाल (अरबी: □□□□□ (, शाब्दिक रूप से विकल्प, लेकिन जिसका अर्थ "उदार" भी हो सकता है) में से हैं।

[करीम] और "कुलीन" [शरीफ], इस्लामी तत्वमीमांसा और इस्लामी रहस्यवाद में इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द, सुन्नी और शिया दोनों, भगवान के संतों के एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण समूह को संदर्भित करने के लिए।) व्यक्ति।"

ज्ञान का शौक: कई दिनों से वह 'जमा हिकायत' नामक पुस्तक लिखना चाहते थे। आख़िरकार हामिद नाम के एक व्यक्ति ने यह पुस्तक लिखनी शुरू की और वह पुस्तक जल्द ही समाप्त हो गई।

कहावतें: :परफेक्ट मोमेन (आस्तिक) वह व्यक्ति है जो बेटों की दोस्ती की तुलना में वास्तविकता की दोस्ती को प्राथमिकता देता है।

जब दुनिया हाथ से चली जाएगी, तब दुनिया की परवाह मत करना; यह कोई बची हुई चीज़ नहीं है।"

दैनिक पाठ: हज़रत हमेशा यह प्रार्थना पढ़ते थे।

"इमोनी फ़ी एबाद अल्लाह रहिमुकुल्लाहि।"

चमत्कार: बदायूं में उनका एक भाई रहता था। वह हर साल उनसे मिलने बदायूं जाता था। एक बार ये दोनों भाई शेख अली से मिलने गए, जो एक अमीर परिवार के सदस्य थे। वहां फर्श पर पहुंचने से पहले उन्होंने चार कदम पहले अपने जूते उतारे। उन्होंने अपना पैर जमीन पर रखा, फिर उन्होंने अपना पैर फर्श पर रखा, और नमाज़ की चटाई फर्श पर थी। शेख अली इस बात से परेशान थे। उन्होंने कहा कि यह चटाई एक नमाज़ का गलीचा है जिस पर ये भाई बैठे हैं। शेख अली से पहले एक किताब थी। उनसे किताब के बारे में पूछा गया है, लेकिन अपनी प्रतिद्वंद्विता के कारण, उन्होंने इस मामले में जवाब नहीं दिया। फिर उन्होंने कहा,

“अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं किताब देख सकता हूँ।”

उनकी अनुमति पाकर उन्होंने पुस्तक खोली। जब उन्होंने पुस्तक खोली तो उन्होंने पुस्तक में निम्नलिखित लिखा देखा:

"अंत समय में ऐसे विद्वान लोग होंगे जो अकेलेपन में पाप करते थे। लेकिन अगर किसी व्यक्ति का पैर ज़मीन पर होगा, तो वे इस मामले में गड़बड़ी करेंगे।"

उन्होंने वह पुस्तक शेख अली को वापस कर दी और उस लेखन को देखकर शेख अली को इस मामले में उन पर बहुत अफसोस हुआ।

5. हज़रत खाजा निज़ामुद्दीन औलिया

हदत खाजा निज़ामुद्दीन औलिया का मकबरा
दिल्ली

हज़रत ख़ाजा निज़ामुद्दीन औलिया, जो अल्लाह के प्यारे हैं। और बाबा फ़रीद शकर गंज के उत्तराधिकारी हैं। वे हक़ीकत की व्यवस्था के अनुयायी और इस्लाम धर्म के मार्गदर्शक हैं।

पारिवारिक विवरण: ख़ाजा निज़ामुद्दीन औलिया का परिवार बुखारा से ताल्लुक रखता है। और उनके दादा सैयद अली और उनके नाना जो अपने परिवार के साथ बख़ूरा क्षेत्र से लाहौर चले गए थे। लाहौर में कुछ दिन रहने के बाद वे बदायूं चले गए। और बदायूं में ही बस गए। उस समय बदायूं सूफी और फारसी के विद्वानों का केंद्र था। हज़रत सैयद अली और हज़रत सैयद अरब जो नेक और सदाचारी व्यक्ति थे। उनके पास दीन की दौलत थी। और उनके पास सांसारिक दौलत भी थी और वे इस मामले में उनके साथ थे।

पिता का नाम: उनके पिता का नाम खाजा सैयद अहमद है।
वे जन्म से ही पवित्र व्यक्ति थे। उन्हें अपने पिता खाजा सैयद अली की ओर से भक्ति और खिलाफत मिली थी और उन्होंने कुछ दिनों तक पद-काजी (न्यायाधीश) की कृपा भी की थी।

इसके बाद उन्होंने एकांतवास अपनाया और फिर इस मामले में पूर्ण अकेलेपन को अपनाया।

उनकी माँ: वह ख़ाजा सैयद अरब की बेटी थीं, और वह धैर्य और आभार के साथ-साथ अल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पण में अद्वितीय थीं। वह संयमी और तपस्वी ज्ञान और सहनशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं।

उनके पिता की ओर से वंशावली लिंक इस प्रकार है।

खाजा निज़ामुद्दीन औलिया बिन सैयद अहमद बिन सैयद अली बुखारी बिन सैयद अब्दुल्ला बिन सैयद हुसैन बिन सैयद अली बिन सैयद अहमद बिन सैयद अब्दुल्ला बिन सैयद अली असगर बिन सैयद जाफर बिन इमाम अली हादी नकी बिन इमाम मोहम्मद तकी अलमकलाब बा जवाब बिन हजरत इमाम अली रेजा बिन इमाम मूसा काज़िम बिन हज़रत इमाम जाफ़र सादिक बिन हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र बिन हज़रत इमाम अली अलमक़लब बा ज़ैन अल-अबिदीन बिन हज़रत इमाम हुसैन बिन हज़रत सैयदना अली करम वज़ू।

उनकी मां का आनुवंशिक रिकॉर्ड इस प्रकार है:

हज़रत बीबी ज़ुलेक़ा बिन्त खाजा सैयद अरब बुखारी बिन
सैयद अबुल-मुफ़क़र बिन सैयद मोहम्मद अज़हर बिन सैयद
हुसैन बिन सैयद अली बिन सैयद अहमद बिन सैयद अब्दुल्ला बिन सैयद अली बिन सैयद अहमद बिन सैयद अब्दुल्ला बिन सैयद
अली असगर बिन सैयद जाफर बिन इमाम अली हादी तकी बिन
इमाम मोहम्मद तकी अलमक़लाब बिन जवाद बिन हज़रत
इमाम अली रज़ा बिन हज़रत इमाम अली रज़ा बिन मूसा
काज़िम बिन हज़रत जाफ़र सादिक बिन हज़रत इमाम

मोहम्मद बाक़र बिन हज़रत इमाम अली अलमक़लाब बिन ज़ैन अल-आबिदीन बिन हज़रत सैयदना हज़रत अली करम वज़ू।

उनकी वंशावली का रिकॉर्ड: वह सादात से हैं (शब्द "सादात" एक प्रत्यय है जो उन परिवारों को दिया जाता है जिन्हें इस्लामी पैगम्बर मुहम्मद का वंशज माना जाता है। यह कुछ देशों में एक दिया गया नाम भी हो सकता है।) और अपने पिता और माता की ओर से, वह हुसैनी की सैयद वंशावली से संबंधित हैं।

जन्म: इनका जन्म 27 सफर माह 636 हिजरी को आखिरी बुधवार को सूर्योदय के समय हुआ, हजरत इस दुनिया में आये।

नाम: उसका नाम मोहम्मद निज़ामुद्दीन है।

उपनाम: उनके उपनाम इस प्रकार हैं।

सुल्तान मशिक, महबूब इलाही,

बचपन का सदमा: हज़रत ख़ाजा निज़ामुद्दीन अभी छोटे ही थे कि उनकी माँ इस दुनिया से चली गईं। ऐसा भी कहा जाता है कि जब उनके पिता दुनिया से चले गए, तब उनकी उम्र पाँच साल थी।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा: उनकी माँ ने उन्हें स्कूल भेजा, जहाँ उन्होंने मौलाना शदी मुकरती के साथ कुरान का एक भाग पढ़ा। और उसके बाद, उन्होंने किताबें पढ़ना शुरू किया। उन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक पढ़ी

मौलाना अलाउद्दीन उसली के साथ 'क़दुरी'। जब किताब ख़त्म हो गई, तो मौलाना अलाउद्दीन उसली ने विद्वानों और पवित्र व्यक्तियों की मौजूदगी में अपने हाथों में पगड़ी ली, उसे खोला और हज़रत निज़ामुद्दीन से कहा कि वे उनके पास आएं और उनके सिर पर पगड़ी बाँध दें।

मौलाना शम्सुद्दीन से हजरत, जो शम्स मुल्क के नाम से मशहूर हैं, ने उनकी तालीम में 'मकामात हरीरी' नामक किताब याद की थी। मौलाना शम्सुद्दीन के बराबर साहित्य और शब्दकोशों में कोई दूसरा शख्स नहीं है।

और शहर के कई विद्वान और विद्वान व्यक्ति जो उनके छात्र थे।

हज़रत ने फ़िक़्हा (इस्लामी कानून, हदीस (पैगंबर की बातें), कुरान की व्याख्या, भाषण, अर्थ, तर्क, ज्ञान, दर्शन, खगोल विज्ञान, गणित, अनुशासन, साहित्य और क़िरात (अरबी में क़िरात का अर्थ कुरान का अध्ययन या पाठ करना है) जैसे प्रकट ज्ञान में पूर्णता प्राप्त की थी, और उन्होंने कुरान के पाठ के सात तरीकों से कुरान को याद किया। दिल्ली पहुंचने पर, उन्होंने मुहादिस कलामुद्दीन से एक प्रमाण पत्र प्राप्त किया, जो 'मशारिक अनवर' पुस्तक के लेखक थे।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने अजोधन में अपने आध्यात्मिक गुरु के सानिध्य में रहकर कुरान के छह भाग याद किए। और उन्होंने तीन पुस्तकों का भी अध्ययन किया। और उनमें से एक में वे वाचक थे, और बाकी दो में वे श्रोता थे। उपरोक्त पुस्तकों के अतिरिक्त, उन्होंने

उन्होंने अजोधन में अपने आध्यात्मिक गुरु बाबा फ़ैरद की उपस्थिति में 'अवारिफ' पुस्तक के छह भागों का अध्ययन किया और 'तहमीद अबू शुकुर सलमी' का भी अध्ययन किया।

ज्ञान में उत्कृष्टता: उन्होंने प्रत्यक्ष ज्ञान में उत्कृष्टता प्राप्त की और इस उत्कृष्टता के लिए विद्वानों और विद्वानों की श्रेणी में उन्हें "निज़ामुद्दीन बहस महफ़िल शिकन" की उपाधि से जाना जाता था।

वे दिल्ली में रहते थे। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात वे बदायूं से चले आये और दिल्ली में बस गये। उनके साथ उनकी माँ और बहन भी थीं। वे स्थायी रूप से दिल्ली में बस गये। दिल्ली में हज़रत निज़ामुद्दीन कई वर्षों तक ज्ञान प्राप्ति के लिए कार्यरत रहे। मौलाना अमीनुद्दीन अहमद मुहादित की संगति में उन्हें बहुत अनुग्रह प्राप्त हो रहा था।

जब वे दिल्ली आये तो उन्हें खाजा निजबुद्दीन मुतावकील के पड़ोस में किराये का मकान दिया गया, जो बाबा फरीद गण शकर के भाई थे।

दूसरा सदमा: दिल्ली में उनकी माँ का निधन हो गया। और यह घटना इस मामले में बहुत सदमा देने वाली थी। और उसके बाद ख़ाजा मुतवक्किल की संगत में उन्हें दोस्त और सहयोगी मिल गए।

मज्जूब (निडर व्यक्ति) से मुलाकात: एक दिन वह हजरत कुतुबुद्दीन की रौशनी वाली मजार पर जियारत करने गए।

दिल्ली में काकी से मुलाकात हुई और वहां उनकी मुलाकात एक मज्जूब से हुई।

व्यक्ति। और उसने अनुरोध किया है कि वह उसके लिए प्रार्थना करे ताकि वह काजी बन सके। उस मज्जूब ने उससे कहा, "निजामुद्दीन काजी बनना चाहता है, और मैं उसे दुनिया के राजा के रूप में देख रहा हूँ। जब वह इस पद पर पहुँचेगा, तो पूरी दुनिया उसके पक्ष से लाभान्वित होगी।"

काजी बनने की इच्छा: एक दिन वह खाजा नजीबुद्दीन मुतवक्किल से भी प्रार्थना करता है कि वह उसके लिए काजी बनने की दुआ करें। खाजा नजीबुद्दीन ने उससे कहा कि "अल्लाह की कृपा से तुम काजी तो नहीं बनोगे, लेकिन तुम ऐसे व्यक्ति बनोगे जिन्हें मैं इस मामले में जानता हूं।"

बाबा गंज शकर के साथ अदृश्य की भक्ति: हज़रत निज़ामुद्दीन बदायूं में थे, और उनकी उम्र 12 साल थी। और वो शब्दकोश का ज्ञान प्राप्त करने में लगे हुए थे। एक दिन की घटना है कि वो उस्ताद मौलाना अलाउद्दीन उसली के पास बैठे थे, और मुल्तान से एक व्यक्ति आया, और उसका नाम अबू बकर क़رارत था।

उन्हें अबू बकर कव्वाल भी कहा जाता था।

उसके गुरु ने उस व्यक्ति से मुल्तान के विद्वानों और पवित्र व्यक्तियों के बारे में पूछा है। और उस व्यक्ति ने हज़रत शेख ज़िकरिया मुल्तानी की बहुत प्रशंसा की है। वह उनके लिए कव्वाली गा रहा था। उनकी इबादत और रहस्यवादी अभ्यासों का उल्लेख करना मुश्किल है। यहाँ तक कि उनकी दासियों की हालत भी ऐसी थी कि वे काम के समय भी अल्लाह की याद में लगी रहती थीं। उस क्षेत्र में, उनकी कृपा और कृपा के कारण उन्हें प्रकाश मिला।

हज़रत महबूब इलाही ने ये घटनाएँ सुननी शुरू कीं। फिर क्रोसिटर ने अजोधन के बारे में विस्तार से बताना शुरू किया कि वहाँ एक जीवित बाबा फ़रीद गंज शकर थे। और वह उनके पास गए। और उन्होंने पाया कि आकाश में पूर्ण चंद्रमा की तरह चमक रहा है। उन्होंने अपने ज्ञान के प्रकाश से एक अंधेरे दिल को रोशनी दी है। और इस तरह उन्होंने वहाँ के लोगों के दिलों को जीत लिया है। और उनके समूह में बहुत से लोग हैं।

जब हजरत निजामुद्दीन ने बाबा फरीद गंज शकर की तारीफ सुनी तो उनके दिल में उनके लिए एक जुनून और प्यार पैदा हो गया। इस तरह उनके दिल में उनके लिए भक्ति पैदा हो गई। उनके दिल में उनके चरणों को चूमने की भावना पैदा हो गई। उनकी मोहब्बत के साथ-साथ भक्ति और लगाव भी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। हर नमाज के बाद शेख फरीद और मौलाना फैरद का दस बार जिक्र करना उनका रोजाना का नियम था। उनका यह अंतरतम प्रेम छिपा नहीं था और इस मामले में उनके दोस्तों को यह पता था। जब वे उनके लिए कसम खाते थे, तो शेख के प्यार की कसम खाते थे; इसका मतलब बाबा गंज शकर के नाम से है।

जब वह बदायूं से दिल्ली में रहने के लिए निकले तो एक व्यक्ति था जिसका नाम अयूज था और जो उनकी यात्रा में उनके साथ था। जब उन्हें रास्ते में कोई खतरा दिखाई देता तो वह अचानक कहते, "अरे पीर, मिल जाओ, हम आपकी सुरक्षा में जा रहे हैं।" जब हजरत निजामुद्दीन ने उस व्यक्ति की बातें सुनीं और उन्होंने पूछा कि आपका कौन है?

उस व्यक्ति ने कहा, "मेरा पीर वह है जिसने आपके दिल को अपने पास रख लिया है। और उसने आपको इस मामले में प्यार से बनाया है। इसका मतलब शेख फरीद एल्डिन गंज शकर है।" यह सुनकर उनकी ईमानदारी और विश्वास बहुत बढ़ गया। दिल्ली में, हज़रत निज़ामुद्दीन अपना बहुत समय हज़रत निज़ामुद्दीन मुतावकिल की संगत में बिताने लगे। वहाँ, गुण और सदाचार और प्रशंसा को दिल से सुनने से, बाबा फ़रीद गंज शकर के चरणों को चूमने की उनकी इच्छा, रुचि और बहुत अधिक बढ़ गई। समय बीतता गया, और इस मामले में, तीन साल बीत गए।

जीवन में परिवर्तन: हज़रत दिल्ली की जामा मस्जिद में रातें गुजारते थे। एक दिन सुबह अज़ान देने वाले ने मीनार पर जाकर कुरान की निम्नलिखित आयत पढ़ी, जिसका अनुवाद और व्याख्या इस प्रकार लिखी गई है:

"क्या मोमिन (अरबी: □□□r□ (एक अरबी इस्लामी शब्द है जिसका अर्थ है "आस्तिक"। इसे अक्सर कुरान में किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है जो अल्लाह की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण रखता है और उसके दिल में दृढ़ विश्वास होता है। मोमिन को एक नाम के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है और यह भगवान के नामों में से एक है।) लोगों के लिए अपने दिलों को अल्लाह के सामने याद के लिए झुकाने का समय नहीं आया है।"

हज़रत महबूब इलाही ने क़ुरआन की यह आयत सुनी और उन पर एक अजीब सी हालत आ गई। उनकी हालत में एक अजीब सा बदलाव आया और उनका सीना अल्लाह की रौशनी से भर गया। और इस मामले में उनसे दुनिया की मोहब्बत दूर हो गई। अब उनके पास दुनिया की कोई चाहत, ज़रूरत और ख्वाहिश नहीं रही। इस मामले में तन्हाई में रहना ही उनका मकसद बन गया।

अजोधन की ओर प्रस्थान: उन पर भक्ति का भाव था। वे बिना किसी इरादे के अजोधन की ओर चल पड़े। उन्होंने यात्रा का कोई प्रबंध नहीं किया और न ही कोई खर्च किया। वे हांसी गए और वहां अजोधन के लिए प्रस्थान करने वाले काफिले की प्रतीक्षा करने लगे। जब काफिला एकत्र हो गया तो वे भी यात्रा के लिए काफिले वालों में शामिल हो गए। जब काफिले के सरदार को यात्रा में कोई खतरा महसूस होता तो वे खड़े हो जाते और ऊंची आवाज में कहते कि हे मेरे सहायक और सिफ़ारिश करने वाले, हमारे लिए उपस्थित हो जाओ। हज़रत निज़ामुद्दीन ने काफिले के सरदार से पूछा है कि तुम्हारा पीर कौन है और इस मामले में तुम किसको मदद के लिए बुला रहे हो। मेरे पीर दुनिया के कुतुब बाबा फ़रीद उद्दीन गंज शकर हैं और मैं उन्हीं को बुला रहा हूं। यह सुनकर बाबा फ़रीद के प्रति उनकी श्रद्धा और बढ़ गई।

रास्ते में एक जगह है सिरसा, और सिरसा से दो रास्ते हैं, और एक रास्ता मुल्तान जाता है और दूसरा रास्ता अजोधन जाता है। तीसरी रात, पैगंबर मोहम्मद उसके सपने में आए, और उन्होंने उससे कहा, "ओह,

निजामुद्दीन, अजोधन के रास्ते पर चलो।'' हजरत निजामुद्दीन बिना किसी हिचकिचाहट के 'या फरीद', 'या फरीद' कहते हुए अजोधन के रास्ते पर चल पड़े।

हजरत बाबा फरीद उद्दीन मसूद गंज की उपस्थिति में

एक प्रकार के बरतन

रास्ता तय करते हुए आखिर में वह अजोधन के अंतिम गंतव्य पर पहुंचे। बुधवार को 11 रजब वर्ष 665 हिजरी के दिन उन्होंने अजोधन गांव में प्रवेश किया और दोपहर की ज़ुहर की नमाज़ के बाद बाबा फ़रीद गंज शकर की हज़ूरी में गए और उनके पैर चूमकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर ने हज़रत निज़ामुद्दीन को देखकर निम्नलिखित दोहे पढ़े हैं।

प्रातःकाल बिना यात्रा व्यय और सुख-सुविधाओं के शेख निजामुद्दीन ने पैदल ही अजोदन की ओर यात्रा आरम्भ कर दी और गुरुवार को उनकी मुलाकात बाबा फैरड़ से हुई और बाबा साहब को देखते ही उन्होंने निम्नलिखित फ़ारसी दोहे का पाठ किया।

'इसका अनुवाद यह है कि तुम्हारी जुदाई की आग ने दिलों को कबाबों जैसा बना दिया (कबाब एक लंबी, पतली छड़ी पर भूने हुए मांस या सब्जियों के टुकड़े या पिट्टा रोटी में परोसे गए भूने हुए मांस के टुकड़े होते हैं ।) और तुम्हारी मुहब्बत की बाढ़ ने इस मामले में जिंदगी खराब कर दी।'

हज़रत महबूब इलाही ने स्वयं इस घटना की व्याख्या इस प्रकार की है।

शेख निजामुद्दीन बाबा फरीद को अपने हृदय की उत्सुकता और ईमानदारी का हाल बताना चाहते थे, लेकिन डर के कारण वे इस विषय में कुछ न कह सके, केवल इतना कह सके कि आपके चरणों को चूमने का शौक है।

हजरत बाबा ने उसकी यह दशा देखकर अपनी कृपापूर्ण वाणी से इस प्रकार कहा:

लेकिन बाबा फ़रीद ने बड़े प्यार और स्नेह से उनसे कहा, "उनका स्वागत और सलाम है, और अल्लाह की कृपा से उन्हें दोनों दुनिया में बहुत लाभ होगा।"

फिर शेख निजामुद्दीन को क़िरका (संत जैसी पोशाक) दिया गया और उन्हें दुनिया के शेख के खास शिष्यों के समूह का मुखिया बनाया गया। उन्हें एक टोपी दी गई, जिसे उन्होंने अपने सिर पर पहना, साथ ही अवशेष, क़िरका (संत जैसी पोशाक), लकड़ी के चप्पल, नमाज़ का कालीन और छड़ी भी दी गई। फिर बाबा फ़रीद गंज शकर ने उन्हें संबोधित किया और उनसे कहा, "हे निजामुद्दीन, मैं भारत की संतता किसी और व्यक्ति को देना चाहता हूँ, और आप रास्ते में थे। उस समय, मैंने एक अदृश्य आवाज़ सुनी जिसमें कहा गया था कि कुछ समय के लिए इस मामले को रोक दें क्योंकि निजामुद्दीन आ रहे हैं। और वे भारत की संतता के योग्य हैं। इसलिए यह उन्हें दिया जाना चाहिए। उस समय, हज़रत निज़ामुद्दीन की उम्र 20 वर्ष थी। अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेश के अनुसार, वे अजोधन में रहने लगे। और हज़रत

महबूब इलाही ने अपने आध्यात्मिक गुरु से पूछा है, "उनके लिए क्या आदेश है? अगर पढ़ना-पढ़ाना बंद करके अनावश्यक प्रार्थना और दैनिक पाठ में संलग्न होने का निर्देश दिया जाएगा। तो क्या यह आदेश सही है?"

हज़रत बाबा फ़ैरद ने उनसे कहा, "मैं किसी को पढ़ने और पढ़ाने से नहीं रोकता, इसलिए यह करो और अन्य काम भी करो, क्योंकि दरवेश के पास इस मामले में कुछ ज्ञान है।"

उनकी प्रतिज्ञा का वंशावली रिकॉर्ड इस प्रकार है।

निजामुद्दीन देहलवी

बाबा फ़रीद गंज शकर

खाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

ख़ाजा उस्मान हारुनी

हाजी शरीफ जिंदानी

कुतुबुद्दीन मौदूद चिश्ती

ख़ाजा अबू मोहम्मद चिश्ती

खाजा नसीरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती

ख़ाजा अबू मोहम्मद चिश्ती

ख़ाजा अहमद अब्दुल चिश्ती

हुज़फ़ा आलमर्शी

सुल्तान इब्राहीम बिन अशम बालाक

ख़ाजा अबू फ़ज़ल बिन अयाज़

ख़ाजा अब्दुल वाहिद बिन ज़ायद

हसन बसरी

इमाम औलिया हजरत अली करम अल्लाह वजी

गुरु की सेवा: वे सात महीने तक गुरु की सेवा में रहे और कुछ दिनों तक उनके अंतरतम और प्रत्यक्ष कृपाओं से लाभान्वित हुए। अजोधन से प्रस्थान करने से पहले बाबा साहब ने उन्हें चिसीता सूफी संप्रदाय का एक विशेष क़िरक़ा पहनाया जो उनके पास पहुँचा था। और दूसरे रब्बिल अव्वल, 656 हिजरी के दिन उन्हें खिलाफत प्रदान की गई। और इस पर बाबा साहब ने उनके लिए प्रार्थना की और उनकी प्रार्थना का अनुवाद इस प्रकार है।

“अल्लाह तुम्हें दोनों जहानों में परहेज़गार बनाए और तुम्हें नेकियों, अच्छे कामों और रोज़ी का ज्ञान दे।”

यह प्रार्थना करने के बाद उन्हें अपने प्रयासों को बढ़ाने की सलाह दी गई और विदा लेते समय बाबा साहब ने उनसे कहा, "मैंने भारत की पवित्रता मौलाना निजामुद्दीन को सौंप दी है। और इस देश को उनके संरक्षण में छोड़ कर अपने व्यक्ति को उनका संरक्षक बना दिया है।"

बाबा फ़रीदुद्दीन ने उन्हें खिलाफ़त के कागज़ात देते हुए निर्देश दिया कि वे हांसी में मौलाना जमालुद्दीन को अपने कागज़ात दिखाएँ और दिल्ली में काज़ी मुंतक़ुद्दीन को कागज़ात दिखाएँ। हज़रत निज़ामुद्दीन बाबा फ़रीद से विदा होकर हांसी पहुँचे और मौलाना जमालुद्दीन को बाबा फ़रीद द्वारा दिए गए खिलाफ़त के कागज़ात दिखाए और वे इस बात से बहुत ख़ुश हुए। और इस अवसर पर उन्होंने मौलाना जमालुद्दीन को बाबा फ़रीद के द्वारा दिए गए खिलाफ़त के कागज़ात दिखाए।

ने खिलाफत की प्रशंसा में एक दोहा पढ़ा और उसका अर्थ और व्याख्या इस प्रकार है।

"कई हज़ार दारुद (आशीर्वाद) और कई हज़ार धन्यवाद कि उस व्यक्ति को हीरा दिया गया जो हीरे के मूल्य के बारे में जानता था।"

दिल्ली वापस लौटें। अजोधन से दिल्ली वापस लौटने पर, उन्हें कृपा और सुंदरता के अनुसार, पवित्र व्यक्तियों के सिंहासन पर बैठाया गया। और वे सही मार्ग के मार्गदर्शन के कार्य में लगे रहे। वे 30 वर्षों की अवधि के लिए अपने आध्यात्मिक गुरु से मिलने के लिए अजोधन गए, और उनकी मृत्यु के बाद, हजरत निजामुद्दीन ने सात बार बाबा फरीद की मजार की जियारत की।

हज़रत मुहम्मद साहब की सलाह पर दिल्ली वापस आकर उन्होंने अपना समय हज़रत मुहम्मद साहब की सलाह पर ...

निवास स्थान परिवर्तन: बस्ती में रहने के कारण लोगों की भीड़-भाड़ बहुत थी, जिससे अल्लाह की इबादत में खलल पड़ना संभव था। वह ऐसी जगह रहना चाहता था, जहाँ वह शांति और संतुष्टि के साथ अल्लाह की इबादत में लीन हो सके। वह इस बारे में सोच रहा था कि इस मामले में कहाँ जाकर रहना चाहिए। एक दिन वह एक ऐसे स्थान पर था, जहाँ वह एकांत में रहता था।

रानी रिजर्व के बगीचे में, और नमाज़ अदा करने के बाद, उन्होंने अल्लाह से निम्नलिखित प्रार्थना की।

"हे अल्लाह, मैं इस मामले में अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी स्थान पर नहीं रहना चाहता। मुझे उसी स्थान पर रख जो मेरे लिए उपयुक्त हो।" फिर भी, वह वहाँ व्यस्त था और उसने एक अदृश्य पुकार सुनी जिसमें कहा गया था, "आपका स्थान गियासपुर है।"

अल्लाह के हुक्म के मुताबिक हजरत निजामुद्दीन दिल्ली के ग्यासपुर में रहने लगे। ग्यासपुर एक छोटा सा गांव है। और कुछ समय बाद शहर के अमीर और धनी लोग और कुलीन लोग वहां आकर बसने लगे।

हज़रत ने ग़ियासपुर छोड़ने और शहर बदलने का फ़ैसला किया क्योंकि वहाँ लोगों की आवाजाही कम थी। संयोग से हज़रत की मुलाक़ात एक ख़ूबसूरत शख़्स से हुई। वह उसके पास बैठ गया और कविताएँ पढ़ने लगा। उसने हज़रत निज़ामुद्दीन की मौजूदगी में कहा, "उनकी क्या ताकत है? और वह इंसानों को अकेलेपन की तलाश में छोड़ कर।"

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने उनके इस फ़ैसले को नज़रअंदाज़ कर दिया और अब उन्होंने यह पक्का फ़ैसला कर लिया कि वे कभी कहीं नहीं जाएँगे और वे गियासपुर में ही रहेंगे। इस तरह उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी गियासपुर में गुज़ारी। ज़ियाउद्दीन वकील इमादुद्दीन ने वहाँ एक से बढ़कर एक शानदार इमारतें बनवाईं।

अंतिम दिन: हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में खाना-पीना बहुत कम कर दिया था और अपनी मृत्यु से 40 दिन पहले ही उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया था

पूरी तरह से। एक दिन उसे सूप दिया गया, लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया, और उसने कहा, "पैगंबर मोहम्मद किसके लिए इंतजार कर रहे हैं और उन्हें सांसारिक भोजन की क्या ज़रूरत है?"

हज़रत कई बार नमाज़ पढ़ते थे और पूछते थे कि मैंने नमाज़ पढ़ी है या नहीं? और कई बार अल्लाह के सामने सजदा करते थे और इस बात पर बहुत रोते थे। यह उनके होठों पर था, कोई शायरी का दोहा, और इसका मतलब है कि "हम जा रहे हैं, हम जा रहे हैं, हम जा रहे हैं।"

घर में कुछ भी नहीं बचा था, इसलिए उन्होंने इकबाल को आदेश दिया कि वह सारा अनाज भिखारियों में बांट दे।

अवशेषों का वितरण: जब दुनिया से जाने का समय आया तो उन्होंने हजरत गरीब को एक विशेष नमाज़ कालीन, पगड़ी और पोशाक दी। और उन्हें भारत के दक्षिण की ओर जाने की पहली अनुमति दी गई। एक पगड़ी, एक पोशाक और एक नमाज़ कालीन शेख याकूब को दिया गया और उन्हें गुजरात की ओर जाने के लिए कहा गया। उन्हें मौलाना शम्स यहिया के लिए भी एक पगड़ी, नमाज़ कालीन और पोशाक दी गई।

उस दिन हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ भी उनकी सेवा में मौजूद थे, लेकिन उन्हें कुछ नहीं दिया गया। इसलिए सभी इस बात से हैरान थे। हज़रत महबूब इलाही ने उन्हें बुधवार को बुलाया और उन्हें लाठी, नमाज़ का कालीन, माला, लकड़ी के चप्पल, क़िरक़ा (संत की पोशाक) और भी बहुत कुछ दिया।

उन्होंने बाबा फ़रीद गंज शकर के अन्य अवशेषों को भेंट किया और उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "आपको दिल्ली में रहना होगा और लोगों के उत्पीड़न और कठिनाइयों का सामना करना होगा।"

मृत्यु: वे चार महीने और कुछ दिन तक बीमार रहे। और 18 रब्बिल थानी को बुधवार के दिन सूर्योदय के समय इस दुनिया से चले गए। उनकी जनाज़ा की नमाज़ हज़रत रुकनुद्दीन मुलानी ने अदा की। जनाज़े का जुलूस निकाला गया और शेख सादी की शायरी गाई गई।

और जब वे निम्नलिखित दोहे पर पहुँचे

“ओह, दुनिया के तमाशे के दर्शक।”

और उस समय अंतिम संस्कार में आंदोलन शुरू हुआ था।

और जनाजे पर मातम और गम का माहौल था। ऐसे में मौलाना रुकनुद्दीन ने इस मामले में कोरस गाना बंद कर दिया है।

यह भी कहा जाता है कि उसके हाथ से अंतिम संस्कार की पोशाक उतार ली गई और उसने कहा, "मैं नहीं जाता।"

उनके पहले खलीफा हजरत नसीरुद्दीन चिराग दिल्ली ने उस समय उनसे कहा था, "सैय्यद का हाथ बीच में है।" और उसी समय हजरत महबूब इलाही का हाथ वापस खींच लिया गया। उनकी कब्र दिल्ली के गियासपुर में स्थित है, जिसे निजामुद्दीन के इलाके के रूप में जाना जाता है। उनकी वार्षिक पुण्यतिथि बहुत शानदार और बड़े पैमाने पर मनाई जाती थी।

उनके खलीफाओं का विवरण: उनके पहले खलीफा हजरत खाजा नासिर उद्दीन चिराग देहलवी हैं, जो उनके उत्तराधिकारी भी हैं।

अमीर खुसरो, मौलाना शमसुद्दीन मोहम्मद बिन यहैया, शेख कुतुबुद्दीन मुन्नवर, मौलाना फखरुद्दीन नादी, मौलाना हुसामुद्दीन मुल्तानी, खाजा अबुबकर मंदा, मौलाना शुहाबुद्दीन इमाम, अमीर बिन आला संजरी, मौलाना बुरहानुद्दीन ग़रीब, मौलाना वजीहुद्दीन यूसुफ काकाकादी उर्फ चंदारी, मौलाना अलाउद्दीन नेली, मौलाना फखरुद्दीन मारूजी, मौलाना फसीहुद्दीन, मौलाना करीमुद्दीन समरकंदी, खाजा मोइउद्दीन, मौलाना जियाउद्दीन बरनी, काजी मोहिउद्दीन काशानी।

उनकी जीवनी: हज़रत मुहम्मद साहब ने अपने पूरे जीवन काल में कोई विवाह नहीं किया और उन्होंने अपना पूरा जीवन अविवाहित व्यक्ति के रूप में बिताया।

अपने गुरु से उनका प्रेम: हज़रत अपने गुरु बाबा फ़रीद से बहुत प्रेम करते थे। उनकी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, आज्ञाकारिता और सदाशयता ही इस मामले में उनकी निष्ठा का कारण है। इसी कारण से हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर ने उन्हें इस मामले में बहुत-सी कृपाएँ प्रदान कीं। और उनकी ओर से अपने गुरु बाबा फ़रीद गंज शकर के प्रति उनकी ईमानदारी और आस्था में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती गई। और उनके धर्मगुरु हमेशा उनके बारे में कहा करते थे, "यह बेचारा मौलाना निज़ाम मेरे पास आया और उस दिन से उसकी ईमानदारी और आस्था में कोई बाधा नहीं आई।"

एक दिन उन्होंने कहा, “शिष्य और पुत्र के लिए, उसे निज़ाम की तरह सुप्रतिष्ठित होना चाहिए।”

उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु को लिखे पत्र में एक चौपाई लिखी है, और उस चौपाई से, जो उनके प्रेम, ईमानदारी और विश्वास के रूप में जानी जाती है। कुछ दिनों के बाद, वह अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में उपस्थित थे। और उन्होंने उनसे कहा कि वह उनके सामने उस चौपाई को सुनाए। जब उन्होंने उस चौपाई को पढ़ा, तो बाबा फ़रीद गंज शकर पर ऐसी स्थिति आ गई कि वह प्रेम और रुचि के कारण वहाँ नाचने लगे।

सुंदरता की गरिमा: जब एक पूर्ण पवित्र व्यक्ति कुतुबियत (सूफीवाद में, कुतुब संतों के पदानुक्रम का आध्यात्मिक नेता होता है और उसे एक पूर्ण मानव माना जाता है) के चरणों से गुजरता है। कुतुब सूफीवाद का केंद्रीय व्यक्ति है; ईश्वर से दिव्य संबंध और ज्ञान और एकांत को आगे बढ़ाने की क्षमता के साथ, वह सुंदरता की गरिमा (शान महबूबी) की अंतिम स्थिति तक पहुंच जाएगा, और वह अल्लाह के रहस्य की अभिव्यक्ति बन जाएगा। साथ ही इस मामले में उसकी इच्छा अल्लाह की इच्छा बन जाएगी।

हजरत निजामुद्दीन गौस (सहायक) की हैसियत से, गरिमामयी सुंदरता की हैसियत तक पहुंचे। उनकी कब्र से आज भी सुंदरता की गरिमा झलकती है। और उनसे ऐसी खुशबू आएगी, जो ऊद (अरबी में, 'ऊद' का शाब्दिक अर्थ 'लकड़ी' होता है) जैसी होगी, और इसकी व्युत्पत्ति पदार्थ के बनने के तरीके पर आधारित है। अपने शुद्धतम रूप में, ऊद एक प्राकृतिक राल है जिसे लकड़ी से निकाला जाता है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के मूल निवासी एक्विलरिया वृक्ष का हृदय-कक्ष - विशेष रूप से बांग्लादेश, इंडोनेशिया और थाईलैंड के वर्षावनों में पाया जाता है।)

गरीबी और भुखमरी: उनके जीवन का शुरुआती दौर गरीबी और अभाव की स्थिति में बीता। उस दौर में उनके पास एक चीतल सिक्का भी नहीं था। जिससे वह दो-तीन रोटी खरीद सकें।

विजय: यह एक दिन की घटना है कि उनके साथ राख-ए-जो (जौ का स्टू, जिसमें सेम और जड़ी-बूटियाँ हों) पक रही थी और अचानक एक फ़कीर आया जिसने अपने शरीर पर एक चीथड़े वाला कपड़ा पहना हुआ था। और उसने उससे कहा कि जो भी पका हो, उसे अपने साथ ले आओ। वह राख-ए-जो का एक बर्तन लाया, जो अभी भी पक रहा था और उबल रहा था। और फ़कीर ने बिना इंतज़ार किए राख-ए-जो खाना शुरू कर दिया। और फ़कीर ने खाते ही बर्तन को ज़मीन पर तोड़ दिया और कहा, "मौलाना निज़ाम की कृपा, जो आपको बाबा फ़रीदुद्दीन ने दी थी।"

और मैंने तुम्हारे प्रकट गरीबी के खाना पकाने के बर्तन को तोड़ दिया है।"

और उस दिन के बाद से, इतनी सारी जीतें हुईं, इतनी सारी जीतें आईं कि उन्हें गिनना और गिनना असंभव था। और उसके लिए चारों तरफ से जीत के द्वार खुल गए।

सार्वजनिक रसोईघर: बाबा फ़रीद की प्रार्थना थी कि "अल्लाह की कृपा से, उनकी सार्वजनिक रसोईघर में 70 मन नमक का उपयोग किया जाना चाहिए।"

उनके आध्यात्मिक गुरु की प्रार्थना स्वीकार हुई। उनकी रसोई में 70 मन नमक होता था। और प्याज और लहसुन के छिलकों से लदे 70 ऊँट, जो उनकी सार्वजनिक रसोई में मिलते थे।

संसार से घृणा: वह अपना जीवन संसार और संसार के लोगों से दूर बिताता था।

उदारता: उनकी उदारता की शर्त यह थी कि दिन में जो कुछ मिलेगा, उसी दिन शाम तक खर्च हो जाएगा। एक दिन गयासपुर में आग लग गई। बहुत से घर जल गए। इस बात से उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने सेवक इकबाल को आदेश दिया कि जिन लोगों के घर जल गए हैं, उन्हें दो बर्तन भोजन, दो पानी की बोतलें और दो सोने के सिक्के दिए जाएं और खाजा इकबाल ने इस आदेश के अनुसार काम किया। और उनकी तरफ से लोगों का पालन-पोषण किया जाएगा। और उनकी तरफ से छात्रों और कुरान-पढ़ने वालों की मदद की जाएगी। उनकी उदारता और उदारता पर राजाओं को आश्चर्य हुआ।

पसंद करना

समा

(समा (तुर्की: सेमा; फ़ारसी, उर्दू और फ़ारसी: ________

, रोमनकृत: समा) एक सूफी समारोह है जो ध्यान और प्रार्थना अभ्यास धिक्र के भाग के रूप में किया जाता है। समा का अर्थ है "सुनना", जबकि धिक्र का अर्थ है "स्मरण।" इन प्रदर्शनों में अक्सर गायन, वाद्ययंत्र बजाना, नृत्य, कविता और प्रार्थनाओं का पाठ, प्रतीकात्मक पोशाक पहनना और अन्य अनुष्ठान शामिल होते हैं। समा सूफीवाद में पूजा का एक विशेष रूप से लोकप्रिय रूप है।) उन्हें समा सुनने का बहुत शौक है। एक बार की बात है कि वे एक जगह से गुजर रहे थे, और एक व्यक्ति कुएँ से पानी ले रहा था, और कुएँ पर पानी का पहिया था।

और वह अपने दोस्त से कह रहा था, “बाहर आओ, अरे भाई, बाहर आओ।”

जब हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने ये शब्द सुने तो उन पर ग़ुस्सा छा गया और जो लोग उनके साथ थे वे भी ये शब्द पढ़ रहे थे।

महानता और पवित्रता: हज़रत निज़ामुद्दीन के साथ, पैगंबर ने उन्हें अपने सपने में कहा, "आप फ़कीर और गरीबों के आसमान हैं।" एक बार ख़ाजा ख़िजर ने मौलाना वजीहुद्दीन पैली की मुश्किल को हल कर दिया था, और मौलाना ने उनसे पूछा था कि अगर मेरे सामने कोई समस्या होगी, तो क्या मैं आपसे मिल सकता हूँ। उन्होंने जवाब दिया है, ख़ाजा निज़ामुद्दीन औलिया के रसोईघर में, वह वहाँ मिल जाएगा।

एक दिन खाजा मोइनद्दीन की अदृश्य व्यक्तियों के साथ बैठक हुई और उनमें से एक ने उससे कहा, "अरे खाजा, तुमने दुनिया के सभी शहरों में हंगामा मचा रखा है।

और यह सुनकर खाजा साहब ने आश्चर्य से उससे कहा, “क्या मैंने ऐसा किया।”

*और अब्दाल ने कहा, “नहीं।” फिर उसने पूछा, “क्या कुतुबुद्दीन है?” और अब्दाल ने उससे कहा, “नहीं।” फिर उसने पूछा, “क्या बाबा फ़रीद है?” और अब्दाल ने उससे कहा, “नहीं। फिर उसने पूछा, “क्या निज़ामुद्दीन है?” तो अब्दाल ने कहा, “हाँ।” खाजा साहब ने उससे कहा कि वह मेरे साथ चौथी कक्षा में है। और अब्दाल (ईश्वर द्वारा चुने गए देवताओं की एक ज्ञात संख्या जो हमेशा दुनिया में निवास करते हैं; ऐसा कहा जाता है कि जब उनमें से एक मर जाता है, तो ईश्वर उनकी संख्या को समान रखने के लिए दूसरे को नियुक्त करता है, यानी सात या सत्तर)।

पूजा: वह अपने कमरे में अकेला रहता था, और किसी को भी उसके अंदर आने की इजाज़त नहीं थी। और रात को कमरे का दरवाज़ा बंद रहता था। सुबह के समय उसकी आँखें नशे में और चमकीली हालत में दिखाई देती थीं। दिन में उसकी आँखों को पढ़ा जाता था।

ज्ञान का शौक: उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु की मुलाकात का विवरण पुस्तक में लिखा है। और उन्होंने पुस्तक का नाम "राहत अल-कुलूब" रखा है। और उस पुस्तक में उन्होंने बाबा फ़रीद गंज शकर के प्रवचनों और उपदेशों का आशीर्वाद लिखा है। और यह पुस्तक फ़ारसी में प्रकाशित हुई थी, और इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद मोहम्मद अब्दुल हफ़ीज़ (स्वयं) द्वारा किया गया था, जो इस पुस्तक '22 पवित्र व्यक्ति दिल्ली में' का अंग्रेजी में अनुवाद भी कर रहे हैं।

उनकी शिक्षाएँ अल्लाह के रहस्यों के गीत हैं। ये ऐसे रत्न हैं जो दुर्लभ हैं। आगे उनकी बैठकों के कुछ विवरण इस प्रकार हैं:

1. संसार को छोड़ना: क्योंकि इसके लिए उच्च स्तर का साहस होना चाहिए और संसार की गंदगी में शामिल नहीं होना चाहिए। और लालच और वासना को छोड़ना चाहिए।

2. दूसरी बैठक में उन्होंने कहा, "यदि कोई व्यक्ति दिन में उपवास रखता है और वह रात्रि में नमाज़ पढ़ता है, और भले ही वह हाजी हो, तो मूल नियम यह है कि उसके दिल में दुनिया के लिए कोई प्यार नहीं होना चाहिए।

क़ुरआन पढ़ना: पाठक को आयत से कुछ शांति और आराम मिलेगा, इसलिए उसे इसे कई बार पढ़ना होगा। पढ़ने और समा में, खुशी की स्थिति मिलेगी, जो तीन स्रोतों से प्रबल होती है, और विवरण इस प्रकार हैं: 1. रोशनी 2.

शर्तें 3. निशानियाँ, और जो मालिक (फ़रिश्ते) की दुनिया से भेजी जाती हैं। 2. मलकूत (प्रभुत्व) 3. जबरूत (स्वर्ग)। और वे स्थान जहाँ आत्माएँ, हृदय और अंग गिरते हैं। और आत्माओं पर मलकूत से रोशनी, दिलों पर जबरूत से स्थितियाँ और अंगों पर मालिक से निशानियाँ।

दान: दान के लिए उन्होंने कहा, "जब दान में पाँच शर्तें होंगी, तब वह स्वीकार किया जाएगा। और उसमें दो देने से पहले। और दो देने के समय। और एक उसके बाद। देने से पहले की दो शर्तें हैं कि

जो कुछ भी दिया जाएगा वह वैध स्रोत से होगा और उसे ऐसे नेक व्यक्ति को दिया जाना चाहिए जो बुरे कामों में खर्च नहीं करेगा।

दान देते समय दो शर्तें हैं - नम्रता और प्रसन्नता। तथा दूसरों से छिपते रहना। अंतिम शर्त है - दान देने वाले को याद न रखना और उसका नाम न भूलना।

धैर्य और सहनशीलता: धैर्य और सहनशीलता के लिए उन्होंने कहा, "जब यह मामला इसके खिलाफ व्यक्ति तक पहुंचेगा, तो उसे शिकायत दर्ज नहीं करनी चाहिए।" अनुमोदन का अर्थ यह है कि कठिनाई से उसे इस मामले में बेचैनी महसूस नहीं होनी चाहिए, और यह महसूस होना चाहिए कि उसके साथ कोई समस्या नहीं थी।

विश्वास: विश्वास के लिए, उन्होंने कहा, "विश्वास की 3 डिग्री होती हैं। दावे के मामले में, किसी वकील की सेवा न लें, भले ही वह व्यक्ति उसका मित्र ही क्यों न हो। और एक विद्वान व्यक्ति के रूप में, तब शिकायतकर्ता इस मामले में स्वतंत्र होगा। और वह कहेगा कि मेरे पास ऐसे वकील की सेवा है जो अपने दावों में बुद्धिमान है। और वह मेरा मित्र है। और इस मामले में विश्वास भी होगा और सवाल भी। और यह विश्वास की पहली डिग्री, जिसमें विश्वास भी है और सवाल भी। विश्वास की दूसरी डिग्री है एक दूध पीने वाला लड़का और जिसकी माँ उसे दूध पिला रही है।

इससे विश्वास होगा और यह उनका सवाल नहीं होगा। लड़का यह नहीं कहेगा कि मुझे ऐसे-ऐसे समय पर दूध दो। और वह इस मामले में केवल रोता है, लेकिन वह माँग नहीं करेगा। और उसने यह नहीं कहा

मुझे दूध पिलाने के लिए। और उसके हृदय में दया और विश्वास का हृदय होगा।

विश्वास की तीसरी डिग्री उस शव-समाधि लेने वाले के हाथों की तरह है जिसका काम सिर्फ़ लाश को धोने या शव-स्नान देने तक सीमित है और उसके लिए मृतक न तो हिलेगा और न ही उससे कोई सवाल करेगा। शव-स्नान देने वाले की इच्छा के अनुसार उसे हिलाएँ-डुलाएँ और नहलाएँ।

यह डिग्री उच्च-स्तरीय स्थिति है।

आज्ञाकारिता के प्रकार: उन्होंने कहा कि आज्ञाकारिता अनिवार्य है, और यह अनिवार्य है कि इसका लाभ इसके अनुयायी के व्यक्तित्व तक पहुंचे। और ये हैं नमाज़, रोज़ा, हज, दारुद (आशीर्वाद), और तस्बीह (मोती)।

मुतादी वह आज्ञाकारिता है जिससे दूसरे व्यक्तियों को लाभ होता है।
एकता और कठिनाई, दूसरे के पक्ष में करना; इसको मुतादी कहते हैं और इसका सवाब इस मामले में ऐसा है। अनिवार्य आज्ञाकारिता में नीयत का होना ज़रूरी है। ताकि उसे स्वीकार किया जा सके। लेकिन यह मुतादी आज्ञाकारिता है, जो किसी भी तरह से की जाए और जिसमें नमाज़ का तरीक़ा हो। नमाज़ पढ़ते समय गुनाहों का ख़याल न आए। साथ ही इबादत और आज्ञाकारिता के लिए, जो की जाती है और अगर इस तरह से की जाए, तो इस मामले में आश्चर्य की बात होगी कि नमाज़ स्वीकार नहीं होगी।

अगर गुनाह का ख्याल रहेगा तो नमाज़ क़बूल होने में आलस्य रहेगा। इसलिए उस वक़्त अल्लाह की रहमत पर नज़र रखनी चाहिए। और यक़ीन रखना चाहिए कि दुआ अल्लाह ज़रूर क़बूल करेगा। कहा भी गया है

छाती के स्तर पर दोनों हाथ खोलना। और यह भी सूचना है कि दोनों हाथ ऊपरी स्तर पर बंद होने चाहिए। इसे ऐसे चेहरे की तरह बनाना चाहिए जिससे पता चले कि कुछ मिलेगा।

संपूर्ण ईमान: उन्होंने कहा कि "अल्लाह पर ईमान होना चाहिए।" और उसके अलावा किसी और पर ईमान नहीं होना चाहिए। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि "किसी व्यक्ति का ईमान तब तक पूरा नहीं होगा जब तक कि उसकी नज़र में सभी सृष्टियाँ मच्छरों से भी कम वास्तविकता न हों।"

वास्तविकता से जुड़ाव: वास्तविकता से जुड़ाव के बारे में उन्होंने कहा कि "वास्तविक कार्य वास्तविकता का स्मरण है, और इसके अलावा, अन्य सभी वास्तविकता के स्मरण में हस्तक्षेप हैं।"

भोजन के प्रकार : संतों के अनुसार भोजन चार प्रकार का होता है। १. भोजन मज़्मोन २.

भाग्य का पदार्थ ३. मामेलोक का भरण-पोषण ४.
मॉड का निर्वाह.

मज़्नून का रोज़गार वह है जो खाने-पीने और आमदनी से जुड़ा है। इस रोज़गार की गारंटी अल्लाह की तरफ़ से है। किस्मत का रोज़गार, जो अल्लाह ने हमेशा के लिए लिख दिया है और जो उसके नसीब का हिस्सा है। और जो आसमान में तख्ती में पाया जाता है। ममलोक का रोज़गार वह है जिसे जमा किया जा सके, जैसे रुपया, कपड़ा और संसाधन। और मौद का माल वह है जिसका वादा अल्लाह ने अपने पवित्र लोगों से किया है।

सब्र के बारे में: तहमल के लिए उन्होंने कहा, "इन लोगों से तीन तरह से व्यवहार किया जाता है।" पहला, उन लोगों से दूसरों को कोई लाभ या हानि नहीं होगी। और ऐसे लोग गमादत (निर्जीव चीजों) की श्रेणी में आते हैं।

दूसरी श्रेणी में उनसे कोई लाभ या हानि नहीं होगी।

तीसरी श्रेणी के लोग इन दोनों से बेहतर हैं। इसका मतलब है कि वे लोग दूसरों को लाभ पहुँचाएँगे। और अगर दूसरे लोगों से उन्हें नुकसान होगा, तो वे बदला नहीं लेंगे, बल्कि इस मामले में सहन करेंगे, जो कि सच्चे लोगों का काम है।

समा की सभा : उन्होंने कहा कि जब कुछ उपलब्ध होगा, तब समा सुनना जायज होगा। समा व्यक्ति के गायन को मस्मू कहते हैं। और जो वयस्क पुरुष होना चाहिए, न कि लड़का या महिला, और समा के वाद्य होने चाहिए। गायक को मस्मू के लिए व्यर्थ नहीं गाना चाहिए, जो श्रोता हो और वास्तविकता से प्रेम करने वाला हो, और उसके साथ मिथ्या विचार नहीं होगा। और समा के वाद्य हैं चुंग। ((मशीन या इंजन के बारे में उपयोग किया जाता है) जब वह काम कर रही हो या धीरे-धीरे चल रही हो, तो छोटी, बार-बार आवाज करने के लिए। और रबाब (रुबाब, रोबाब, या रबाब एक वीणा जैसा संगीत वाद्य है), आदि, जो समा सभा में नहीं होने चाहिए; तब ऐसी सभा वैध कहलाएगी।

फिर उन्होंने कहा, "समा एक उपयुक्त वाणी है।" तो यह अवैध कैसे होगा। साथ ही इसमें हृदय की गति भी होगी। और यदि वह गति वास्तविकता के स्मरण के लिए है, तो वह वांछनीय कहलाएगी, और यदि बुरी सोच है, तो वह अवैध होगी।

कहावतें: उनकी कुछ कहावतें इस प्रकार हैं:.

1. वास्तविक बुद्धिमत्ता संसार को छोड़ देना है।

2.दरवेश को सुखद घटनाओं से खुशी महसूस नहीं करनी चाहिए और दुखद घटनाओं से दुख महसूस नहीं करना चाहिए।

3. जब पेट भर जाएगा तो फिर और खाना नहीं होगा, लेकिन दो लोगों के लिए यह जायज़ होगा कि जिसके घर में मेज़बान हो, उसकी खातिर और उसके साथ मिलकर वह भी कुछ खा ले और दूसरे लोग जो रोज़ा रखेंगे और उन्हें लगता है कि शायद सहर (रमज़ान या दूसरे रोज़े के दिनों में सुबह होने से पहले खाया जाने वाला खाना) के वक़्त खाने का समय नहीं मिलेगा।

4.जब मनुष्य ज्ञान सीखेगा, तब उसे उत्कृष्टता प्राप्त होगी। और जब वह आज्ञा का पालन करेगा, तब उसके कार्य में उन्नति होगी। इस अवसर पर गुरु को चाहिए कि वह दोनों को तोड़ दे; अर्थात उसकी दृष्टि से ज्ञान और कर्म को गिरा दे, ताकि वह आत्म-प्रशंसा करने वाला व्यक्ति बन सके।

5.निम्नलिखित समय पर दया का पतन होगा।

समा के समय और आज्ञापालन के लिए शक्ति प्राप्त करने के इरादे से भोजन करना। उस समय, दरवेश लोगों का विवरण उल्लेख करना।

6.जब सालिक (सूफी) साधक (रहस्यवादी मार्ग का) होगा जो प्रतिज्ञा के सही मार्ग पर होगा, तो उसकी प्रतिज्ञा से पहले जो कुछ उसने किया है उसके लिए कोई जवाबदेही नहीं होगी।

7. व्यवहार के समय ऐसी बातचीत नहीं करनी चाहिए जिससे गर्दन की नसें उभरने लगें, अर्थात भेद-भाव और क्रोध के लक्षण नहीं होने चाहिए।

8.सभी व्यक्तियों की क्रूरता सहनी चाहिए, लेकिन बदला लेने की मंशा नहीं होनी चाहिए।

9. जिस ज्ञान में उसे विवेक और प्रेम मिलेगा, वह आध्यात्मिक गुरु की खिलाफत के लिए योग्य है।

10.बुद्धि पर पवित्र लोगों का अत्यधिक प्रेम होगा।

11.जिस व्यक्ति का स्वभाव हल्का होता है वह क्रोधी होता है
जल्द ही।

दैनिक पाठ: उन्होंने कहा है कि विपत्ति से पहले प्रार्थना पढ़ना आवश्यक है।

आमतौर पर सुबह-सुबह की गई दुआएं अल्लाह द्वारा स्वीकार की जाती हैं और यह समय दुआओं के लिए अच्छा होता है।

हजरत बाबा गंज शकर ने उनसे कहा कि इस समय विलाप और रोना नमाज के लिए अच्छा है, क्योंकि इस समय दुआएं अवश्य स्वीकार होती हैं।

हजरत निजामुद्दीन ने कहा कि बांह पर ताबीज बांधना अच्छा है।
और गले में लटकाना नहीं चाहिए, और अल्लाह के रसूल को इस मामले में मना किया गया है। कुछ तिलावत और वज़िफ़ (दोहरा मंत्र) इस प्रकार हैं।

समस्याओं के समाधान के लिए: हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने कहा है, "जब कोई समस्या हो, तो महीने की 15 तारीख की रात को वुज़ू करके क़िबला की तरफ बैठें और 19 बार "वल्लाहु मुस्तान" पढ़ें।"

बिना संसाधनों के सुखी जीवन बिताने के लिए: निम्नलिखित प्रार्थना को 100 बार पढ़ना चाहिए।

“ला इलाहा इल्लाहु वहदाहु ला शरीका लहू लाहुल मुल्क वलाहुल हम्द वुहाहुल हमद वहहुआ अला कुल्ली शैन कादिर।”

खोई हुई चीजें ढूंढने के लिए: हजरत कहते थे कि खोई हुई चीजें ढूंढने के लिए निम्नलिखित दुआ पढ़ो।

“या जमियानस अल्यौमा लारइबजामा अलया सनलाति।”

दुनिया और परलोक की इच्छाओं और कामनाओं के लिए हज़रत ने उन्हें निम्नलिखित दुआ को सजदे में कई बार पढ़ने का आदेश दिया।

“अल्लाहुमा एन्ना नस्ताफकु बी उम याहिया इब्न ज़िकेरिया या मालिक यम एल्दीन बा हक इका नबुदु यायाका नस्तैन।”

शत्रु पर विजय पाने के लिए शत्रु का सामना करते हुए निम्नलिखित नामों का उच्चारण करने को कहा।

"या सौबू, या कुद्दूस, या गफूर, या वदूद।"

बीमारी से मुक्ति के लिए: उन्होंने कहा कि प्रत्येक बीमारी से मुक्ति के लिए इसे लिखकर हाथ पर बांधना अच्छा होता है।

"अल्लाहु शफ़ी, अल्लाहु काफ़ी, अल्लाहु नफ़ी।"

इच्छा और कामनाओं की पूर्ति के लिए: हज़रत महबूब इलाही ने कहा कि इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति के लिए निम्नलिखित प्रार्थना अधिक प्रभावी है।

“या हय्यु या हलीम, या अज़ीज़, या करीम बकन कर सब रह सलीम बा हक एय्याका नबुदु एय्याका नास्तिन।”

रोजी में बढ़ोतरी: हजरत निजामुद्दीन औलिया ने रोजी में बढ़ोतरी के लिए रात के समय जुमा की आयत पढ़ने को कहा है। साथ ही 3 या 7 बार या 21 बार “वल्लाहु खिरुर रजीकिन” भी पढ़ें। अगर आप रोज जुमा की आयत पढ़ते हैं, तो इसे शुक्रवार की रात को पढ़ना जरूरी है। उन्होंने रोजी में बढ़ोतरी के लिए सुबह के समय 100 बार “लाहुल बिल्ला कुवता इल्लबिल्ला अलीउल अजीम” पढ़ने को कहा है।

मसुरा की नमाज़: उन्होंने कहा कि अगर किसी भी तरह से दुख और शोक से राहत नहीं मिलती है, तो इसे शुक्रवार को असर से मगरिब की नमाज़ तक पढ़ने के लिए निम्नलिखित तीन बातें पढ़ें
names.

"या अल्लाह, या रहमान, या रहीम।"

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रहस्योद्घाटन और चमत्कारों की शख्सियत थे। लेकिन इन चीज़ों के लिए उनके नज़रिए में कोई मूल्य नहीं था। वे कहते थे कि रहस्योद्घाटन और चमत्कार रास्ते में पर्दा हैं। प्रेम में, काम निर्माण से होता है। इसलिए इस मामले में बेबस रहो। ताकि इस मामले में असली लक्ष्य प्राप्त हो सके। चमत्कार दिखाने के लिए पवित्रता या धर्मपरायणता का कोई संकेत नहीं है। इसलिए रहस्य बनाए रखो; यह इस मामले में छिपा हुआ है और इसके लिए उच्च श्रेणी के साहस की आवश्यकता है।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने कहा है कि "रहस्यवादी मार्ग के 100 दर्जे हैं। और वह्यत और उसके चमत्कारों में से सातवीं दर्जे का दर्जा है। और सालिक (विद्यार्थी) जो इस मामले में रह चुका है, जो इस मामले में आगे नहीं जाएगा।

हज़रत ने कहा कि अलौकिक आदतें चार प्रकार की होती हैं।

1. भविष्यवक्ताओं द्वारा चमत्कार घटित हुए।
2. पवित्र व्यक्ति में अलौकिक आदतें घटित होती हैं।
3. मौअनत (मदद) जब कुछ ऐसे लोगों द्वारा आदत के विरुद्ध कोई बात की जाती है जिनके पास ज्ञान और ज्ञान नहीं है।

मज्जूब (निडर) निष्काम व्यक्ति और पागल व्यक्तियों द्वारा।

4.वृद्धि: जब कोई ऐसी बात हो जो आदत के विरुद्ध हो और जिसमें विश्वास न हो। और जिसे वृद्धि कहते हैं।

हजरत निजामुद्दीन औलिया ने कहा है कि चमत्कार से तीन चीजें होंगी।

1.शिक्षा के बिना ज्ञान नहीं और शिक्षा के बिना मनुष्य विद्वान नहीं बन सकता।

2. पवित्र व्यक्ति ऐसी चीजें देखेंगे जो सामान्य व्यक्ति अपने सपनों में देखते हैं।

3. जैसे सामान्य व्यक्तियों के विचार, उन पर प्रभाव डालेंगे, उसी प्रकार पवित्र व्यक्ति के विचार, सामान्य व्यक्तियों पर प्रभाव डालेंगे।

उनके कुछ चमत्कारों का विवरण इस प्रकार है।

1. एक बार काजी मोहिद्दुन काशानी बहुत बीमार थे और ऐसा लग रहा था कि उनके ठीक होने की कोई संभावना नहीं है। जब हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया उनसे मिलने गए और उस समय वे मरने वाले थे और हज़रत के चरणों की कृपा से वे ठीक हो गए और इस मामले में उनकी सेहत में पूरी तरह सुधार आ गया। वे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का अपने घर में स्वागत करने के लिए खड़े हो गए।

उनकी दरगाह में एक खुदा हुआ कुआं था, लेकिन उसमें खट्टा पानी पाया गया। एक दिन वे समा की बैठक में उपस्थित थे। और उन्होंने अपने सेवक इकबाल से कागज, कलम और स्याही लाने को कहा। हजरत ने कागज पर कुछ लिखा और इकबाल से कहा कि कागज कुएं में डाल दो। कागज कुएं में डालने पर पानी मीठा हो गया।

उनके एक शिष्य मौलाना बदरुद्दीन ने एक रात में एक ऊँट को अपनी चौखट पर देखा था। वे ऊँट पर बैठे थे और वह ऊँट हवा में उड़कर चला गया। रात के आखिरी पहर में एक ऊँट फिर वहाँ आया और हज़रत ऊँट से उतरकर दरगाह की इमारत में चले गए।

उनके शिष्यों के मन में विचार आया कि यदि हज़रत अपना पीने का पानी उसे दे दें तो इस मामले में यह उनका चमत्कार माना जाएगा। हज़रत को शिष्य की इस बात का खतरा समझ में आ गया और उन्होंने अपना पीने का पानी उसे दे दिया।

राजा का विचित्र प्रसंग: दिल्ली का राजा गयासुद्दीन तुगलक, जो हजरत निजामुद्दीन औलिया के सामने कुछ नहीं बोलता था। लेकिन उसके दिल में गंदगी थी। एक बार वह दिल्ली से बंगाल गया। और उसने हजरत निजामुद्दीन औलिया को संदेश भेजा कि वह दिल्ली से चले जाएं। और उसके बाद भी वह गयासपुर से चले जाएं। उस समय वह इस मामले में कुछ दुखी हुआ और उसने कहा, "हनूज दिल्ली दूर

अस्त," एक फ़ारसी मुहावरा है जिसका मतलब है "दिल्ली अभी भी दूर है।" यह सूफ़ी संत निज़ामुद्दीन औलिया से जुड़ा है, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने इसे सुल्तान गियासुद्दीन से कहा था। इस मुहावरे का इस्तेमाल दूर के खतरों के बारे में बेपरवाही का भाव व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

आखिर में ऐसा हुआ कि फिर भी वह दिल्ली नहीं पहुंच पाया और उसके ऊपर तुगलकाबाद का गिरा हुआ महल आ गिरा और उसकी मौत हो गई। वह अपनी किस्मत के मुताबिक दिल्ली नहीं पहुंच पाया। अब तक लोग इस मामले में एक कहावत की तरह इस्तेमाल करते हैं: "दिल्ली अभी दूर है।"

6.हजरत नसीरुद्दीन महमूद चिराग देहलवी

हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चिराग देहलवी चिश्ती सूफी सिलसिले के चमकते हुए चिराग हैं। और वे हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के उत्तराधिकारी हैं। वे एक बहादुर व्यक्ति हैं

इस्लाम धर्म के क्षेत्र में वह एक महान व्यक्ति हैं। और वह इस क्षेत्र में आस्था रखने वाले व्यक्ति हैं।

पारिवारिक परिस्थितियाँ: उनके मुख्य पूर्वज हजरत शेख अब्दुल लतीफ नैरवी थे, जो खुरासान के निवासी थे। और वे खुरासान से ही लाहौर आये थे। उनके बेटे लाहौर का निवास छोड़कर भारत के अवध क्षेत्र में पहुँचे।

माता-पिता: उनके पिता शेख याहियाह और उनकी माँ अवध में रहते थे। उनके पिता एक सूफी थे। उनकी माँ एक धर्मपरायण महिला थीं। और वह अपना ज़्यादातर समय इबादत में बिताती थीं। और वह अपने समय की महिला राबिया की तरह थीं। उनके पिता एक अमीर व्यक्ति थे और बाज़ार में पश्मीना (ऊन जैसी मुलायम सामग्री का एक लंबा टुकड़ा जिसे महिलाएँ अपने कंधों पर पहनती हैं) बेचा करते थे, और उनके साथ दास भी थे।

उनकी मां का वंशावली रिकॉर्ड: उनकी मां का वंशावली रिकॉर्ड इस प्रकार है:.

शेख नासिर महमूद बिन शेख याहिया बिन अब्दुल लतीफ बिन यूसुफ बिन अब्दुल रशीद बिन सुलेमान बिन शेख अहमद बिन शेख मोहम्मद बिन शेख शुआबुद्दीन बिन शेख सुल्तान बिन शेख इशाक बिन शेख मसूद बिन शेख अब्दुल्ला बिन हजरत वाइज असगर बिन वाइज अकबर बिन इशाक बिन सुल्तान इब्राहिम बिन अधम बलाकी बिन शेख सुलेमान बिन शेख नासिर बिन हजरत अब्दुल्ला बिन हजरत उमर बिन क़त्ताब।

जन्म स्थान: उनका जन्म अवध में हुआ था।

उसका नाम नसीरुद्दीन है।

उपनाम: उनका शीर्षक महमूद है।

उपाधि: उनकी उपाधि चिराग देहलवी है। उन्हें चिराग देहलवी कहने के कुछ कारण हैं। जब मकदूम जहानियन जहान गास्त मक्का गए और वहां उनकी मुलाकात इमाम याफी से हुई, तो उनकी बातचीत में दिल्ली के पवित्र व्यक्तियों के बारे में चर्चा हुई।

हज़रत याफ़ई ने उनसे कहा कि दिल्ली में पहले बहुत से पवित्र व्यक्ति थे और सभी दुनिया से चले गए। तब इमाम याफ़ई ने कहा कि "अब नासिर अवधी दिल्ली का चिराग है और वहाँ कौन बचा है।"

हज़रत मकदूम जहानियां जहां गैस्ट सैयद जलाल कुछ दिनों के बाद मक्का से वापस लौटे और हज़रत नासिर उद्दीन चिराग देहलवी के हाथों उनकी हज़रत निजामत की गई और उसके बाद उनकी खिलाफत से उन्हें आशीर्वाद मिला।

हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी को बुलाने का दूसरा कारण यह है कि "एक बार दरवेश लोग यात्रा और पर्यटन के लिए दिल्ली आए। उनकी मुलाक़ात हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से हुई। और वे दरवेश लोग हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की मौजूदगी में बैठे थे। संयोग से हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ देहलवी हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की मौजूदगी में आए। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने उनसे पूछा

वहाँ बैठने के लिए। लेकिन उन्होंने उससे कहा कि "दरवेश लोगों के लिए उसका एक पिछला हिस्सा होगा। हज़रत निज़ामुद्दीन ने कहा, "दीपक का कोई चेहरा या पिछला हिस्सा नहीं होगा।" वह अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेश के अनुसार बैठ गया था। उसका आगे और पीछे दोनों तरफ बराबर और एक ही है। जैसा कि वह सामने की तरफ से और पीछे की तरफ से भी देख सकता है। और उसी से, वह 'चराग देहलवी' की उपाधि से प्रसिद्ध और प्रसिद्ध हो गया।

तीसरी वजह यह है कि एक बार एक बादशाह जो उनसे दुश्मनी रखता था और जो उनकी हुकूमत और ताकत को पसंद नहीं करता था, उसने हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के उर्स के समय दरगाह की इमारत के लिए तेल की सप्लाई बंद कर दी थी। हज़रत चिराग़ देहलवी को हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने इस घटना के बारे में बताया। उनसे पूछा गया, “कुएँ की खुदाई के दौरान क्या उसमें से पानी निकला था?” हज़रत नसीरुद्दीन ने कहा, “हाँ, साहब।” हज़रत नसीरुद्दीन औलिया ने उन्हें आदेश दिया, “इसे चिराग़ों में भर दो और चिराग़ों को रोशन करो।”

इस प्रकार सभी चिराग तेल से नहीं बल्कि पानी से रोशन हो गए। हजरत नसीरुद्दीन महमूद पूरी दुनिया में चिराग देहलवी की उपाधि से प्रसिद्ध और मशहूर हो गए।

बचपन में सदमा: जब वे नौ वर्ष के थे, तब उनके पिता इस नश्वर संसार को छोड़कर चले गये।

शिक्षा और प्रशिक्षण: पिता की मृत्यु के बाद उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण का भार उनकी माँ पर पड़ा और उन्होंने इस जिम्मेदारी को अच्छे तरीके से निभाया। उन्होंने इस मामले में अपनी पूरी जिम्मेदारी महसूस की। उन्होंने अच्छे प्रयास किए। उन्हें मौलाना अब्दुल करीम शेरवानी के हवाले कर दिया गया। उन्होंने जल्द ही प्रकट ज्ञान पूरा कर लिया। 20 साल की उम्र में उन्होंने सारा ज्ञान प्राप्त कर लिया और अपने प्रयास बंद कर दिए।

दरवेश व्यक्तियों की संगति: अपने जीवन के आरम्भ से ही वे आत्मा के प्रयासों में लगे रहते थे।
वह एक दरवेश के साथ रहने लगा। और दरवेश शहर से दूर एक जंगल इलाके में रहता था।
उसे संसार की कोई चिंता नहीं थी और वह घास और पत्ते खाकर अपना जीवन यापन करता था।

दिल्ली आगमन: 43 वर्ष की आयु में वे दिल्ली पहुंचे और दिल्ली पहुंचकर वे हजरत निजामुद्दीन औलिया के समक्ष गए तथा लम्बे समय तक उनकी सेवा में रहे।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने उन्हें प्रतिज्ञा प्रदान की और उसके बाद उन्हें संत की पोशाक प्रदान की गई। उन पर उनके आध्यात्मिक गुरु की विशेष कृपा और कृपा थी। और उन्हें किसने अपना संरक्षक और उत्तराधिकारी बनाया? बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर से उन्हें जो भी अवशेष मिले, उन्हें उन्हें दे दिया गया। और उन्हें उन अवशेषों को रखने की सलाह दी जो उनके पास थे।

उसने भी इसे वैसे ही रखा है जैसे मसीह के पवित्र संतों ने आदर और सम्मान के साथ रखा है।

खिलाफत के बारे में उनका विवरण 18 स्रोतों में पवित्र व्यक्तियों के इमाम हजरत अली से जुड़ा हुआ है।

एक घटना: हज़रत ज़िकेरिया मुलानी के मुरीद मोहम्मद गजरौनी एक बार हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के हुज़ूर में आए और एक रात दरगाह की इमारत में ठहरे। जब तहजुद की नमाज़ पढ़ी तो उन्होंने कम्बल उतार दिया और उसे एक जगह रखकर वजू करने चले गए। वजू करके जब वापस आए तो उन्होंने कम्बल अपनी जगह पर नहीं पाया तो उन्होंने नौकर को नाराज़गी भरी बातें कहनी शुरू कर दीं।

हज़रत चिराग़ देहलवी इबादत में मशगूल थे और जब उन्होंने यह गुफ़्तगू सुनी तो खड़े होकर अपना कम्बल उसे दे दिया और इस तरह यह मामला ख़त्म किया।

किसी ने यह घटना हजरत निजामुद्दीन औलिया को बताई, जिन्होंने उन्हें पहली मंजिल पर बुलाया और उन्हें उनका विशेष कंबल दिया गया तथा उनकी सलामती की दुआ मांगी।

और उसे दोनों लोकों के लिए आशीर्वाद दिया गया।

गुरु की मौजूदगी में निवेदन: आदर की खातिर और इस कारण से कि अमीर खुरसरो, जो हजरत निजामुद्दीन औलिया की मौजूदगी में विशेष निकटता रखते हैं और अमीर खुरसरो, जो किसी भी समय उनकी मौजूदगी में पहुंच सकते हैं। वह उन्हें नहीं बता सकते थे, लेकिन उन्हें अमीर खुसो ने अपने गुरु की मौजूदगी में अपना संदेश दिया था। कि शहर में रहने से,

सगाई और पूजा में व्यवधान होगा। क्योंकि लोगों का आना-जाना लगा रहेगा।

यदि रेगिस्तान या पहाड़ी क्षेत्र में जाने और रहने की अनुमति होगी। और शांति और संतुष्टि के साथ पूजा में संलग्न होंगे।

हज़रत अमीर ख़ुर्रों ने निज़ामुद्दीन औलिया से कहा और इस तरह जवाब दिया: "उनसे कहो कि शहर में ही रहें। और इस मामले में इंसानों के जुल्म और हिंसा का सामना करें, और इसके बदले में उन्हें बेवफ़ाई और एहसान दें।"

प्रयास। वह गंभीर प्रयासों में लगा हुआ था। एक बार, उसकी आत्मा ने उसे बहुत परेशान किया। उसने आत्मा पर काबू पाने के लिए बहुत सारे नींबू खाए, और वह कई बार बीमार हो गया।

एक बार उसने दस दिन तक खाना नहीं खाया और किसी ने यह बात महबूब इलाही को बता दी। उसे पहले बुलाया गया और जब वह उसके सामने गया तो उसने इकबाल को एक रोटी लाने का आदेश दिया। इकबाल एक रोटी लेकर आया और उस पर बहुत सारी मिठाई फैला दी।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया को आदेश दिया गया कि वे अपने सामने रखी सभी चीज़ें खा लें। और उन्हें इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि वे एक ही बार में सभी चीज़ें कैसे खा सकते हैं। लेकिन उन्होंने सब कुछ खा लिया क्योंकि वे अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेश को अस्वीकार नहीं कर सकते थे।

उनकी अंतिम सलाह: उन्हें शेख को अंतिम सलाह दी गई थी
ज़ैनुद्दीन और शेख कमालुद्दीन को आदेश दिया गया कि उनकी मृत्यु के बाद उनके आध्यात्मिक गुरु की संत जैसी पोशाक कब्र में रख दी जाए

उसकी छाती पर एक लकड़ी का कटोरा रखा गया था और उसके सिरहाने एक लकड़ी का कटोरा रखा गया था। उसकी उंगली में मोती हैं। बगल में लाठी और पैरों में चप्पल हैं।

मृत्यु: अपने आध्यात्मिक गुरु की मृत्यु के 32 वर्ष पश्चात् 18 रमज़ान 757 हिजरी को उन्होंने इस नश्वर संसार को त्याग दिया। जिस कमरे में हज़रत रहा करते थे, वहीं उनकी कब्र बनाई गई। उनकी वार्षिक पुण्यतिथि मनाई जाएगी। उनके अंतिम विश्राम स्थल पर आम और खास लोग बड़ी संख्या में आते हैं।

उनके खलीफा: खलीफा तो कई हैं, लेकिन कुछ प्रसिद्ध खलीफाओं का उल्लेख इस प्रकार है:.

खाजा बंदे नवाज़ सैयद मोहम्मद गेसू दराज़, शेख कमालुद्दीन (उनकी बहनों के बेटे), मकदूम जहनैन जहां गश्त। हजरत शेख सदरुद्दीन तैयब दूल्हा, सैयद मोहम्मद जाफर अल-मुल्की हुसैनी, मौलाना अलाउद्दीन सिंदलवी, मौलाना खाजगी, मौलाना अहमद थानासारी, मोइनुद्दीन खुर्द, काजी अब्दुल मुक्तदर बिन काजी रुकनुद्दीन, काजी मोहम्मद शादी, मकदूम शेख सुलेमान रुदालवी, शेख मोहम्मद मुतावकिल, शेख दानियाल उर्फ मौलाना अवाद, मकदूम शेख क्वामुद्दीन।

उनकी कुछ शिक्षाएँ इस प्रकार हैं:

पीर के गुण: अरे दरवेश, रहस्यवादी मार्ग पर पीर ऐसे व्यक्ति को कहते हैं, जो शिष्य के अंतरतम का उपयोग करता हो। और हर सेकंड और मिनट में शिष्य की मुश्किलों और समस्याओं को खोजकर उनका समाधान करता हो।

और अंतरतम और पीछे के दर्पण को साफ़ करना।

शिष्य के कर्तव्य: सच्चा शिष्य वह व्यक्ति कहलाता है जो पीर की आज्ञा का पालन करेगा और जो कुछ वह उसे दिखाएगा, वही इस मामले में देखेगा।

हर समय अपने सहकर्मी की उपस्थिति के बारे में सोचें।

उसे अपने हृदय में जो भी अच्छा-बुरा आता है, उसे अपने शिष्य से कह देना चाहिए। यदि उसके हृदय में अपने शिष्य के प्रति कोई भी बुरा विचार है, तो वह सच्चा शिष्य नहीं है।

फकीर व्यक्ति की पूंजी प्रयास है। और सच्चा दिल क्या होना चाहिए? और इस उद्देश्य से नहीं कि लोग उसे एक उपासक और तपस्वी या प्रयास करने वाला व्यक्ति समझें। लेकिन ये प्रयास आवश्यक होने चाहिए, खासकर अल्लाह के लिए। जब प्रयास ईमानदारी से किए जाते हैं, तो वे सफल होते हैं। और अल्लाह शिष्य तक पहुँचता है, जो अंतिम गंतव्य है।

असली काम: हज़रत ने कहा है, "असली काम आत्मा की रक्षा करना है। इल्हामी में सूफी व्यक्ति के लिए सांस रोकना अनिवार्य है ताकि वह अंतरतम की शांति पा सके। जब वह सांस लेगा, तो उसका अंतरतम चिंतित होगा और उसमें कमी ढूंढेगा।"

हज़रत का एक कथन इस प्रकार है ।

1. सभी कार्यों में शुद्ध इरादा आवश्यक है।

2. व्यवसाय की रोटी एक अच्छी रोटी है।

3. रहस्यवादी व्यक्ति को अल्लाह का ज्ञान जितना अधिक होगा, वह उतना ही सम्बन्धियों से दूर हो जायेगा।

4. यदि दरवेश को भूख लगे तो उसे किसी अपरिचित व्यक्ति को अपनी आवश्यकताएं नहीं बतानी चाहिए।

5. संसार की मांग में यदि शुभ भावना हो तो वह वास्तव में परलोक की मांग ही मानी जायेगी।

6. समता सहानुभूतिशील व्यक्तियों की चिकित्सा है, जैसे प्रकट रोग की चिकित्सा है, और इसी प्रकार अंतरतम के दुःख के लिए भी समता के अतिरिक्त कोई अन्य चिकित्सा नहीं है।

दैनिक गायन: उनके द्वारा दिखाए गए कुछ दैनिक गायन इस प्रकार हैं।

1. अल्लाह के प्यार के लिए, उन्होंने असर की अतिरिक्त प्रार्थना के बाद 5 बार अम्मा का पाठ करने को कहा।
2. आँखों की रोशनी के लिए: ईशा की नमाज़ के बाद दो रकात नमाज़ अदा करें और हर रकात में फ़ातेहा के बाद तीन बार 'एन्ना अताएना' पढ़ें। सजदे में निम्नलिखित पंक्तियां पढ़ें:

"मुस्तकनी बेसमिही वा बसरी वजलाहा अल-वारिस।"

उनके कुछ चमत्कार: एक अज़ुद्दीन उनके पास मौजूद था। हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी ने लिखा है

अज़ुद्दीन को यह कागज़ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की मज़ार पर पेश करने के लिए दिया गया था।

अज़ुद्दीन इसे पढ़ना चाहता था लेकिन उसने कागज़ नहीं पढ़ा।
उसने सोचा कि पहले हजरत निजामुद्दीन औलिया की मजार पर कागज पेश कर दूं, फिर बाद में पढ़ूंगा। कागज पेश करने पर जब उसने कागज देखा तो वह साफ था। और उस पर कुछ भी लिखा नहीं था।

सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक दिल्ली से थट्टा की ओर प्रस्थान कर रहा था और उसने दिल्ली के विद्वान और पवित्र लोगों को अपने साथ ले लिया। वह हज़रत चिराग देहलवी को साथ ले जाना चाहता था। उसने कहा, "सुल्तान की यात्रा के दौरान उसे ले जाना, जो उसके लिए शुभ नहीं है क्योंकि वह सुरक्षित और सुरक्षित स्थिति में वापस नहीं आएगा।" तो ऐसा ही हुआ। उसकी प्रार्थना के कारण, फिरोज शाह दिल्ली राज्य का सुल्तान बन गया।

हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी के जीवन के अंतिम दिनों में उनके शरीर से अच्छी खुशबू आने लगी, बिल्कुल वैसी ही जैसी हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के शरीर से आती थी।

7.हजरत अमीर खुसरो

वह दिल्ली राज्य के दरबारी थे। और राज्य के महान व्यक्ति थे। और वह हजरत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य और खलीफा थे।

पारिवारिक विवरण: वह प्रसिद्ध हजारा बलक परिवार से ताल्लुक रखते हैं। और ज्ञान और धन इस परिवार की विशेषताएँ हैं।

उनके पिता का नाम अहमद सैफ उद्दीन महमूद है। वे हज़ारा बलक के एक कुलीन व्यक्ति थे। और वे चेन गिज़ खान के समय भारत आए थे। और शाही दरबार में उच्च श्रेणी के पद पर काम किया।

भाई: उसके दो भाई हैं और उनके नाम इस प्रकार हैं।

1.अज़ुद्दीन अली शाह 2.हुसामुद्दीन

जन्म: उनका जन्म मोमेनाबाद में हुआ था, जिसे अब पिटयाली के नाम से जाना जाता है। और उनका नाम अबुल हसन है।

उपाधि: उनकी उपाधि यामीनुद्दीन के नाम से जानी जाती है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उन्होंने अपने पिता के संरक्षण में शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त किया है। जब वे नौ वर्ष के थे, तब उनके पिता इस दुनिया से चले गए। उनके पिता की मृत्यु के बाद, उनके एक दूर के रिश्तेदार ने उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण पर ध्यान और देखभाल की।

इमादुद्दीन मलिक जो अपने समय के लोगों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और उनकी उम्र 130 वर्ष थी और जो उनके पूर्वज थे। उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण दिल्ली में पूरा हुआ।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: जब वे आठ साल के थे, तब उनके पिता उन्हें हजरत निजामुद्दीन औलिया के पास ले गए। वे खुद ही अपना आध्यात्मिक गुरु चुनना चाहते थे। यह सुनकर उनके पिता हजरत निजामुद्दीन औलिया के पास अंदर चले गए। लेकिन वे वहीं दरवाजे पर बैठे हुए कुछ दोहे लिखने लगे।

और वह सोचने लगा कि अगर हजरत निजामुद्दीन औलिया एक पूर्ण पवित्र व्यक्ति हैं, तो वे उसके दोहों का जवाब देंगे।
और वह उसे अंदर बुलाएगा.

फिर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने अपने नौकर से कहा कि जाकर दरवाज़े पर बैठे लड़के के सामने उनके दो दोहे सुनाओ। जब उसने ये दोहे सुने तो वह तुरंत ख़ाजा निज़ामुद्दीन की मौजूदगी में अंदर गया और अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। और ईमानदारी, ईमान और प्यार का काम था और कुछ ही दिनों में उसने इस मामले में अपने आध्यात्मिक गुरु की कृपा, प्यार और स्नेह प्राप्त कर लिया और इसकी मिसाल इस मामले में मिलना बहुत मुश्किल है। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने उन्हें एक संत की पोशाक पहनाई।

खाजा हसन से प्रेम: खाजा हसन से उनका प्रेम जुनून की हद तक पहुंच गया था। इस मामले में तथ्य ज्ञात थे, और राजकुमार सुल्तान खान ने खाजा हसन को कोड़े मारे

इस कारण से। राजकुमार सुल्तान खान को उनकी उपस्थिति में बुलाया गया था और उनसे प्रेम के बारे में पूछा था। उन्होंने हमारे बीच उत्तर दिया है कि दो होना अब नहीं है, और राजकुमार सुल्तान खान ने उनसे इस मामले में सबूत मांगा। अमीर खुशरो ने अपनी आस्तीन उतारी और उन्हें कोड़े मारने के निशान दिखाए, और उसी स्थान पर खाजा हसन के हाथों पर कोड़े मारने के निशान भी पाए गए।

राजाओं से सम्बन्ध: वे शहजादा सुल्तान खान की सेवा में थे, जो सुल्तान गयासुद्दीन बलबन के बेटे थे। शहजादा सुल्तान खान मुल्तान में रहते थे। अमीर खुशरो ने कई बार अपने पद से इस्तीफा देने की कोशिश की। लेकिन शहजादा सुल्तान खान ने उन्हें अपनी नौकरी छोड़ने की इजाजत नहीं दी। जब शहजादा सुल्तान खान मुल्तान में शहीद हो गए, तो वे दिल्ली वापस आ गए और अमीर अली खान की सेवा में चले गए।

दिल्ली की गद्दी पर अलाउद्दीन खिलजी के साथ बैठने के बाद वह उसका दरबारी बन गया। इसलिए सुल्तान कुतुबुद्दीन से लेकर मुबारक शाह तक, दिल्ली के हर राजा ने उसे बहुत पसंद किया और प्यार किया और उसे अपना अनुग्रह और ध्यान दिया। शाही दरबार में उसका बहुत सम्मान और आदर था। जहाँ तक सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक की बात है, तो उसके नाम पर उसने अपनी किताब 'तुगलकनामा' लिखी है, और जो उसे दिल्ली के दूसरे राजाओं से ज़्यादा सम्मान और आदर देता था।

हज़रत कलंदर साहब से मुलाक़ात: एक बार सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने अपने हाथों से पानीपत में हज़रत कलंदर साहब के लिए कुछ उपहार भेजे। हज़रत कलंदर साहब उनकी कविताएँ सुनकर बहुत खुश हुए और फिर उन्होंने अपनी कविताएँ लोगों को सुनाईं।

फिर, उसकी कविता सुनकर, वह रोने लगा।

हज़रत कलंदर साहब ने उनसे पूछा, “ख़ुसरो, तुम्हें कुछ समझ में आया भी या सिर्फ़ रो रहे हो?” उन्होंने जवाब दिया, “वह इसलिए रो रहे हैं क्योंकि उन्हें कुछ समझ नहीं आया।” हज़रत कलंदर साहब उनका जवाब सुनकर ख़ुश हुए और उन्होंने सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भेजी गई भेंट स्वीकार कर ली।

उनकी उपाधि : एक दिन उनके मन में विचार आया कि उनकी उपाधि दुनिया के लोगों की तरह है। और अगर इसे फकीर लोगों से जोड़ा जाए तो अच्छा रहेगा। उन्होंने इस विषय पर अपने आध्यात्मिक गुरु से बात की। और हजरत निजामुद्दीन औलिया ने उनसे कहा कि परलोक में तुम्हें 'मोहम्मद कासा लाईस' की उपाधि से पुकारा जाएगा।

उनकी अंतिम सलाह: जो शब्द कहे गए, उनके आध्यात्मिक गुरु की जुबान से अनुग्रह और स्नेह के शब्द, जिन्हें उन्होंने कागज पर लिखकर ताबीज की तरह अपने गले में पहना। उन्होंने अंतिम सलाह दी है कि इस कागज को जिस पर लिखे वाक्य हैं, उसे उनके साथ ही कब्र में दफना दिया जाए। ताकि यह कागज उनकी मुक्ति का स्रोत बने।

मृत्यु: हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की मृत्यु के समय वे दिल्ली में नहीं थे, बल्कि वे राजा गयासुद्दीन तुगलक के साथ लखनऊ में थे। अपने गुरु की मृत्यु की खबर सुनकर वे दिल्ली आए। वे अपने गुरु की समाधि पर गए और उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। जो कुछ भी उनके पास है, वे उसे अपने पास रख चुके हैं।

फकीरों और गरीबों में बांट दिया। और शोक का काला लिबास पहन लिया। और कब्र पर रहने लगे।
उन्होंने छह महीने का समय दुख और शोक में बिताया है।

अंततः 18 शव्वाल वर्ष 725 हिजरी को उन्होंने इस नश्वर संसार को त्याग दिया। उनकी कब्र उनके आध्यात्मिक गुरु की कब्र के पास है, जिसे 'चबूतरा यारान' के नाम से जाना जाता है।

उनकी वार्षिक पुण्यतिथि का समारोह मनाया जाएगा।
उनके अंतिम विश्राम स्थल पर बड़ी संख्या में आम और खास लोग आते हैं।

जीवनी विवरण: वह न केवल एक महान कवि थे, बल्कि वह अपने समय के एक अच्छे लेखक भी थे। और उनके साथ उच्च श्रेणी की रुचि वाले एक महान, विद्वान व्यक्ति थे। वह राजाओं के एक सफल दरबारी थे। लेकिन साथ ही एक व्यक्ति के रूप में वह एक पवित्र स्वभाव के थे। वह एक सूफी संबंध के व्यक्ति होने के साथ-साथ एक महान दरवेश व्यक्ति भी थे। हज़रत रात के आखिरी पहर में जागते थे और तहज्जुद की नमाज़ में कुरान के सात भाग पढ़ते थे। और प्यार और दिलचस्पी में बहुत रोते थे। अपनी सेवा के बावजूद, वह 40 साल की अवधि में 12 महीने के उपवास कर रहे हैं।

उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु के साथ ताई की पद्धति से हज यात्रा की है।

अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रति प्रेम: उनके मन में अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रति बहुत प्रेम और भक्ति है। और वे "फ़ना फ़ि अल्लाह (सूफ़ीवाद में वास्तविक शब्द है)" की डिग्री तक पहुँच चुके हैं

"फ़ना फ़ि अल्लाह" जिसका अर्थ है "स्वयं का भी पूर्ण और सम्पूर्ण समर्पण।"

जब वे दिल्ली में होते तो अपना अधिकतर समय अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में बिताते। एक दिन हजरत महबूब इलाही की उपस्थिति में एक व्यक्ति आया। उसकी सात बेटियाँ हैं। वह उनसे विवाह करना चाहता है। उसे हजरत निजमुद्दीन औलिया से कुछ आर्थिक मदद चाहिए। लेकिन संयोग से दरगाह की इमारत में उनकी लकड़ी की चप्पलों के अलावा कुछ नहीं था। वह व्यक्ति उनसे बड़ी उम्मीद लेकर वहाँ आया था। उसे वे चप्पलें दे दी गईं।

लेकिन वह व्यक्ति खुश नहीं था। वह दिल्ली से चला गया और एक कारवां सराय में रुका। अमीर खुसरो भी अपने सामान के साथ दिल्ली की यात्रा पर उस सराय में रुके थे। उन्हें सराय की इमारत में अपने गुरु की खुशबू महसूस हुई। वह सराय में घूमने लगा ताकि पता लगा सके कि दिल्ली से वहाँ कौन आया है। जब वह उस व्यक्ति से मिला, तो उसने अपने गुरु का हालचाल पूछा। बातचीत में उस व्यक्ति ने गुरु की लकड़ी की चप्पलों का जिक्र किया है। उसने लकड़ी की चप्पलें ले ली हैं और अपना सारा सामान उस व्यक्ति को दे दिया है।

उन्होंने चप्पलों को अपनी पगड़ी में बांधकर अपने सिर पर रख लिया और इस तरह वे दिल्ली में अपने आध्यात्मिक गुरु के समक्ष उपस्थित हुए।

अपने गुरु का उनसे प्रेम: हजरत महबूब इलाही उनसे बहुत प्रेम करते थे। एक बार उन्होंने उनसे कहा, "खुसरो, मैं सभी लोगों से परेशान रहता था, लेकिन किसी से नहीं।"

एक बार उन्होंने यह भी कहा, "मैं सभी लोगों से परेशान रहता था, यहाँ तक कि अपने आप से भी, लेकिन आपसे परेशान नहीं रहता था।"

उनके आध्यात्मिक गुरु ने उन्हें 'तुर्क अल्लाह' की उपाधि दी थी। एक अवसर पर उन्होंने कहा, "मैंने अमीर खुशरो के बिना स्वर्ग में अपना कदम नहीं रखा।" अगर एक कब्र में दो लोगों को एक साथ दफनाने की अनुमति होगी, तो मुझे अपनी कब्र में उन्हें दफनाने की अनुमति होगी।

एक बार उन्होंने कहा, "क़यामत के दिन हर एक व्यक्ति से पूछा जाएगा कि तुम क्या लाए हो, तो वह वहां कहेगा कि मैं तुर्क अल्लाह लाया हूं।" हज़रत अक्सर कहा करते थे, "या अल्लाह, तुर्क अल्लाह के सीने के दर्द की खातिर मुक्ति प्रदान करो।"

एक बार उन्हें प्राचीन लोगों के लिए आपत्ति थी, और खम्सा निज़ामी का जवाब देने के लिए, उन्होंने फ़ारसी भाषा में एक दोहा कहा। उस समय, एक नंगी तलवार उनके सिर पर आ गिरी। उन्होंने बाबा फ़रीद और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से मदद माँगी। फिर एक तलवार आई, जिसने उनकी कमीज़ की आस्तीन काट दी, और तलवार गायब हो गई। वह इस मामले में सुरक्षित था। वह ख़ाजा निज़ामुद्दीन की उपस्थिति में गया और उन्हें विवरण देना चाहता था। हज़रत ने उन्हें आस्तीन दिखाई, इसलिए उन्होंने अपनी ईमानदारी से अपना सिर धरती पर रख दिया।

कविता: उन्होंने 5 लाख से कम और 4 लाख से अधिक दोहे कहे हैं। 9 वर्ष की आयु में उन्होंने एक दोहे लिखे थे।

अपने पिता की मृत्यु पर उन्होंने शोकगीत लिखा। उन्होंने ख़ाजा निज़ामुद्दीन औलिया की प्रशंसा में कई दोहे लिखे।

हज़रत सादी शिराज़ी उनसे मिलने के लिए ईरान से भारत आये थे।

एक बार हज़रत ख़िज़र से मुलाक़ात की एक फ़ज़ीलत सामने आई. उन्होंने अनुरोध किया कि वे अपना थूक उन्हें दे दें.

हज़रत ख़िज़र ने उनसे कहा कि यह ख़ुशियाँ शेख़ सादी के हिस्से में आई हैं। उन्होंने हज़रत महबूब इलाही को यह बताया है। हज़रत ने अपनी लार उनके मुँह में डाल दी है। और इसी की बरकत से लोगों में उनकी शायरी की इतनी लोकप्रियता हुई कि उनके जैसा कोई नहीं मिला।

विशेष पुस्तकें: अमीर खुशरो ने 92 पुस्तकें लिखी हैं, उनमें से कुछ विशेष पुस्तकें इस प्रकार हैं।

'राहतल मुहिबिन' इस पुस्तक में उन्होंने हजरत निजामुद्दीन औलिया की मल्फुजात (कथन और उपदेश) लिखी हैं (यह पुस्तक फारसी में 'हस्त बहिस्त' के नाम से प्रसिद्ध और प्रसिद्ध चिश्तिया 8 पुस्तकों के संग्रह में जोड़ी गई है)। और इस अंग्रेजी पुस्तक के अनुवादक ने 'राहतल मुहिबिन' का उर्दू संस्करण से अंग्रेजी में अनुवाद किया है, और यह Amazon.com पर बिक्री के लिए उपलब्ध है।

तुहफ़ाफ़त अस्सकिर, वस्त हयात, गैरेट कमाल, बाक़िया
नफसिया, निहाकत कमाल, किरान सादीन, मतला अनवर बा
जवाब मकज़ान निज़ामी, शिरीन कुसरो वा लैला मजनू,

आइना स्किंदारी, हसथ बहिस्त, ताजल फ़ुथ, न सहपरा एज़ाज़ खुसरवी, तुग़लक़ नामा, क़ाज़ीन फ़ुतूह, मनक़िब हिंद।

चमत्कार: शेख नूर अलदीन अबू फतह मुल्तानी अपने अंतिम संस्कार पर थे जब उन्होंने अपने हाथ उठाए और अल्लाह की प्रार्थना करना शुरू किया और उस समय, वह जीवित हो गए और बैठ गए और एक फारसी शेर पढ़ा।

8 मौलाना हज़रत शम्स उद्दीन मोहम्मद याहियाह

मौलाना हज़रत शम्स उद्दीन मोहम्मद यहियाह; वह राष्ट्र के साथ-साथ धर्म के भी सूर्य हैं। वह तपस्वी, उपासक, घटनाओं को प्रकट करने वाले व्यक्ति थे।

पिता का नाम: उनके पिता का नाम मोहम्मद याहिया है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: मौलाना जहीर उद्दीन की पुस्तक 'बज़वी' का अध्ययन किया। सिद्धांतों, न्यायशास्त्र, व्याख्या और हदीस (पैगंबर की बातें) के ज्ञान में उन्हें बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस कारण से, उन्हें गर्व और प्रसन्नता होगी। शहर के बहुत से धनी लोग उनके शिष्य थे। प्रकट ज्ञान की पुष्टि के लिए, इस्लाम के ज्ञान की खोज, जो उनके साथ जुड़ा हुआ है

खाजा निज़ामुद्दीन औलिया की उपस्थिति में

वह और मौलाना सदरुद्दीन नवेली एक साथ रहते थे और दोनों मौलाना सदरुद्दीन के साथ पढ़ते थे।

जब छुट्टी होती थी, तो वह और मौलाना सदरुद्दीन कपड़े धोने के लिए घासपुर में यमुना नदी पर जाते थे। वह अक्सर सुनते थे कि हजरत निजामुद्दीन एक प्रसिद्ध पवित्र व्यक्ति हैं। और उनकी महानता और चमत्कारों की कहानियाँ सुनते थे। वह अक्सर सुनते थे कि शहर के महान व्यक्ति, विद्वान और पवित्र व्यक्ति उनके पास जाते थे और उनके पैर चूमते थे।

एक दिन वह और मौलाना सदरुद्दीन नोवली कपड़े धोने के लिए गयासपुर गए। और उन दोनों ने तय किया कि हजरत नियाजमुद्दीन औलिया की मौजूदगी में जाकर देखेंगे कि उन्हें किस तरह से ज्ञान प्राप्त हुआ है। जब हम उनकी मौजूदगी में पहुंचेंगे तो धरती पर सजदा नहीं करेंगे और उनके पैर नहीं चूमेंगे। लेकिन इस्लामी रीति-रिवाजों के अनुसार, उन्हें सलाम कहेंगे और वहीं बैठेंगे।

इस चर्चा पर, और अजीब सोच के साथ, वह और मौलाना सदरुद्दीन नवेली हजरत निजामुद्दीन औलिया की महानता की उपस्थिति में गए। जब मौलाना सदरुद्दीन की नज़र नूर हजरत निजामुद्दीन औलिया के चेहरे पर पड़ी। जब उन दोनों पर महानता का ऐसा खौफ और खौफ का असर हुआ कि उन दोनों ने इस मामले में अपना सिर ज़मीन पर रख लिया।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने उन दोनों को वहीं बैठने को कहा और वे दोनों वहाँ अदब से बैठ गए। कुछ देर बाद उन्होंने उनसे पूछा, क्या वे शहर में रहते हैं? और दोनों ने पूछा, क्या वे शहर में रहते हैं?

उनमें से एक ने कहा हाँ, शहर में रहते हैं। और फिर उसने पूछा कि क्या आप कुछ पढ़ते हैं? और हाँ, हमने मौलाना ज़हीरुद्दीन के साथ बाज़वी पुस्तक पर चर्चा की।

हज़रत निज़ामुद्दीन ने उनसे धारा बाज़वी के बारे में एक सवाल पूछा था, जिसका उन्होंने अध्ययन किया था, लेकिन वे दोनों इस मामले में जवाब नहीं दे सके और साथ ही मौलाना ज़हीरुद्दीन के पास यह सवाल हल नहीं हुआ था। वे दोनों बहुत हैरान हुए, और दोनों ने सम्मान और विनम्रता के साथ बताया कि "हमारे गुरु ने इस समस्या को हल करने के लिए छोड़ दिया था, और हमारे शिक्षक मौलाना ज़हीरुद्दीन इस मामले में कहा करते थे कि वह इस मामले में शोध करेंगे और इसे हल करेंगे।"

यह सुनकर हज़रत निज़ामुद्दीन मुस्कुराये और इस मामले पर इतना प्रकाश डाला कि दोनों संतुष्ट और खुश हो गये और वापसी के समय हज़रत निज़ामुद्दीन ने मौलाना शम्सुद्दीन को एक पायजामा और मौलाना सदर उद्दीन को पगड़ी भेंट की।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: जब वह दूसरी बार महबूब इलाही की उपस्थिति में गया तो उसके हाथों पर प्रतिज्ञा की आशीष दी गई। प्रतिज्ञा की आशीष पाकर वह महबूब इलाही की उपस्थिति में रहने लगा। उसकी सेवा, सच्चाई, ईमानदारी और प्रेम ने अच्छा काम किया और अंत में खिलाफत प्राप्त करके वह प्रसिद्ध और प्रसिद्ध हो गया।

सलाह और परामर्श: खिलाफत के इस पत्र में सलाह और परामर्श पाए जाते हैं, और उनका अनुवाद इस प्रकार है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील एवं दयावान है।

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और उसके दोस्तों की हिम्मत के लिए, जो सारी दुनिया को छोड़कर उसकी तरफ़ ऊँचे मुकाम पर पहुँचे हैं। उनके दिलों का लक्ष्य मुक्ति की शख्सियत और नेक नाम की खातिर जुड़ा हुआ है।

तो ऐसे दोस्तों के लिए कौसर के पानी के भण्डार से सुबह और शाम को प्यार के प्याले पिलाए जाएँगे। ऐसी सेवा के दौर में कभी भी कोई गिरावट नहीं होगी। जब रात होगी तो उनके दिलों में प्यार की ज्वालाएँ भड़क उठेंगी। और उनकी आँखों से आँसू की वर्षा होगी। और ये दोस्त जो छिपे हुए तरीके से हैं, दोस्त की प्रशंसा से लाभ उठाते हैं। सम्मान के तरीके से अपने विचार से, वे सम्मान के पर्दे की नोक की परिक्रमा करते हैं।

उनमें से कोई न कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो अल्लाह के ज्ञान की ताजगी को हमेशा अपने दिल में रखेगा और दुनिया भर में उसके प्रभाव को और प्रकाश पाया जाएगा। उनकी ज़बान वास्तव में साफ़ होगी। और वह लोगों को अल्लाह की ओर बुलाने वाला होगा। ताकि वह अपने मार्ग पर चल सके।

मनुष्यों को अंधकार से दूर करो और अल्लाह की निकटता की ओर ले चलो, जो मुक्ति देने वाला है।

फिर पूर्ण कृपा हुई और पैगंबर पर शानदार इस्लामी कानून और रहस्यवादी मार्ग का उज्ज्वल प्रभाव पड़ा और जो अल्लाह की प्रतिज्ञा के स्थान पर इस मामले में विशेष है।

उसके खलीफाओं पर जो हर जगह सफल हैं। और उनकी संतान पर जो अपने पालनहार को सुबह-शाम पुकारते हैं। और निस्संदेह अल्लाह की ओर पुकारना, जो इस मामले में अपने बंदों के साथ अकेला है, जो इस्लामी धर्म का महान उद्देश्य है। और ईमान के साथ दृढ़ लगाव जैसा कि अल्लाह के नबी की हदीस में दृढ़ता से कहा गया है।

"उस शख्सियत की कसम है जिसके हाथों में मोहम्मद की जान है। अगर तुम चाहो तो मैं कसम खाकर कह दूँ कि अल्लाह अपने बंदों में ऐसे बंदों को पसंद करता है जो अल्लाह को अपना प्यारा बना लें और अल्लाह के बंदों को अल्लाह का प्यारा बना दें। और ज़मीन पर चलते-फिरते नसीहत दें और नेक काम सिखाएँ। अल्लाह ने ऐसे बंदों की इस मामले में तारीफ़ की है। और जो लोग दुआ करते हैं कि ऐ हमारे अल्लाह, हमारी बीवियों और हमारे बेटों से हमारी आँखों के लिए कूलर बना दे। और हमें नेक लोगों का मार्गदर्शक बना दे।"

इसके अलावा अल्लाह ने बंदों के लिए अल्लाह के नबी का अनुसरण करना अनिवार्य कर दिया है। उन्होंने कहा, "ऐ मोहम्मद, कहो, ऐ लोगों, यह मेरा रास्ता है।" मैं तुम्हें अल्लाह की ओर बुलाता हूँ। मैं और मेरी क़ौम एक नज़र में हैं और कौन मेरे अनुयायी हैं। और नबी का अनुसरण किए बिना, जाँच करना

और उनके कथनों और कर्मों का अनुसरण करना। और उनके दिलों का अस्तित्व साफ़ करके और अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ को पाकर। और सब से विमुख होकर अल्लाह की ओर बढ़ना, अन्यथा वे लक्ष्य नहीं पा सकते थे।"

यह जान लेना चाहिए कि मेरा प्रिय पुत्र, राष्ट्र और धर्म का सूर्य, मोहम्मद बिन यहियाह एक नेक, विद्वान व्यक्ति है। हे एकमात्र ईश्वर, उस व्यक्ति को प्रकाश प्रदान कर जो तक़वा और ईमान वाला व्यक्ति है। जब उसका लक्ष्य हमारी ओर दृढ़ हो गया, तो हमने उसे सत्कार की पोशाक प्रदान की। उसने प्रेम का पूरा भाग प्राप्त कर लिया है, और मैंने उसे पूरी अनुमति दी है कि वह अल्लाह के नबी का अनुसरण करे, आज्ञाकारिता और उपासना में संलग्न हो, और अपनी आत्मा को कामुक इच्छाओं और खतरों से बचाए रखे। और दुनिया और उसके स्रोतों से दूर रहे।

दुनिया के लोगों से दूर रहो.

अल्लाह की ओर बढ़ते रहो।

उनके दिलों में आसमानी रोशनी और आसमानी दुनिया के रहस्य उजागर होंगे और अल्लाह की तारीफ़ के दरवाज़े की समझ होगी।

उनके शिष्य: उनके कई शिष्य हैं। उनके प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध शिष्य हजरत नसीरुद्दीन चिराग देहलवी हैं। हजरत मकदूम ने उनके द्वारा रचित 'बजवी' पढ़ी थी, और हजरत मकदूम उनका बहुत सम्मान और आदर करते थे। उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु की प्रशंसा में एक दोहा लिखा है। और उसका अर्थ और व्याख्या इस प्रकार है।

“मैंने ज्ञान से पूछा कि वास्तव में तुम्हें जीवन किसने दिया है। ज्ञान ने उत्तर दिया कि शम्स उद्दीन यहियाह ने।”

अंतिम दिनों में सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक को कश्मीर जाने का आदेश मिला। वह अपने घर वापस आ गया और कश्मीर की यात्रा की तैयारी करने लगा। सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने कश्मीर की यात्रा के लिए कुछ लोगों को अपने साथ भेजा था। और वे लोग उसके घर में पाए गए।

हज़रत ने उनसे कहा, "ये लोग क्या कह रहे हैं? मैंने स्वप्न में अपने प्रबुद्ध आध्यात्मिक गुरु को देखा है जो मुझे बुला रहे हैं। मैं अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में जा रहा हूँ। जहाँ ये लोग मुझे भेज रहे हैं।"

अगले दिन उनकी छाती पर सूजन आ गई और अगर ऐसी स्थिति होती तो बहुत असर होता।

उनकी बीमारी की खबर सुल्तान तक पहुंची और वह उनकी संतुष्टि के लिए उनसे मिलना चाहते थे। उन्हें सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक की मौजूदगी में पालकी में बिठाकर ले जाया गया। और मुश्किलें बहुत बढ़ गईं।

मृत्यु: हज़रत ने वर्ष 747 हिजरी में इस नश्वर संसार को छोड़ दिया।

उनकी कब्र दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन औलिया की कब्र के पास स्थित है।

उनकी जीवनी: वे विवाहित नहीं थे। वे अपना पूरा जीवन प्रयासों, रहस्यमय अभ्यासों और आध्यात्मिक साधनाओं में लगे रहे।

इबादत। उनकी जीवनशैली रहस्यवादी तरीके की तरह थी। उनका प्रकट और अंतरतम साफ और स्वच्छ था। उन्हें शादी-ब्याह के रिश्तों से दूर रखा गया था। साथ ही औपचारिकताओं से भी दूर रखा गया था। वह दुनिया भर के लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं करते थे। उन्हें इतनी जीत भी पसंद नहीं थी और उन्हें ज़्यादा पसंद नहीं था। उनके सेवक का नाम फतूह था, जो जीत की सारी रकम लोगों के दान पर खर्च कर देता था। विद्वानों में उनका दर्जा ऊंचा था। वह अपने समय के एक शोध विद्वान थे। इस्लामी धर्म के बारे में उनकी लिखी कुछ किताबें हैं। इस्लामी कानून और रहस्यवादी तरीके से, वह पूर्णता के व्यक्ति थे। समय के विद्वान व्यक्ति और मशाइक (विद्वान लोग) जो भक्त और अनुयायी थे। हज़रत अपने शिष्यों को बनाते थे अगर उन्हें ऐसे लोग मिलते जो सच्चे होते और इस मामले में बचने की पूरी कोशिश करते।

समा सुनने का शौक: अपनी मृत्यु से पहले वे महबूब इलाही की दरगाह में समा सुनने की बैठक में थे; उनके साथ नसीरुद्दीन चिराग देहलवी, शेख कुतुबुद्दीन मुन्नवर और कई अन्य लोग भी मौजूद थे। समा सुनने पर उन पर एक विशेष प्रकार की खुशी छा गई और वे खड़े होकर अपने हाथों को अपनी छाती पर छूने लगे।

रहस्योद्घाटन और चमत्कार: एक बार हजरत नसीरुद्दीन

चिराग देहलवी के शिष्य, मौलाना मोहम्मद

सुलेमान, शुक्रवार की नमाज़ के बाद उनकी उपस्थिति में आये, और

उस समय हज़रत अपना कपड़ा उतारकर लिखने में मग्न थे। उनके दिल में ख़याल आया कि जुमे की नमाज़ के बाद मुक़द्दस लोगों की सगाई होगी और यह मुक़द्दस व्यक्ति कैसे लिखने में मग्न है। जब यह ख़याल मोहम्मद सुलेमान के दिल में आया तो उन्होंने सर उठाया और कहा, "अरे सुलेमान, मैं इस ख़याल से खाली नहीं हूँ।"

9.मौलाना अलाउद्दीन नेली चिश्ती

मौलाना अलाउद्दीन नेली चिश्ती अल्लाह के कुतुब हैं। वह अल्लाह के खज़ानों के रहस्यों के जानकार हैं। वह पूर्णता और उत्कृष्टता की नदी हैं।

नाम: उसका नाम अलाउद्दीन है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उन्होंने जल्द ही अभिव्यक्ति के ज्ञान में पूर्णता प्राप्त कर ली। उन्हें न्यायशास्त्र, हदीस, तर्क, कुरान की व्याख्या और रहस्यवादी ज्ञान के ज्ञान में पूर्णता प्राप्त थी। और वे कुरान के अच्छे पाठक और कुरान के जानकार थे।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: वह ख़ाजा निज़ामुद्दीन औलिया की भक्ति मंडली में शामिल हो गए और प्रतिज्ञा का आशीर्वाद प्राप्त किया। और कुछ समय बाद उन्हें खिलाफत की संतता की पोशाक प्राप्त हुई।

हज़रत महमूद इलाही की सौगात: एक दिन वह अपनी दिनचर्या के अनुसार पहली मंजिल पर थे। और उन्हें दरगाह की इमारत में प्रवेश कराया गया। और मस्जिद के प्रांगण में वह नमाज़ में मशगूल हो गए। जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ पाए थे, वह उनके पीछे नमाज़ में शामिल हो गए।

उनकी क़ुरान की तिलावत और अच्छी आवाज़ बहुत मशहूर थी। उनकी क़ुरान की तिलावत और अच्छी आवाज़ सुनकर हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया पर एक अजीब सी स्थिति और उत्साह और प्यार और लगाव पैदा हो गया। हज़रत महबूब इलाही ने अपने नौकर इक़बाल को आदेश दिया कि वह जाकर अपनी विशेष नमाज़ की चटाई नीचे नमाज़ में इमाम बने व्यक्ति को दे दे।

खाजा इकबाल नीचे आए और जब उन्होंने अपनी नमाज़ पूरी की तो खाजा इकबाल को खाजा साहब का तोहफ़ा दिया गया। उन्होंने इसे बहुत सम्मान और आदर के साथ लिया। और इसे चूमा। और इसे अपनी आँखों से लगाया। और इसे अपने सिर पर रखा। और अपने भाग्य और किस्मत पर, उन्हें इस मामले में गर्व था।

आध्यात्मिक गुरु का सम्मान: यह एक बार की घटना है कि वे, शम्सुद्दीन यहियाह और कुछ अन्य व्यक्ति अवध से दिल्ली आए थे। वे और शम्सुद्दीन यहियाह दिल्ली पहुँचे और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के आशीर्वाद के लिए गए। और उनके सामने ख़ाजा साहब का सम्मान किया। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया ने शम्सुद्दीन को चौथे दिन अवध वापस जाने का आदेश दिया। दिल्ली से जल्दी लौटने के आदेश से वे दोनों दुखी और निराश थे। चूँकि यह एक बहुत बड़ी गलती थी।

अपने मालिक का आदेश, वे इसे कैसे अनदेखा कर सकते हैं? दोनों वापस यात्रा पर निकल पड़े। जब वह तलपचा गया, तो उसे बहुत तेज़ बुखार था। इस कारण उसे तलपचा में ही रुकना पड़ा। और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की मौजूदगी में दरख़्वास्त भेजी। जिसमें उसने बुखार की जानकारी दी। उसने अपनी दरख़्वास्त में यह भी लिखा था कि अब उसके निर्देश का क्या?, जो भी आदेश होगा, उस पर अमल किया जाएगा।

जब हज़रत निज़ामुद्दीन को उनकी बीमारी का पता चला तो उन्होंने कुछ पैसे भेजे और उनकी सुविधा के लिए अपना प्लांकुइन भेजा और उन्हें दिल्ली वापस आने का आदेश दिया गया।

वह अपने लिए नया ऑर्डर पाकर खुश था। जब उसे पालकी में बैठने के लिए कहा गया तो उसने इस मामले में मना कर दिया। उसने कहा कि शेख निजामुद्दीन की पालकी में बैठने की उसकी क्या शक्ति और नियंत्रण है, साथ ही उसका क्या प्रभाव है। इसलिए वह किराए की डोला (पालकी) में दिल्ली आया।

उन्हें निर्देश दिया गया है कि जाते समय वे पालकी को अपने सामने रखें ताकि उनकी नज़र उस पर पड़े। ताकि उसे देखकर उनके स्वास्थ्य के ठीक होने की दुआएं मिलें। इस तरह से आते-आते वे दिल्ली पहुँच गए हैं।

जब वे महबूब इलाही के सामने पहुंचे, जिन्होंने उनसे उनकी सेहत के बारे में पूछा, तो उन्होंने अपने नौकर इकबाल को आदेश दिया कि सुबह के नाश्ते से बचा हुआ कुछ खाना उनके पास ले आए। खाजा इकबाल उनके लिए कचुरी (या कचुरी संज्ञा। भारतीय पाक कला मीठे या नमकीन के साथ तले हुए आटे की गेंदें) लाए।

भरवां, नाश्ते के रूप में खाया जाता है) , तेल अहारी (मिर्च का तेल)। वह अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेश के अनुसार कचौड़ी और अहारी का तेल खा रहा था। और खाने के बाद, उसका बुखार कम हो गया। जब महबूब इलाही को पता चला कि वह उसके द्वारा भेजी गई पालकी में दिल्ली नहीं आया है, तो उसने पूछा है कि वह पालकी में यात्रा क्यों नहीं करता है।? उसने बहुत सम्मान और सम्मान के साथ कहा कि अगर इस गुलाम पर दया और कृपा होगी, जो इस मामले में सटीक होगी। लेकिन इस गुलाम के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी स्थिति को जाने और साथ ही इसे न भूलें।

जब कभी उसकी नज़र गिरेगी, तब वह बहुत आदर और सम्मान देगा। और उस पालकी से उसे अनुग्रह और आशीर्वाद मिलेगा।

मौलाना हुसामुद्दीन से मुलाक़ात : हज़रत महबूब इलाही का एक तरीक़ा था कि जो भी अवध से आएगा, तो वो उसे हज़रत बख्तियार काकी की रौशनी की मज़ार पर जाने के लिए कहते थे। और उसके बाद शहर में कुछ लोगों से मिलते थे। फिर वो दोनों मौलाना हुसामुद्दीन के घर गए, और हज़रत अपने घर पर नहीं मिले। कुछ देर बाद मौलाना हुसामुद्दीन आते दिखे, और उनके हाथ में कपड़ा था, जिसमें खिचड़ी थी (भारतीय लोग चावल, दाल, मसाले, घी और ढेर सारी सब्ज़ियों से खिचड़ी बनाते हैं। यह कई भारतीयों के लिए एक आरामदायक भोजन है।), और दूसरी तरफ़ जलाऊ लकड़ी थी। दोनों उनके हाथ से खिचड़ी और जलाऊ लकड़ी का पैकेट लेना चाहते थे। लेकिन मौलाना हुसामुद्दीन ने खिचड़ी नहीं खाई।

उसने अनुमति नहीं दी। और उसने उनसे वजन उठाने को कहा, जो उसका अधिकार है। वे दोनों एक पुरानी चटाई पर बैठ गए।
मौलाना शम्सुद्दीन को एक पायजामा दिया गया और एक चांदी का सिक्का दिया गया।
सभी लोग एक साथ खिचड़ी खा रहे थे।
जाते समय मौलाना हुसामुद्दीन ने मौलाना अलाउद्दीन नेली द्वारा दिया गया एक चांदी का सिक्का और शम्सुद्दीन यहिया के सामने पायजामा रखा और इन चीजों को स्वीकार न करने पर खेद व्यक्त किया।

पवित्र जीवनी: उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त था और उन्होंने किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया। और उनमें एक दवेर्श व्यक्ति के अंतरतम तरीके के गुण थे। वह अच्छा भाषण देते थे। और महान झुकाव वाले लोग उनके भाषण से प्यार करते थे। वह एक महान विद्वान व्यक्ति थे, साथ ही एक पवित्र व्यक्तित्व और पूर्ण पवित्र व्यक्ति थे। उनकी आवाज़ में कुछ आकर्षण था। हज़रत कुरान को पढ़ने की निम्नलिखित विधि के अनुसार पढ़ते थे। हज़रत आध्यात्मिक गुरु को बहुत सम्मान और सम्मान देते थे। उनके स्वभाव में सादगी थी। वह एकांत और अविवाहित अवस्था का उदाहरण थे।

अंतिम दिन: अंतिम दिनों में उन्होंने अपनी सारी किताबें छोड़ दीं और अपना दैनिक पाठ भी बंद कर दिया। वे केवल एक ही किताब पढ़ते थे। और एक ही पाठ होता था। वे अपने आध्यात्मिक गुरु हजरत निजामुद्दीन औलिया की पुस्तक 'अफजल-फवाद' (इस पुस्तक में हजरत की मल्फुजात (मल्फुजात रहस्यवादी या सूफी संतों और पीरों और शेखों की शिक्षाओं को दर्ज करती है) की मल्फुजात पढ़ते थे।

निजामुद्दीन औलिया की कई किताबें मिलती हैं, यह किताब चिश्तिया 8 किताबों के संग्रह में जुड़ गई है, जो फारसी में 'हस्त बहिस्त' के नाम से प्रसिद्ध और मशहूर है। और इस अंग्रेजी किताब के अनुवादक ने 'हस्त बहिस्त' के उर्दू संस्करण से ' अफजल-फवाद' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है, और यह किताब Amazon.com पर बिक्री के लिए उपलब्ध है। और उनसे रूहानी खुशी मिलती है। और उनके लिए, वह उन्हें हाथ से लिखता था।

किसी ने उनसे पूछा कि आपके पास हर ज्ञान की कई विश्वसनीय किताबें हैं, फिर क्या वजह है कि आप 'अफ़ज़ल-फ़वायद' में हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के उपदेश ही पढ़ते हैं । उन्होंने जवाब दिया कि यह सही है कि दुनिया सूफ़ी किताबों से भरी पड़ी है। लेकिन मेरे लिए मेरे आध्यात्मिक गुरु की मल्फ़ुज़ात ही मेरी मुक्ति का कारण है।

मृत्यु: हज़रत ने 672 हिजरी में इस नश्वर संसार को छोड़ दिया।
उनकी पवित्र कब्र दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन औलिया की मजार के पास 'चबूतरा यारान' नामक चबूतरे पर है।

10. हज़रत खाजा मोहिद्दुन काशानी

हज़रत ख़ाजा मोहिद्दीन ख़सानी अल्लाह के एक रहस्यवादी व्यक्ति हैं। और वास्तविकता की प्रणाली से संबंधित हैं और रहस्यवादी मार्ग के सहायक हैं।

पारिवारिक विवरण: उनके परिवार के पवित्र व्यक्ति जिन्होंने तबरस्तान देश पर शासन किया और इसका राजधानी शहर काशान था। उनके दादा, खाजा कुतुबुद्दीन काशानी, काशान में चेंग गेज खान द्वारा विनाश और हत्या के कारण काशान से भारत चले आए थे। वह दिल्ली में राजा अल्तमश के शासन के दौरान भारत आए थे। वह मुल्तान में रहता था। और वह अलग स्कूल में पढ़ता था। वह ज्ञान और बुद्धि में प्रसिद्ध था। जहाँ रोज़ाना हज़रत ज़िकेरिया मुल्तानी जाते और वहाँ नमाज़ अदा करते थे। एक दिन काज़ी साहब ने उनसे पूछा, "वह इस दूर जगह पर क्यों आए और मस्जिद में इमाम के अनुयायी के रूप में नमाज़ अदा की। और बहाउद्दीन ज़िकेरिया मुल्तानी ने उन्हें जवाब दिया है कि "वह पैगंबर के कथन का पालन कर रहे हैं, जिसमें कहा गया था कि

वह मुल्तान से दिल्ली आया था। एक दिन की घटना है कि दिल्ली के बादशाह ने उसे अपने महल में बुलाया। और बादशाह अपने हरम में था। बादशाह के एक तरफ सैयद नूर अलदीन मुबारक थे, और दूसरी तरफ काजी फखर अलैमा थे। और बादशाह के हरम के बाहर कौन बैठा था। जब काजी शाहिब बाहर आए, तो उनसे पूछा गया कि आप कहां बैठे थे? और उन्होंने उत्तर दिया कि ज्ञान की छाया में। जब वह बादशाह के पास पहुंचा, तो उसने उसे सलाम किया। और बादशाह ने उसे सम्मान देने के लिए खड़ा किया। और उसका हाथ पकड़कर उसे अपने हरम में ले लिया।

और उसने उसे बहुत आदर और सम्मान के साथ अपने पास बैठाया।

दिल्ली के राजा को अवध के काजी का सम्मानजनक पद दिया गया था। उन्हें इस उच्च पद पर नियुक्त किया गया और उन्होंने अपने कर्तव्यों का निर्वहन अच्छे ढंग से किया।

पिता: उनके पिता का नाम काजी जलाउद्दीन काशानी है।
और जो अपने पिता कुतुब उद्दीन काशानी की मृत्यु के बाद अवध के काजी बने।

वंशावली रिकॉर्ड:

काजी मोहिउद्दीन काशानी बिन काजी जलालुद्दीन काशानी बिन काजी कुतुबुद्दीन काशानी हजरत जैद बिन असई बिन सैयद इब्राहिम बिन सैयद मोहम्मद अस्सी बिन इमाम कासिम अस्सी बिन इब्राहिम तबा राजा तबरिस्तान बिन हजरत इस्माइल बिन हजरत इब्राहिम बिन हजरत उमर बिन कत्ताब बिन हजरत मुथाना बिन हजरत के बेटों में से इमाम हुसैन बिन हज़रत अली इब्न तालेब।

नाम: उनका नाम मोहिउद्दीन है, लेकिन वे काजी मोहिद्दीन खासानी के नाम से प्रसिद्ध थे।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पिता की देखरेख में हुई। उन्होंने अभिव्यक्ति का प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

पिता की मृत्यु : पिता की मृत्यु के बाद, वह अवध के काजी बन गए और इस पद के लिए उन्हें बहुत सम्मान दिया गया।

प्रतिज्ञा और खिलाफत : काजी के पद पर कुछ समय तक काम करने के बाद उनका मन दुनिया और दुनिया के मामलों से उब गया। उन्होंने हजरत निजामुद्दीन का शिष्य बनने का फैसला किया और इसलिए वे हजरत निजामुद्दीन औलिया की हजूरी में गए और हजरत ने उनकी प्रतिज्ञा स्वीकार की और बाद में उन्हें संत की पोशाक प्रदान की।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का तोहफ़ा : हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया को उनका अपना कम्बल दिया गया था। वे उसे बहुत सम्मान और आदर के साथ अपने घर ले आए। और उन्होंने उसे संभाल कर एक डिब्बे में रख दिया। कुछ दिनों बाद उन्होंने किताब खोली, कम्बल निकाला और उसे चूमा। और उसे अपनी आँखों पर रख लिया।

और उस कम्बल में बहुत खुशबू आ रही थी। इस तरह हज़रत उस डिब्बे को खोलकर कम्बल को देखते रहते थे।

और कई साल बीत गए, लेकिन कम्बल की खुशबू में कोई कमी नहीं आई। इस बात पर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। आखिर में उसने कम्बल को खूब धोया। वह कम्बल को इस हद तक धोएगा कि उसमें खुशबू की मात्रा बढ़ जाएगी। उसने यह घटना अपने आध्यात्मिक गुरु महबूब इलाही की मौजूदगी में बताई है। और जिन्होंने आंखों में आंसू भरकर कहा, «काजी साहब, यह मेरी हिम्मत है, जिसे अल्लाह के चाहने वालों की श्रेणी में रखा जाता है।»

नसीहतें: हज़रत महबूब इलाही को खिलाफत के कागजात दिए गए जिसमें कुछ नसीहतें इस प्रकार हैं। नीचे खिलाफत का एक कागज़ है, और उसका अनुवाद और व्याख्या नीचे दी गई है।

तुम्हें दुनिया छोड़ देनी चाहिए। दुनिया और दुनिया के लोगों से कोई रिश्ता नहीं रखना चाहिए। और जागीर नहीं लेनी चाहिए। और बादशाहों से इनाम नहीं लेना चाहिए। अगर तुम्हारे साथ मुसाफिर आएंगे, अगर तुम्हारे पास कुछ नहीं है, तो इस स्थिति को अल्लाह की कृपा और आभार समझो।

अगर तुम ऐसा करते हो और मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा करोगे तो तुम मेरे खलीफा हो। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह मुसलमानों पर खलीफा है।

एकांतवास और अविवाहित अवस्था : भक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करने और खिलाफत प्राप्त करने के बाद उन्होंने दुनिया, दुनिया के लोगों और दुनिया के व्यवहार को छोड़ दिया। वे एकांतवास और अविवाहित अवस्था की आदत के अनुयायी बन गए। उन्होंने काजी के पद से इस्तीफा दे दिया और महबू इलाही की मौजूदगी में कजियात का प्रमाण पत्र लाया और उसे फाड़ दिया।

राजा का प्रस्ताव : जीवन के स्रोतों को छोड़ने के बाद हज़रत को बहुत कष्टों का सामना करना पड़ा। निर्धनता और भूख की स्थिति आ गई। जीवन की शुरुआत तंगी और गरीबी से हुई। उनके एक भक्त ने बिना उनकी जानकारी के दिल्ली के राजा अलाउद्दीन खिलजी को उनकी स्थिति के बारे में बताया। जब उन्हें इस बारे में पता चला तो उन्हें अवध के काजी का पद देने का आदेश दिया गया, जो उनकी विरासत थी, और उन्हें बहुत सारे पुरस्कार और सुविधाएं दी गईं और उनके लिए अवध के काजी का प्रमाण पत्र तैयार किया गया। सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी

खिलजी ने उन्हें अवध का काजी का पद स्वीकार करने के लिए भरसक प्रयास किया।

निवेदन : जब उसे इस मामले में जानकारी हो गई तो वह हजरत महबूब इलाही के पास गया और उनसे सारा वाकया बयान किया कि सुल्तान उसकी इच्छा और मर्जी के बगैर उसे अवध का काजी बनाना चाहता था। इसलिए इस मामले में जो भी आपका हुक्म होगा, वही होगा।

जवाब : हज़रत महबूब इलाही को यह बात पसंद आई और उन्होंने उनसे कहा कि, "अगर तुम्हारे दिल में कोई ख़तरा था। तो इस वजह से इस मामले में यह घटना घटी।"

उस पर दुख का असर था कि हज़रत महबूब इलाही ने उससे ऐसी बात क्यों कही। वह अपनी ज़िंदगी इतनी ग़रीबी और गरीबी में गुज़ार रहा था। और ग़रीबी और भूख का पीछा करता था। और ग़रीबी को गर्व और ख़ुशी की बात समझता था।

11. हज़रत ख़ाजा कमालुद्दीन

हज़रत ख़ाजा कमालुद्दीन रहस्यवाद में निपुण थे और वास्तविकता में भी उनका दबदबा था।

पारिवारिक विवरण: वह हज़रत नासिर उद्दीन चिरगाह देहलवी की बेटी के बेटे थे और उनका परिवार अवध का निवासी था, और उनका आनुवंशिक रिकॉर्ड हज़रत इमाम हुसैन तक पहुँच गया।

पिता का नाम: उनके पिता का नाम अब्दुल रहमान है।

उसकी माँ : जो राबिया की एक धर्मपरायण महिला की तरह थी।

उनके भाई का नाम ज़ैनुद्दीन है, जो हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी के ख़िलाफ़तदार थे।

जन्म स्थान: उनका जन्म अवध में हुआ था।

उनकी उपाधि: वे ज्ञान के महान व्यक्ति थे, और बहुत अधिक ज्ञान के कारण, वे अल्लामा (विद्वान व्यक्ति) के रूप में प्रसिद्ध हो गए। वे दिल्ली आए और हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य बन गए। और उनसे उन्होंने खिलाफत की एक संत की पोशाक प्राप्त की। उन्होंने हज़रत नसीरुद्दीन चिराग देहलवी से भी संत की पोशाक प्राप्त की।

अहमदाबाद में रहना: खिलाफत की संत जैसी पोशाक पहनकर वे अहमदाबाद चले गए। जहाँ वे सही मार्ग के मार्गदर्शन के कार्य में लग गए। और बड़ी संख्या में लोग उनकी भक्ति की परिधि में शामिल हो गए।

पवित्र स्थानों की यात्रा: उन्होंने 7 बार हज यात्रा की और मदीना में पैगम्बर मुहम्मद की मजार पर गए। वे यरुशलम गए। खुरासान की यात्रा करके वे दिल्ली वापस आए। इस यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात कई अमीर लोगों और शासकों से हुई। और उन्होंने उनका बहुत सम्मान किया।

विजयें: उनकी विजयों की स्थिति ऐसी थी कि जब वे दिल्ली वापस आये, उस समय उनके साथ

उसके साथ ऊँटों पर 30 बोझ माल और सामान था, जिसमें 30,000 सोने के सिक्के और रुपए थे।

और यह देखकर हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी ने कहा, "शेख़ कमाल, तुम यह दुनिया अपने साथ क्यों लाए हो?" उन्होंने जवाब दिया, "मुझे रास्ते में ही पता चल गया था कि शेख़ निज़ामुद्दीन दुनिया छोड़कर चले गए हैं। और उनकी जगह तुम कस्टोडियन सीट पर बैठ गए हो। अगर मैं ख़ाली जाऊँगा तो मेरे रिश्तेदार और दूसरे लोग इस मामले में कुछ कहेंगे। और इसी वजह से मैं अपने साथ सामान और सामान लाया हूँ। और अब मैं इन चीज़ों को विद्वानों, पवित्र लोगों और ग़रीबों में बाँट दूँगा। इसलिए उन्होंने ऐसा किया है।

तातार खान उसे उपहार के रूप में 80 रुपये दैनिक भत्ता देना चाहता है। और इस मामले में उसने उसे आदेश की एक प्रति दी है। उसने हज़रत चिराग देहलवी की मौजूदगी में आदेश की प्रति ली और उससे पूछा कि इस मामले में क्या करना है। हज़रत चिराग देहलवी ने उससे कहा, « बिना मांगे और बिना इरादे के तुम्हें पेंशन मिल गई है। » तो यह उसकी जीत की रकम है। इसलिए तुम इसे स्वीकार करो।

अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेशानुसार उन्होंने पेंशन राशि स्वीकार कर ली है।

विवाह एवं पुत्र : हज़रत चिराग देहलवी के आदेशानुसार उन्होंने विवाह किया। उनके तीन पुत्र और एक पुत्री हुई। उनके बड़े पुत्र शेख निज़ामुद्दीन की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई। उनके दूसरे पुत्र शेख नसीरुद्दीन ने उनके जीवनकाल में ही ज्ञान प्राप्त कर लिया। हज़रत के तीसरे पुत्र शेख निज़ामुद्दीन ने अपने जीवन काल में ही ज्ञान प्राप्त कर लिया।

बेटा शेख सिराजुद्दीन है. उनकी बेटी की शादी शेख बुरहानुद्दीन से हुई थी।

मृत्यु : 27 ज़काद सन 756 हिजरी को उन्होंने इस नश्वर संसार को छोड़ दिया। उनकी कब्र दिल्ली में हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी की कब्र के पास स्थित है, जहाँ बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

उनकी जीवनी : वे चमत्कारों की शख़्सियत थे। वे दरवेश थे, जिन्हें इजाज़त का अधिकार था। वे एक महान विद्वान व्यक्ति थे। वे अपने समय के मार्गदर्शक थे। हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी उनका बहुत सम्मान करते थे। अगर रास्ते में कोई मिल जाए तो हज़रत नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी वहाँ रुक जाते थे।

हज़रत बंदे नवाज़ ने अपनी किताबों में उनकी कई खूबियों के बारे में लिखा है। हज़रत मकदूम जहाँ जहानिया जहान ग़स्त ने उनकी किताब 'शरह मशारिक़ अनवार' का अध्ययन किया है।

शिष्य और भक्त : मौलाना अहमद थानेसरी, मौलाना पानीपति, तत्रार खान और मौलाना सागरिज़ा मुल्तानी उनके शिष्यों में से थे।

सुल्तान फिरोज शाह, सरदार, मंत्री, सेनापति और खास लोग, संक्षेप में कहें तो सभी उनके भक्त थे। नसीरुद्दीन चिराग देहलवी द्वारा दिए गए हजरत मकदूम जहानिया जहान गैस्ट की खिलाफत के कागजात उनके द्वारा लिखे गए थे।

12.हजरत मकदूम समीउद्दीन सुहेरवर्दी देहलवी

हज़रत मकदूम समीउद्दीन सुहेरवर्दी देहलवी हिदायत की महफ़िलों का नूर हैं। और अपने ज़माने के भरोसेमंद सदस्य हैं। और राज़दारों के शख़्स हैं और मुक़द्दस लोगों के ताज हैं। और परहेज़गार लोगों का सूरज हैं।

पारिवारिक विवरण: उनकी वंशावली 16वीं श्रृंखला में मुसैब बिन जुबैर के साथ इस प्रकार जुड़ी हुई है।

"मकदूम समीउद्दीन बिन मौलाना शेख फखरुद्दीन बिन शेख जमालुद्दीन बिन इस्माइल बिन इब्राहिम बिन शेख हसन बिन ईसा बिन नूह बिन मोहम्मद सुलेमान बिन दाऊद बिन याकूब बिन अयूब बिन हादी बिन ईसा बिन मुसैब बिन जुबैर।"

पिता का नाम: उनके पिता का नाम शेख फखरुद्दीन है और वे सैयद सदरुद्दीन मोहम्मद उर्फ राजू कट्टाल के शिष्य थे।

भाई: मौलाना मकदूम शेख इशाक देहलवी उनके बड़े भाई हैं।

जन्म: उनका जन्म 808 हिजरी में मुल्तान में हुआ था।

उसका नाम समीउद्दीन है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उन्होंने मौलाना सनाउद्दीन के एक प्रसिद्ध शिष्य से अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त किया है, जो मीर सैयद शरीफ जिरजानी के शिष्य थे।

और उन्होंने हदीस, इस्लामी में पूर्णता प्राप्त की है

न्यायशास्त्र, और पवित्र कुरान की व्याख्या। वह पूर्णता के साथ-साथ समय के महानतम व्यक्तियों में से एक थे। उन्होंने अपने पिता से अंतरतम का ज्ञान प्राप्त किया था। 12 वर्ष की आयु में, आधी रात को, उनके पिता उन्हें अपने विशेष कमरे में बुलाते थे और सलाह और परामर्श देते थे। और अल्लाह की शिक्षा और संकेतों और बिंदुओं के रहस्य। और उसके लिए, वह अत्यंत विनम्रता के साथ प्रार्थना करता था, इस प्रकार?

"हे अल्लाह, सरमादी की अनंत खुशी और धन के लिए बहुत दयालुता और महान एहसान के कारण।"

शिक्षा और प्रशिक्षण: हालाँकि उनके पिता उनके आध्यात्मिक गुरु थे। लेकिन उन्होंने खिलाफत, संत की पोशाक और मार्गदर्शन शेख कबीर उद्दीन इस्माइल से प्राप्त किया। और शेख कबीर कौन हैं? वह शेख कबीर की उपस्थिति में गए और खिलाफत के लिए अनुरोध किया। और उनसे कहा, इस तरह, इस मामले में उनकी पूर्णता में कोई कमी नहीं होगी।

यहाँ एक फ़ारसी दोहा है, और इसका अनुवाद और व्याख्या इस प्रकार है।

सूर्य के प्रकाश में कोई कमी नहीं होगी।» बदख्शां में पत्थर का माणिक्य में रूपांतरण हो सकता है।

हज़रत कबीर ने उससे कहा कि वह अपने भाई शेख़ फ़ज़ल्लाह से उसके लिए एक संत की पोशाक लाएंगे। उसने कुछ समय तक यही कहा, लेकिन उसे वही जवाब मिला। आख़िरकार, एक दिन उसने उससे कहा,

आधार भक्ति, आध्यात्मिक व्यवहार

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध हृदय के सम्बन्ध के कारण है। मैंने हज़रत के साथ यह सम्बन्ध पक्का और सीधा पाया।

यह एक फ़ारसी दोहा है, और इसका अनुवाद और व्याख्या इस प्रकार है।

"चाहे एहसान हो या न हो, मैं आपका दरवाज़ा नहीं छोड़ूँगा। मैंने आपका दरवाज़ा पकड़ लिया है। और मेरे पास दूसरा दरवाज़ा नहीं है।"

यह सुनकर हजरत कबीर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे बगल से पकड़ कर अपने खास कमरे में ले जाकर शिष्य का दर्जा दिया। उसे सलाह दी और दो रकात नमाज अदा करने के बाद उसे एक खास संत जैसी पोशाक पहनाई।

विशेष साधु वेश पाकर उनके मन में आया कि प्रकट की शिक्षा छोड़कर अन्तरतम के समन्वय में लग जायें।

उनके आध्यात्मिक गुरु उनकी सोच को जानने में सक्षम थे, और उन्होंने उनसे कहा। "धर्म की नींव और धर्म का आधार ज्ञान के कारण विद्यमान है।" इसलिए इसे मत छोड़ो। मैं अल्लाह से कामना करता हूँ कि तुम प्रकट और अंतरतम दोनों से लाभ प्राप्त करो। रहस्यवादी मार्ग के हमारे आध्यात्मिक गुरुओं के रूप में, जो सीने की कृपा और अर्थ के ज्ञान के धन से लाभ प्राप्त कर रहे थे। मुझे आशा है कि तुम सुशोभित और अलंकृत होगे।"

रहस्यमय मार्ग का आनुवंशिक क्रम

जो हजरत शेख सुहाबुद्दीन सुहरवर्दी से जुड़ा हुआ है।

उनके पिता शेख फखरुद्दीन के शिष्य समाउद्दीन और शेख कबीर, हजरत सदरुद्दीन मोहम्मद उर्फ राजू कत्ताल, सैयद अहमद कबीर, हजरत शेख रुकनुद्दीन अबुफतह, शेख सदरुद्दीन आरिफ, शेख बहाउद्दीन जकारिया और शेख सुहाबुद्दीन सुहरवर्दी।

निवास का परित्याग: वह मुल्तान से चले गए और कुछ समय तक अंताबुर और बयाना में रहे।

सुल्तान बहलुल लोधी के शासन के दौरान वह दिल्ली आकर बस गये।

दिल्ली के राजाओं की उपस्थिति: सुल्तान बहलुल लोधी उनकी उपस्थिति में आए, और उन्होंने उन्हें निम्नलिखित सलाह दी:

"हे राजा, तुम्हें बुढ़ापे में राज्य मिला है, इसलिए अल्लाह से डरो। झूठ और पाप से दूर रहो। अल्लाह को धन्यवाद दो। और धन्यवाद की कृपा बढ़ाओ। कुरान में इसका उल्लेख है: लैन शुकरतुम ला यजीदकुम। » यदि तुम मेरा धन्यवाद करोगे, तो मैं और अधिक दूंगा। पापों से दूर रहो।

'लैन कुफर्तुम एना अज़ाबी लिल-शादिद।' 'यदि तुम कृतघ्न होगे, तो मैं तुम्हें कठोर दण्ड दूँगा।'

उसने राजा को अपनी विशेष प्रार्थना चटाई दी, जिसे उसने अपने सिर पर रखा और वहां से चला गया।

सुल्तान बहलुल लोदी की मृत्यु के बाद उसका पुत्र निजाम लोदी खां दिल्ली राज्य की गद्दी पर बैठा और स्किंदर लोदी की उपाधि से प्रसिद्ध है। दिल्ली से प्रस्थान के समय वह उसके आशीर्वाद के पास गया और उससे अपने द्वारा लिखी पुस्तक 'मियाज़ान तसरफ़' का अध्ययन करने का अनुरोध किया।

उसके बहाने का अध्ययन करके, वह 'अस्ससदक अल्लाहु फ़े दारैन' का अर्थ जानना चाहता है। उसने कहा, "अल्लाह आपको दोनों दुनिया में एक नेक इंसान बनाए।" » सुल्तान ने उसे दोहराने के लिए कहा है। इस तरह, उसने इसे तीन बार दोहराया। फिर उसके हाथों पर चुंबन किया गया। फिर मैंने उससे विनम्रता से कहा कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है, क्योंकि वह आपकी पवित्र जीभ से यह कहना चाहता था। हज़रत को आपके उच्च स्तरीय व्यवहार बहुत पसंद आए, और फिर उन्होंने कुछ समय के लिए वह्य किया, और उन्होंने इसे अनुग्रह की जीभ से कहा। "निज़ाम, मैं अल्लाह से एक इच्छा रखता हूँ कि वह आपको समय का स्किंडर बनाए। बहुत से मानव जाति के लोग आपसे लाभ उठाते हैं।"

इसलिए वह निजाम खान स्किंदर लोदी के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

विवाह और पुत्र: उनके दो पुत्र हैं, एक अब्दुल्लाह बियाबानी और दूसरे पुत्र हजरत नसीरुद्दीन, जो उनके उत्तराधिकारी बने।

अंतिम दिन: उनके खास शिष्य और खिलाफत शेख जमाली मक्का की यात्रा से आए थे। और उन्हें अपने बड़े बेटे शेख अब्दुल्ला बियाबानी से मिलने की उत्सुकता दिखाई दी। उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाना चाहा। यह सुनकर हजरत बहुत खुश हुए। उन्होंने उनके शरीर को अपने सीने से लगाया। उन्हें एक खास उपहार दिया गया।

उसके लिए पोशाक। उसने एक पत्र लिखकर उसे दिया है। और उस पत्र पर, जिसने फ़ारसी में एक दोहा और आधा दोहा लिखा है, उसका अर्थ और व्याख्या इस प्रकार है:

'महासागर में मेरे पास कोई शक्ति नहीं है।'

अगले दिन उन्होंने शेख जमाली को बुलाया और कहा, "अल्लाह जानता है, तुमने मेरे बेटे अब्दुल्ला बियाबानी को नहीं देखा। मैं नहीं चाहता कि तुम मुझसे अलग हो जाओ। मेरे अंतिम संस्कार में शामिल हो जाओ।"

मृत्यु: उपरोक्त घटना के एक सप्ताह बाद 17 जमादि अव्वल सन् 901 हिजरी को हज़रत इस दुनिया से चले गये।

- कब्र: अपनी मृत्यु से कुछ साल पहले, उन्हें सपने में हजरत बख्तियार काकी दिखाई दिए, जो शम्सी जलाशय पर खड़े थे। और वे कह रहे थे, "यह आपकी जगह है।" इसलिए, उनकी रौशनी वाली कब्र दिल्ली में शम्सी जलाशय के पास मेहर वाली में स्थित है, जहाँ बड़ी संख्या में लोग आते हैं। उनकी पुण्यतिथि पर हर साल जश्न मनाया जाएगा। मदा तारीख के शब्दों का सेट (जिसमें प्रत्येक अक्षर से जुड़ी संख्याओं को एक साथ जोड़कर एक निश्चित वर्ष प्राप्त होता है)

मादा की तारीखें 'क़ज़ा', 'महताब जन्नत' और 'आरिफ़ मुत्तक़ी' हैं।

उनके प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध खलीफा इस प्रकार हैं:.

हज़रत नसीरुद्दीन, मौलाना शेख जमाली, और शेख अज़ान।

जीवनी विवरण: उन्हें इस्लाम और रहस्यवादी कानून का व्यापक ज्ञान है। उनकी उदारता का आलम यह था कि उनके पास कई हज़ार रुपए हुआ करते थे, लेकिन वे जीत की रकम से बचत करके उनका इस्तेमाल नहीं करते थे। वे सारा पैसा फ़कीरों, ग़रीबों, ज़रूरतमंदों और अनाथ लोगों पर खर्च करते थे।

हज़रत लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ऋण लिया करते थे। उनके व्यक्तित्व में आंतरिक और बाह्य गुण अच्छे गुणों से जुड़े हुए थे। हज़रत शेख अब्दुल हक़ मुहादित देहलवी ने कहा, हज़रत समीउद्दीन को संयम और तक़वा का व्यापक ज्ञान था, साथ ही रीति और वास्तविकता का भी ज्ञान था, और उनके उपयोग का जुनून काफ़ी था। जब वह किसी बीमार व्यक्ति को अपनी नज़र से देखते हैं, तो उसे कोई बीमारी या सीने की शिकायत नहीं होती। जब वह छात्र की तरफ़ देखेंगे, तो उनकी कमीज़ का किनारा फूलों की उसकी इच्छा और ज़रूरत पूरी होने की उम्मीद से भरा होगा।

ज्ञान के प्रति लगाव: उन्होंने 'लामत शेखुद्दीन इराकी' की पुस्तक पर हाशिये पर लेख लिखा है। तथा एक पत्रिका 'मफतल इसरार' ज्ञान का ज्ञापन है।

उनकी शिक्षाएँ इस प्रकार हैं:

तीन लोगों को वही के सवाब से दूर रखा जाएगा। पहले वे बूढ़े लोग जो गुनाहों में लिप्त हैं।

दूसरे, वे युवा लोग जो पश्चाताप की आशा से अपने पापों को नहीं धो रहे हैं। तीसरे, झूठा राजा।

उनका सच्चा कथन है: :चेहरे को चपटा करने का अर्थ डेनिश लोगों की एक स्थिति के लिए एक विकल्प है। और यदि अनुसरण करने की क्षमता नहीं होगी तो उनके कथनों, कार्यों और कर्मों का अनुसरण किया जाना चाहिए ताकि दरवेश के दृष्टिकोण का प्रभाव अंतरतम की दुर्भावना के जस्ता को बाहर निकाल दे।

क़िराअत और वज़ाइफ़: हज़रत आधी रात को उठते और वुज़ू करके नमाज़ पढ़ते। और रात का एक हिस्सा सुपुर्द-ए-खाक की नमाज़ों में गुज़ारते। फिर सुबह तक वह्यत में मशगूल रहते। वह जज़र, सज़ा और इशराक़ की नमाज़ें पढ़ते। ज़ुहर की नमाज़ पढ़ते और असर की नमाज़ के बाद वह्यत में मशगूल रहते। मगरिब की नमाज़ सुनकर उनकी आँखें खुल जातीं। और मगरिब और अवबीन की नमाज़ें अदा करने के बाद हज़रत फिर वहीत में मशगूल हो जाते। ईशा की रात की नमाज़ अदा करने के बाद हज़रत अपने घर चले जाते।

हज़रत शेख़ जमाली मक्का से गुजरात वापस आए और कहा, "धन्यवाद जमाली, मक्का की यात्रा करके वापस आ जाओ।" कुछ दिनों बाद, वहाँ से एक व्यक्ति वापस आया और उसने मुझे बताया कि शेख़ जमाली वहाँ पहुँच गए हैं।

हजरत जमाली ने बताया कि यात्रा के दौरान उन्हें कई खतरों का सामना करना पड़ा। कई बार तो ऐसा हुआ कि उन्हें

अपने जीवन से निराश था। और ऐसे मौकों पर, वह वहाँ अच्छा दिख रहा था। और वह उसे खुश होकर पान खिला रहा था और उसका हौसला बढ़ा रहा था। और उसे संतुष्ट कर रहा था।

हज़रत जमाली ने कहा कि उनकी मदद और सहायता के कारण मुसीबत तुरंत आराम में बदल गई।

13. खाजा बाक़ी बिल्लाह

खाजा बाक़ी बिल्लाह वास्तविकता का सूर्य है। और वह रहस्यवादी तरीके से बाज़ है। और इस्लामी कानून के तहत जीवन। और गरिमा और अच्छी क्षमताओं का एक उच्च स्तर।

पारिवारिक विवरण : उनके दादा की ओर से, उनकी वंशावली का संबंध खाजा अहरार के दादा शेख दागस्थानी तक जाता है। उनकी दादी का संबंध सादात परिवार के सदस्यों से है।

उनके पिता का नाम काजी अब्दुल सलाम है। हजरत काजी साहब काबुल में रहते हैं। और वे विद्वान व्यक्तियों और सिद्ध व्यक्तियों की श्रेणी में आते हैं। सूफीवाद, कुरान की व्याख्या और इस्लामी न्यायशास्त्र में वे एक मिसाल थे। धार्मिक श्रेष्ठता के साथ काजी दुनिया के मालिक थे और उनके पास बहुत सी श्रेष्ठताएँ थीं।

जन्म: उनका जन्म अफगानिस्तान के काबुल में हुआ था। उनकी जन्मतिथि में अंतर है। कुछ लोगों ने उनकी जन्मतिथि 971 हिजरी लिखी है, तो कुछ लोगों ने 972 हिजरी लिखी है।

उनका नाम सैयद रजीउद्दीन था और वे खाजा बाकी बिल्लाह के नाम से प्रसिद्ध थे।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उनके पिता उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण के प्रति लापरवाह नहीं थे। जब वह पाँच वर्ष के थे, तो उन्हें स्कूल में भर्ती कराया गया था। उन्होंने स्कूल में कुरान की पढ़ाई पूरी की। प्राथमिक शिक्षा पूरी होने पर, वह मौलाना सादिक हलवाई की उपस्थिति में चले गए। और उनके साथ वह काबुल से मावरा नहर चले गए। अभी भी प्राथमिक ज्ञान समाप्त नहीं हुआ था, लेकिन उस समय उन्होंने रहस्यवाद के मार्ग पर अपना कदम रखा था। मावरा नहर में ज्ञान की बैठक में, उत्कृष्टता के एक सदस्य ने प्रारंभिक ज्ञान के जल्दी छोड़ने पर खेद व्यक्त किया। जब उसने यह सुना, तो उसने उससे कहा कि वह कोई भी कठिन किताब पेश करे अगर वह उसे संतुष्ट नहीं करती और खुश नहीं करती है, तो इस मामले में उसका खेद उचित है।

हक़ीकत की तलाश में हज़रत ने मावरा नहर में ज़ाहिरी इल्म सीखने की बजाय अंतरतम के इल्म की तलाश शुरू कर दी। मावरा नहर में दरवेश, फ़कीर और पवित्र लोगों की तलाश की जाती थी। और इसी तलाश में वे बलक़, बदकशाँ और समरकंद गए। वे लखनऊ भी गए। पवित्र लोगों की कृपा और आशीर्वाद से उन्हें फ़ायदा और मदद मिली।

व्यक्ति. इनमें खाजा ओबेद उल्लाह भी शामिल हैं। हज़रत अमीर अब्दुल्ला बालकी, हज़रत शेख समरकंदी और शेख बाबाई उल्लेखनीय हैं।

मज्जूब (निडर व्यक्ति) से मुलाकात: लाहौर में एक मज्जूब व्यक्ति रहता था। उसने इस मामले में उससे मिलने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। अंत में, उसने उसे बुलाया, उसके लिए बहुत प्रार्थना की और उसे बहुत-सी कृपाएँ दीं।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: वे लाहौर से मर वा नहर गए। उन्हें ख्वाबों में हजरत खाजा अमंगी दिखाई देते थे और वे उनसे बातें करते थे। "अरे बेटा, हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। इसलिए जल्दी से मीटिंग में आ जाओ ताकि तुम्हें यहां देखने के लिए इंतजार करने की टेंशन न रहे।"

वह जल्द ही हज़रत खाजा अमंगी के आशीर्वाद की उपस्थिति में चला गया। उसके हाथ पर वचन दिया गया। हज़रत खाजा अमंगी ने उसे तीन दिन और रात दरगाह की इमारत में रखा। और इन दिनों, वह एकांत में रहता था। इन दिनों में, वह हज़रत खाजा अमंगी की स्थिति और स्थिति के बारे में अच्छी तरह से जानने में सक्षम था। उसने एहसानों और अन्य लाभों से बहुत लाभ उठाया। उनके आध्यात्मिक गुरु ने उन्हें खिलाफत दी थी।

यह भी कहा जाता है कि हजरत खाजा बहाउद्दीन नक्शबंदी की आत्मा पर विजय प्राप्त करने पर उन्हें इस मामले में लाभ हुआ था।

भारत में रहना: अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेशानुसार वे भारत आए। वे दूसरी बार लाहौर गए और वहां एक साल तक रहे। वे लाहौर में अपना घर छोड़कर दिल्ली चले गए। वे दिल्ली में फिरोजी के किले में रहे।

वह फिरोजी की मस्जिद में पाँच वक्त की नमाज़ अदा करते थे।

विवाह और बेटे: उनकी दो शादियाँ हुईं। और उनके दो बेटे हुए। हज़रत ख़ाजा ओबेदल्लाह एक पहली पत्नी से हैं, और हज़रत ख़ाजा अब्दुल्ला दूसरी पत्नी से पैदा हुए। हज़रत ख़ाजा अब्दुल्ला अपने भाई हज़रत ख़ाजा ओबेदल्लाह से चार साल छोटे हैं। ये दोनों भाई जब दो साल के थे, तभी उनके पिता इस नश्वर दुनिया से चले गए।

मृत्यु: हजरत मुहम्मद साहब ने 25 जमादि अल-आखिर सन 1012 हिजरी को इस नश्वर संसार को छोड़ दिया । उनकी मृत्यु के समय उनकी आयु चालीस वर्ष थी। उनकी कब्र दिल्ली में है, जहां खास और आम लोग आते हैं।

उनके खलीफा: उनके खलीफाओं में शेख अहमद सरहिंदी भी हैं, जो मुजादिद अलिफ थानी की उपाधि से प्रसिद्ध और मशहूर हैं। जो सभी खलीफाओं में सबसे महान विद्वान होने के साथ-साथ सिद्ध और प्रसिद्ध भी थे। उन्हें शेख अहमद सरहिंदी ने सलाह दी थी कि वे अपने दोनों बेटों को कुछ दिनों के लिए अपने साथ रखें और उन दोनों को ज्ञान और प्रशिक्षण दें, और उनके अन्य प्रसिद्ध खलीफा इस प्रकार हैं:

1. शेख ताजुद्दीन संभली 2. खाजा हुसामुद्दीन 3. शेख अल-इहदाद।

जीवनी विवरण: हज़रत बाक़ी बिल नक्शबंदिया के ज़ंजीरों में एक प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध पद पर थे। भारत में नक्शबंदिया के ज़ंजीरों की प्रसिद्धि का कारण उनका व्यक्तित्व और विशेषताएँ हैं। ध्यान, अत्यंत विनम्रता, शील और दीनता से वे अद्वितीय थे। उन्हें एकांत पसंद था।

हज़रत ख़ामोशी और कम बातचीत की हालत में रहते थे।

और दरवेश, विद्वान और सआदत लोगों को बहुत सम्मान और आदर देते थे। स्नेह, दया और क्षमाशीलता में वे अद्वितीय थे। आदत की स्थिति यह थी कि वे दूसरों की कठिनाई को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। धैर्य और नम्रता, संयम और आत्मनिर्भरता, उदारता, सादगी और देखभाल में वे एक महान, अद्वितीय उदाहरण थे। वे खुद को पूजा और रहस्योद्घाटन में व्यस्त रखते थे। वे एकांत का एक उच्च स्तरीय उदाहरण थे। उनकी गरिमा और शालीनता उनके चेहरे से देखी जा सकती है। और उनकी महानता और उच्च श्रेणी की स्थिति के लिए, इस मामले में सभी प्रसिद्ध थे।

ज्ञान का शौक: उन्होंने एक पत्रिका लिखी थी।

यह पत्रिका "वा हुवा मकम ईनामा कुंटुम और ईनामा तवल्लु फ़सुमा वजाइहा लिल्लाहि" कविता की व्याख्या के बारे में है। उनके पत्रों से ज्ञान के प्रति उनके लगाव का पता चलता है। उन्हें कविता का भी शौक है।

उन्होंने अपने दोनों बेटों के जन्म पर स्तुति-पत्र लिखा है।

उनकी शिक्षाएँ: नक्शबंदिया की सूफी श्रृंखला की नींव कुछ सुधारों पर रखी गई है। जो इस प्रकार हैं:.

1. होश दाम (सांस लेने के प्रति जागरूकता) 2. नज़र बर क़दम (कदमों पर नज़र रखना) 3. सफ़र दार वतन (मातृभूमि में यात्रा करना) 4. खिलवत दार अंजुमन (साथ में सेवानिवृत्ति) 5. याद करू (याद रखना, अभ्यास याद रखना)) 6. बाज़ गस्ट (संयम)

7. निगरानी (सतर्कता) 8. याद दस्त (स्मृति बनाए रखना)।

उपरोक्त के अतिरिक्त, तीन अन्य सुधार भी हैं, जो इस प्रकार हैं।

1. वक़ुफ़ ज़मानी (समय-रुकना) 2. वक़ुफ़ क़लबी (दिल-रुकना)
3. वक्फ अदादी (नम्बर-हॉल्ट)।

उनकी शिक्षाएं अल्लाह की वास्तविकता और ज्ञान के खजाने से भरी हुई हैं।

अल्लाह का भरोसा: उन्होंने कहा कि यह भरोसा संसाधनों को छोड़कर बैठ जाने का नहीं है। बल्कि इसका मतलब है इस्लामी कानून के अनुसार संसाधनों का उपयोग करना। और साधनों को न देखना।

छोड़ना: छोड़ने का अर्थ है कि हृदय को शब्द और श्रवण के सभी प्रभावों से दूर कर देना चाहिए।

और हर परिस्थिति और हर नज़रिए से दूर और उदासीन रहना चाहिए और अल्लाह की तरफ़ आकर्षण और स्थायी उदासी होनी चाहिए।

स्वर्णिम कथन

1.तपस्वी कर्म स्वार्थपूर्ण चीजों से दूर रहना है।

2.बेतुकी चीजों से दूर रहना। जरूरत के हिसाब से चीजों पर सामग्री होनी चाहिए। खाने-पीने की चीजों के साथ-साथ जीवित चीजों से भी दूर रहना चाहिए।

3. धैर्य को आत्मा के स्वाद से दूर रखना।

4.और प्रेम और प्रेम की वस्तुओं से दूर रहना।

पीर तीन प्रकार के होते हैं।

1. संत वेश के पीर 2. शिक्षा के पीर 3. कंपनी के पीर

जिन्होंने अपनी गर्दन झुका ली और परमेश्वर की इच्छा को समर्पित कर दिया, और उन्होंने विपत्ति और परेशानी को विपत्ति और परेशानी के रूप में नहीं देखा।

द्वापर युग महान धन है, जो हृदयों में लोकप्रियता का कारण बनेगा।

रोज़ाना की तिलावत और वज़ैफ़ (सूफ़ीवाद में, वज़ैफ़ कुरान की आयतों, दुआ की हदीसों और विभिन्न दुआओं का नियमित पाठ है। वज़ैफ़ का बहुवचन वज़ैफ़ है): याद के अलावा, हज़रत अस्बत मुजरिद भी पढ़ाते थे, जिसका मतलब सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र करना होता है। कुछ लोगों को नग़मा और पुष्टि के बिना

वह लोगों को ज़िकर कल्बी (एक अभ्यास जिसमें व्यक्ति अपने दिल में अल्लाह को याद करने पर ध्यान केंद्रित करता है) सिखाते थे और कुछ लोगों को 'ला इल्हा इल्लाह' और कुछ अन्य को अल्लाह के नाम पर पाठ करने के लिए कहते थे।

रहस्योद्घाटन और चमत्कार.

1. अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले उन्होंने कहा था कि नक्शबंदी के सूफी सिलसिले के एक महान व्यक्ति की मृत्यु होगी।

2. एक दिन घोड़ेवाले का बेटा उसके पास आया और बोला कि उसके पिता के पेट में बहुत दर्द है। उसने घोड़े के हक का काम पूरा नहीं किया।

और उससे घोड़े का हक वापस मांगो, फिर वह ठीक हो जाएगा। बेटा अपने पिता के हुजूर में गया और हजरत का हुक्म सुनाया। घोड़ेवाले ने हां कह दिया, लेकिन असल में उसने घोड़े का हक पूरा नहीं किया था। उसने घोड़े को कुछ अनाज और खली दी, तो वह उसी समय ठीक हो गया।

3. उसके मोहल्ले में एक व्यक्ति रहता था, उस पर शासक द्वारा अत्याचार और अत्याचार हो रहे थे। उसने उसे उसके घर से बेदखल करना चाहा। यह खबर उस तक पहुँची। उसने क्रूर शासक से कहा कि मोहल्ले में फ़कीर रहते हैं और यह कानूनी क्रूरता नहीं है। वह शासक शासन के नशे में इतना मस्त था कि उसे इस मामले में उसकी बात की परवाह ही नहीं थी। एक बार फिर हज़रत ने उसे सलाह दी,

लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ। दो-तीन दिन बाद उस क्रूर शासक को डकैती के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और उसे परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों सहित मार डाला गया।

14. हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहादीस देहलवी

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहादिस देहलवी अल्लाह के एक विद्वान व्यक्ति हैं। और वह अल्लाह के एक तपस्वी व्यक्ति हैं।
वह अपने समय के शेख होने के साथ-साथ सबसे विद्वान व्यक्ति भी थे।

पारिवारिक विवरण: वे बुखारा के एक सम्मानित परिवार से हैं। उनके दादा आगा मोहम्मद परिवार की संपत्ति के साथ-साथ श्रेष्ठता के भी स्वामी थे, साथ ही उनके पास आध्यात्मिकता और धन का ज्ञान भी था।

मध्य एशिया के लिए 13वीं शताब्दी थी, जो समस्याओं और कठिनाइयों का दौर था। और उस समय मार-काट और लूटपाट आम बात थी। उनके दादा बल के कारण बहुत परेशान थे और मुगल आक्रमणकारियों के कारण उन्हें इस कारण बुखारा छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। और वे भारत चले गए

राजा अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान, वह शाही दरबार में पहुँच गया। और सुल्तान अलाउद्दीन ने उसे और अन्य विशेष व्यक्तियों को गुजरात पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा। गुजरात पर विजय प्राप्त करने के बाद, वह वहीं बस गया।

उनके 101 पुत्र थे, जिनमें से 100 पुत्र मर गये।
इस हृदय विदारक घटना ने उन्हें गुजरात में रहने के लिए विवश कर दिया। वे अपने एक बेटे के साथ दिल्ली आ गए। 17 रब्बिल थानी सन 739 हिजरी को उनका निधन हो गया।

उनके पिता का नाम मौलाना सैफुद्दीन है। वह एक अच्छे कवि होने के साथ-साथ एक महान विद्वान व्यक्ति भी थे और वह अल्लाह के एक पवित्र व्यक्ति थे।

जन्म: इनका जन्म मुहर्रम माह 958 हिजरी में हुआ था। इनका नाम अब्दुल हक है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उनके पिता ने अपने बेटे की शिक्षा और प्रशिक्षण पर बहुत ध्यान दिया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पिता की उपस्थिति में हुई। वह बुद्धिमान थे। और उन्होंने कुछ ही महीनों में कुरान का पाठ पूरा कर लिया। वह कुछ ही महीनों में कुरान-का-पाठक बन गए। 18 वर्ष की आयु तक, उन्होंने अभिव्यक्तियों का ज्ञान पूरा कर लिया था।

हज यात्रा: हज यात्रा के प्रति उनका बहुत लगाव था। वे हज यात्री बनने के इरादे से दिल्ली से निकले थे। वे 996 हिजरी में अब्दुल वहाब मनकी के पास गए। उनसे उन्हें कृपा और आशीर्वाद मिला। उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

अब्दुल वहाब मनकी से अंतरतम की शिक्षा ली और उनकी मदद से रहस्यवाद की किताबें पढ़ीं। और, उनके मार्गदर्शन में, उन्होंने मक्का की भव्य मस्जिद में इबादत की है। वह खास जगहों पर जाते थे, और वहीं नमाज़ पढ़ते थे। और उन्होंने कहा, जब यह फ़क़ीर मक्का में पैगंबर के घर में था, जिसे खदजा के बैत के नाम से जाना जाता है। » और जो मक्का में बैत-अल्लाह की यात्रा के बाद मक्का में बहुत पवित्र है। जहाँ मैं जाता था और वहाँ खड़ा रहता था। और वहाँ फ़क़ीर लोगों की तरह रोता था। और कहता था, "अल्लाह के पैगंबर, कुछ दीजिए। हे अल्लाह के पैगंबर!

यह फ़क़ीर और तुम्हारा पुकारनेवाला। तुम्हारे दरवाज़े पर कौन खड़ा है? जो भी मन में आए। और जो भी ज़बान पर आए, वही पूछूँगा। और वहाँ से अपनी कमीज़ का पूरा किनारा भर लूँगा।"

प्रतिज्ञा और खिलाफत: उनके पवित्र पिता उनके पहले आध्यात्मिक गुरु थे। अपने पिता के आदेश के अनुसार, उन्हें सैयद मूसा गलानी के हाथों प्रतिज्ञाबद्ध किया गया था। और उनके विशेष ध्यान और देखभाल से उन्हें लाभ हुआ। जब वह मक्का गए, तो उन्हें शेख अब्दुल वहाब मनकी के हाथों प्रतिज्ञाबद्ध किया गया। कुछ दिनों के बाद, उन्हें क़ादरिया, चिश्तिया और शाज़लिया के सूफी सिलसिले की ख़िलाफ़त दी गई। इस तरह, वह क़ादरिया, चिश्तिया, शाज़लिया और नक्शीबंदिया की चार सूफी ज़ंजीरों से जुड़ गए।

खुशखबरी। उन्होंने कहा है कि पैगम्बर की निशानी के अनुसार हजरत अब्दुल कादिर जिलानी ने उन्हें अपना शिष्य बनाया। प्रतिज्ञा करने पर पैगम्बर ने उन्हें खुशखबरी दी।

फ़ारसी भाषा में □□□□ □□□□□ □□ कहकर ख़बर दी जाती है और इसका मतलब है कि वह बड़ा हो जाएगा।

दिल्ली वापसी: शेख अब्दुल वहाब मनकी का इशारा पाकर वे दिल्ली आ गए और उन्होंने दिल्ली में एक स्कूल की स्थापना की जिसमें धर्म की शिक्षा दी जाती थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन दिल्ली में बिताया, सही रास्ते की शिक्षा और मार्गदर्शन देने और पुस्तकों के लेखन और संकलन में बिताया।

उनके पुत्र: उनके पुत्र शेख नूर अल-हक, जो एक पवित्र व्यक्ति थे।

मृत्यु: हज़रत मुहम्मद साहब ने 12 रब्बिल अव्वल सन 1051 हिजरी को दुनिया से विदा ली। उनका मक़बरा नई दिल्ली में शम्सी जलाशय के पास दाहिनी ओर स्थित है, जो आम और ख़ास लोगों के लिए दर्शनीय स्थल है।

जीवनी: वे एक विद्वान व्यक्ति होने के साथ-साथ एक अच्छे इंसान भी थे। वे एक अच्छे व्यक्ति होने के साथ-साथ एक अच्छे व्यक्ति भी थे। हज़रत इबादत और रहस्यमयी अभ्यासों में बहुत ज़्यादा व्यस्त रहते थे। वे भारत में मुहादित (परंपराओं के विद्वान) के रूप में प्रसिद्ध और मशहूर थे। वे हदीस (पवित्र पैगंबर की परंपराओं) के ज्ञान में निपुण थे। उन्होंने इस ज्ञान को बढ़ाने के लिए कई प्रयास और कोशिशें कीं।

ज्ञान के प्रति उनका लगाव: उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों से उनके ज्ञान के प्रति लगाव का पता चलता है। कुछ लोगों ने बताया है कि उन्होंने 100 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी पुस्तकें

उन्होंने विभिन्न विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें इस प्रकार हैं।

1.उसूल हदीस 2.मराज बहरीन 3. रिसाला दार मसला समा 4.वाहिदत वजूद 5. अकबर अल-अखयार फ़े असरार अल-अबरार 6. लताइफ अल-हक 7. असमाइल अल-प्रतिद्वंद्वी 8. मदराज अल-नबवा 9. जामा बरकत 10. तकमिल अल-इमान

हदीस के बारे में उनकी शिक्षा: उन्होंने कहा कि सभी मुहादीस के संदर्भ में हदीस का प्रयोग पैगम्बरों के कथन और कार्य के साथ-साथ भाषण पर भी लागू होगा। किसी भी हदीस का प्रमाण जो पैगम्बर तक पहुंचेगा उसे मारफुफ कहते हैं। और जो सहाबी तक पहुंचेगा उसे मौकूफ कहते हैं। ताबाइन का प्रमाण (मुसलमानों की पहली पीढ़ी को मुहम्मद के सहाबी कहा जाता है ।) मुसलमानों की दूसरी पीढ़ी को ताबिउन "उत्तराधिकारी" कहा जाता है। तीसरी पीढ़ी को तबीउ अल-ताबिउन ("उत्तराधिकारियों के उत्तराधिकारी") कहा जाता है, जिसे मकतूह कहा जाता है। जो व्यक्ति हदीस से जुड़ा होता है उसे मुहादिथ कहते हैं और जो इतिहास से जुड़ा होता है उसे अखबारी कहते हैं।

हदीस के प्रकार: तीन प्रकार हैं: शाज़, मुनकर और मुआताल। असल ज़िंदगी में, हदीस के तीन प्रकार हैं:

1.सहीह 2.हसन 3.ज़ैफ़ (कमज़ोर)

रावी: उन्होंने कहा कि अगर सही हदीस का एक ही रावी हो तो उसे हदीस ग़रीब कहते हैं। अगर दो रावी हों तो उसे अज़ीज़ कहते हैं। और अगर दो रावी हों तो उसे अज़ीज़ कहते हैं।

दो से ज़्यादा रावीकार हों तो उसे मशहूर कहा जाएगा। अगर रावीकार ज़्यादा हों और वो बेहिसाब की श्रेणी में आ जाएँ तो उसे आदत महल कहा जाएगा। ऐसे झूठ के लिए सहमति को हदीस मुतवातिर कहते हैं।

छः किताबें: वे छः किताबें जो प्रसिद्ध हैं, निर्धारित हैं, और जिन्हें 'सहह सित्ता' कहा जाता है। उनके नाम हैं सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम, जामा तिर्मिज़ी, सानिन अबू दाऊद, नेसाई, और सुनीन इब्ज माजा, और कुछ लोगों के अनुसार इब्न माजा के स्थान पर मुता इमाम मालिक है।

सीधा रास्ता: उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए सुरक्षा का एक ज़रूरी रास्ता है, और छात्रों के लिए दृढ़ता का सबील (रास्ता) यह है कि उन्हें दर्शनशास्त्र के विचार के लिए अवैध सोचना चाहिए। उन्हें भाषण में बहुत ज़्यादा तर्क-वितर्क से बचना चाहिए और विवाद, तर्क-वितर्क करने वाले लोगों, युद्ध और लड़ाई के दरवाज़े बंद कर देने चाहिए।

सुन्नत और जमात के लोगों का ईमान सभी लोगों की दलीलों पर काफ़ी है। और उसी पर अमल करो। जहाँ तक इस्लामी कानून और किताब और सुन्नत के आदेशों में हिकमत का सवाल है, उसे बेमानी समझो।

और किसी बात को मक़ूल (तर्कपूर्ण) न बनाए, और तवील (व्याख्या) और तश्कीक (संदेह) से दूर रहे, और ईमान और भरोसे के दायरे से बाहर न जाए, और अपनी अक़्ल को अधूरी और अधूरी समझ से पुष्ट न करे।

सुन्नत और इस्लामी कानून तथा सूफीवाद का अनुपालन: ऐसी कोई सोच नहीं होनी चाहिए कि सूफीवाद इस्लामी कानून के साथ-साथ किताब और सुन्नत के भी विरुद्ध है।

भगवान न करे, दोनों समूहों में कोई मुख्य अंतर नहीं है।
दोनों में किसी भी तरह की कोई असमानता नहीं है। यह विशेष और संक्षिप्त है कि इस राष्ट्र के सूफी लोग स्पष्ट और अंतरतम रूप से सुन्नत के प्रकाश के लोग हैं और वास्तविकता के पर्दे खोलने वाले हैं। रहस्यवादी तरीके से, कार्य और स्थिति में और अर्थ की खोज में प्रमाणिकता और ईमानदारी में, संयम, शिष्टाचार और सभ्यता की जानकारी और डेटा को जानने के लिए आत्मा के धोखे को जानने वाले हैं जो अद्वितीय हैं।

सिवाय प्रकट और अंतरतम की शुद्धि, हृदय की एकांतता और आत्मा की शुद्धि के, और इनमें से कोई भी उनसे आगे नहीं जा सकता था। जहाँ तक उसके लिए कर्मों, परिस्थितियों, तौर-तरीकों, स्थिति, उत्साह और प्रेम, बातों, संकेतों, बल्कि उन सभी सिद्धियों का सवाल है जो उसकी मदद करती थीं और जो इस मामले में किसी भी समूह को नहीं दी गई थीं।

उनकी कुछ बातें इस प्रकार हैं।

1. सौभाग्य, सफलता, उच्च भाग्य और अच्छी किस्मत पवित्र व्यक्तियों के मिलन के लक्षण हैं।

2. आमतौर पर, सम्मान और आदर की भावना के कारण, एक व्यक्ति शांति और सौभाग्य की घाटी में रहेगा।

3. बिना सोचे-समझे बैठे रहना और बुद्धि के बल से काम न लेना भी बुरी बात है और शक्ति के नाश का कारण है।

4. अनुग्रह को महत्व न देना, जो अल्लाह के क्रोध का कारण है।

5. किसी एक चीज का ध्यान रखना और उसे एकदम ठीक-ठाक और बगल में रख लेना, जिससे उसकी हानि हो जाए।

6. हृदय की शांति ईश्वर के साथ एकता में है, तथा कठिनाइयां और परेशानियां यहीं अधिक हैं।

7. सबसे बुरी बात है मूर्ख लोगों के बीच बैठना। इस मामले में, मेरी राय में, मूर्ख वह व्यक्ति है जिसे पूर्णता का कोई दुःख नहीं है और अपनी स्थिति के लिए कोई पछतावा नहीं है।

8. संसार से प्रेम तथा ज्ञान और आज्ञाकारिता में विश्वास, बेवफाई और सही रास्ते से भटकाव का कारण हैं।

धार्मिक जप: वह इस आशीर्वाद को इस प्रकार पढ़ते थे:.

“अल्ला हुम्मा साले अला सैयदना मोहम्मद बड़ा कुल्ली ज़राती अलफ़ अलफ़ मर्रा।” इसका अनुवाद और व्याख्या है “हे पवित्र अल्लाह, हज़रत मोहम्मद पर सभी कणों के बराबर फ़ज़्ल बरसाओ, उन पर कई हज़ार बार।”

उन्होंने कहा है कि ज्ञान, शक्ति और दया अल्लाह के तीन गुण हैं। जो शिष्य लक्ष्य की तलाश में है और जिसके लिए वह है, उसे इन तीन गुणों की ओर ध्यान देना चाहिए और कृपा प्राप्त करनी चाहिए। लेकिन इन गुणों पर नज़र डालने का मतलब यह नहीं है कि उसकी आदतों में कोई समस्या आ जाए।

उन्होंने कहा है, "अल्लाह की एकता और उसके स्मरण की दिशा में देखना और कहना, 'ला इल्लाह इल्ला मोहम्मद रसूल अल्लाह'। और पूर्णता के साथ इसके जप में लगे रहना। और अल्लाह की इस याद में लीन रहना। उसके बाद, केवल 'ला इल्लाह इल्ला मोहम्मद रसूल अल्लाह' के स्मरण में लग जाना, और यदि संभव हो, तो वह स्वयं इस पर दृढ़ हो जाना और इसके लिए सहमत हो जाना, और फिर मोहम्मद का कोई वाक्य शेष नहीं रहेगा, और मैं नबी का ज़िक्र नहीं छोड़ सकता। और मैं 'ला इल्लाह इल्ला' के शब्दों पर रुक सकता हूँ क्योंकि नबी का प्रकाश 'ला इल्लाह इल्ला' के प्रकाश में है।

पैगम्बर की याद में व्यक्ति की पूर्णता और सुंदरता में वृद्धि होगी।

15.शाह कलीम अल्लाह शाहजहाँबादी

वह अल्लाह के दरबार में एक बन्दे के रूप में स्वीकार किया जाता है। वह विशेष गुणों वाले लोगों में क्रीम की तरह है। उसके रहस्यमय अभ्यास और प्रयास अनगिनत थे, और उसने अल्लाह के रहस्यों को सीखा है। और अल्लाह की शक्ति।

पारिवारिक विवरण: उनके पूर्वज तुर्किस्तान देश खजंद से थे ।

पिता का नाम: उनके पिता का नाम शेख नूर अल्लाह है।

उनका उल्लेख हाजी के रूप में किया गया है। इतिहासकारों की कुछ पुस्तकों में उनका नाम नूर अल्लाह लिखा गया है। भारत में सम्राट शाहजहाँ के शासन काल के दौरान, वह अपने समय के सबसे सफल, प्रसिद्ध और प्रसिद्ध इंजीनियर थे।

उनके पिता का वंशावली रिकॉर्ड: पैगंबर के पहले खलीफा के साथ उनके वंशावली रिकॉर्ड का संबंध इस प्रकार है।

शेख नूर अल्लाह बिन शेख अहमद बिन हामिद सिद्दीकी।

जन्म स्थान: इनका जन्म शाहजहानाबाद (दिल्ली) में 14 जमादि थानी सन 1060 हिजरी को हुआ था। इन्होंने अपने जन्म का विवरण 'रुकत कलीमी' नामक पुस्तक में दिया है, तथा गनी शब्द से इनकी जन्मतिथि मिलती है।

उन्हें शेख कलीम अल्लाह के नाम से जाना जाता है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: हदीस और इस्लामी न्यायशास्त्र का अध्ययन उन्होंने शेख अबू रजा से किया। इस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद, वे शेख अब्दुल फतह कादरी के पास गए; उन्होंने अंतरतम के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रयास किए। और कुछ समय बाद, वे अंतरतम के ज्ञान में निपुण हो गए।

उनके लिए हजरत शेख बुरहान उद्दीन उर्फ शेख बहलुल बिन कबीर मोहम्मद बिन अली सिद्दीकी बुरहानपुरी से शिक्षा और कर्म की अनुमति का सम्बन्ध है।

सत्य की खोज: उसकी मुलाक़ात एक संत से हुई। उस समय वह भी व्यस्तता से मुक्त नहीं था। उस संत ने उसे सरमद की वाणी सिखाई। सोठ (वाणी) सरमद को सोठ लयजल भी कहते हैं। योग (योग) ज्ञान में इसे अनहद कहते हैं। और व्यस्तता के काम से उसने ऐसी वाणी प्राप्त की है, और इस काम के बारे में उस संत ने उससे वह बात कही जो इस मामले में उसके पास नहीं थी। उसने उस संत से पूछा है कि उसे इस मामले में अपना लक्ष्य कब मिलेगा? और इस व्यस्तता के काम से वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाया। उसने वह व्यस्तता का काम छोड़ दिया है।

मज्जूब (निडर व्यक्ति) से मुलाकात : युवावस्था में वे खत्री (खत्री दक्षिण एशिया के पंजाब क्षेत्र के मालवा और माझा क्षेत्रों से उत्पन्न एक जाति है जो मुख्य रूप से भारत में पाई जाती है, लेकिन पाकिस्तान और अफगानिस्तान में भी पाई जाती है) नामक एक लड़के के प्रेमी और भक्त बन गए। खत्री दावा करते हैं कि वे योद्धा हैं जिन्होंने व्यापार करना शुरू किया। लेकिन उस लड़के ने इस मामले में उनकी ओर कोई ध्यान या परवाह नहीं की। शहर में एक मज्जूब व्यक्ति रहता था, और उसके बारे में यह कहा जाता था कि जब वह किसी व्यक्ति से कुछ भी स्वीकार करता है, तो उस मामले में उसका काम पूरा हो जाता है। वह अपने साथ कुछ मीठे पटाखे लेकर उसके पास गया। उस मज्जूब ने उसके मीठे पटाखे स्वीकार कर लिए। दूसरे दिन, जब उसने

उस लड़के के पास गया, लड़के ने उसे अपने पास बैठाया और उस पर बहुत उपकार किया गया। उस पर उसके उपकार का एक और प्रभाव हुआ। और उसका दिल उस लड़के से घृणा करने लगा।

हज़रत मज्जूब के सामने जाने लगे। एक दिन मज्जूब ने उन्हें अपने पास बुलाया और वह उनका सिर अपनी जाँघ पर रखकर बैठ गए। जब मज्जूब नींद से जागे तो उन्हें बहुत खुशी हुई। उन्हें लगा कि उनके अंदर कुछ खास बदलाव आ रहे हैं। जब वह मज्जूब के सामने गए तो मज्जूब को उनसे खतरा महसूस हुआ। वह उनके पास बैठे और उनसे कहा, "अगर तुम्हें इस तरह की आग चाहिए तो मेरे पास बहुत है, लेकिन याहियाह मदनी के पास पानी है। उनके सामने जाओ।"

तीर्थ यात्रा का शौक: जब मक्का और मदीना की यात्रा करने का शौक हुआ तो वे सन् 1101 हिजरी में मक्का गये और वहां से मदीना चले गये।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: वह एक कारवां के साथ थे, और वह नखलिस्तान में बैठे थे। हज़रत यहियाह मदनी को एक व्यक्ति को आदेश दिया गया कि एक व्यक्ति को लाओ, जिसका नाम कलीम है, जो यात्रियों के एक कारवां में शहर से बाहर है।

वह व्यक्ति वहाँ गया और पुकारा, लेकिन किसी ने उत्तर नहीं दिया। उसने पुकार सुनी, लेकिन उसे लगा कि वह व्यक्ति किसी और को पुकार रहा है। इसलिए वह चुप रहा। वह व्यक्ति वापस आया और हज़रत यहियाह मदनी से कहा कि ऐसा नाम का कोई व्यक्ति नहीं लगता। मैंने पुकारा, लेकिन किसी ने उत्तर नहीं दिया।

हज़रत यहियाह मदनी ने उस व्यक्ति से कहा कि कलीमल्लाह शाह जहाँनाबादी के नाम से पुकारो।

इस तरह किया। जब उसे पुकार सुनाई दी, तो उसे यकीन हो गया कि वह व्यक्ति उसे बुला रहा है, इसलिए उसने उत्तर दिया और उसके साथ हो लिया और हज़रत यहियाह मदनी की कृपा से उपस्थित हुआ। उसने उनकी उपस्थिति में एक रुबाई (अंग्रेजी में रुबाई (rub) संज्ञा। चार पंक्तियों के छंदों से युक्त फ़ारसी मूल का एक पद्य रूप) पढ़ी।

ːˈɑːɪ

हज़रत यहियाह मदनी उनकी रुबाइयाँ सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।
उनसे एक प्रतिज्ञा के लिए अनुरोध किया गया और हज़रत यहियाह मदनी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनकी प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली। वे कुछ समय अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में रहे और आध्यात्मिकता के उच्च स्तर को पार कर लिया।

वापसी: हज़रत अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेशानुसार भारत आए। दिल्ली पहुंचकर वे जामा मस्जिद और लाल किला क्षेत्र के बीच में रुके। दिल्ली में उन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा देने और सही रास्ता दिखाने में बिताया।

उनसे कई हजार लोग लाभान्वित हुए।

जीविका का साधन: उनके पास एक मकान है। जिसका किराया उन्हें 2.50 रुपए मिलता था। वे दूसरे किराये के मकान में रहते थे, जिसका किराया 50 पैसे था। बचे हुए दो रुपए से वे अपना और अपने परिवार का खर्च चलाते थे।

मृत्यु: 81 वर्ष 9 महीने की आयु में 24 रब्बिल अव्वल सन 1142 हिजरी को उनका निधन हो गया। उनकी रौशन कब्र दिल्ली में जामा मस्जिद और लाल किले के बीच में स्थित है। हर साल उनका उर्स (पुण्यतिथि) हज़रत मुस्तहसीन फ़ारूक़ी द्वारा बड़े पैमाने पर मनाया जाता है।

जो मंदिर भवन के संरक्षक हैं। तीन दिनों तक लगातार बैठकें होंगी।

उनके बेटे: उनके बेटे मोहम्मद गौस, जो एक पवित्र व्यक्ति थे। वे हज़रत फ़ख़रुद्दीन फ़ख़र जहाँ के शिष्य और ख़िलाफ़त थे।

उनके विशेष खलीफा इस प्रकार हैं।

1.हज़रत निज़ामुद्दीन औरंगाबादी। 2. हजरत मोहम्मद हाशिम 3. हजरत शाह जियाउद्दीन साहब 4. हजरत शाह जमालुद्दीन 5. खाजा यूसुफ।

जीवनी विवरण: वे फ़ना फ़िल्लाह हैं, जो एक सूफ़ी शब्द है जिसका अर्थ है "ईश्वर में विनाश।" वे अविवाहित स्थिति वाले और ईश्वर के एकत्व वाले व्यक्ति हैं। उन्हें अल्लाह के महान पवित्र व्यक्तियों में शामिल किया जाता है। वे अपने समय के महान विद्वान थे। वे अपने समय के कुतुब थे। वे अपने प्रयासों और रहस्यवादी अभ्यासों में अद्वितीय थे। वे पैगंबर की सुन्नत के सख्त अनुयायी थे। वे अक्सर नफ़िल (अतिरिक्त) नमाज़ अदा करते थे। वे रात में जागते थे और अल्लाह की इबादत में लग जाते थे। जब वे भाषण शुरू करते, तो वे वाक्पटुता और बयानबाज़ी का ऐसा कौशल दिखाते कि सुनने वालों पर बहुत प्रभाव पड़ता। उनकी आदत में बहुत सफ़ाई और परिष्कार के साथ-साथ साफ-सफाई भी थी। वे हर रोज़ नहाते थे। वे स्वच्छ और पवित्र रहते थे। उन्हें समा सुनने का बहुत शौक था। उन्हें विशेष रुचि थी

पवित्र कुरान की तिलावत के प्रति उनका लगाव अद्वितीय था। वे विश्वास और संतुष्टि के मामले में अद्वितीय थे।

दिल्ली के बादशाह फरख सैर: उनके प्रति उनकी उतनी ही श्रद्धा है। उन्होंने कई बार पूरी कोशिश की कि वे उनसे कुछ ले सकें। लेकिन उन्होंने उनकी तरफ से जायदाद, मकान और तोहफे स्वीकार नहीं किए।

ज्ञान का शौक: उनके पत्र सूफीवाद और ईश्वर के ज्ञान के खजानों से भरे हुए हैं, और ये पुस्तकें 'मकतूबत-ए-कालिमी' के नाम से प्रकाशित हुई हैं। उनकी प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध पुस्तकें इस प्रकार हैं:

1.सैस सबील 2.तस्नीम 3.अशरा कामिला 4.कुरान अल-कुरान 5. मुराका शरीफ काश्कुल

उन्होंने अपना संदेश अपने भाषणों, पत्रों और पुस्तकों के माध्यम से दिया है।

वास्तविकता का मिलन: उन्होंने अपने खलीफा हजरत निजामुद्दीन औरंगाबादी को लिखा है कि मानव जाति की भीड़ अल्लाह के शुक्र का कारण है। मानव जाति की भीड़ होगी, और तब अल्लाह का बहुत शुक्र होना चाहिए। मानव जाति केवल अल्लाह की कृपा और दया है। इस मामले में कोई चिंता नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यह धन सभी लोगों को नहीं मिल सकता है।

जीत का पैसा: उन्होंने कहा कि जो भी पैसा होगा वह जीत से आएगा, जिसे वितरित किया जाना चाहिए

जिस दिन विजय धन प्राप्त न हो, उस दिन संतोष समझ लेना चाहिए, क्योंकि दरिद्रता और भूख का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

वासल: उन्होंने कहा कि वासल का मतलब है सभी चीजों से दूर रहना। और किसी भी चीज के लिए समानता का भुगतान नहीं करना चाहिए। रंगहीन में खो जाना ही इस मामले में हत्या का अर्थ है। इन स्थितियों की शुरुआत में प्रस्तावना सभी इंद्रियों से निस्वार्थ है। यह स्थिति मृत्यु की स्थिति जैसी है। केवल अंतर यह है कि मृत्यु में कोई उपस्थिति नहीं है, लेकिन जीवन में है।

स्मरण और चिन्तन: स्मरण और चिन्तन पाने के लिए वे अपना सारा साहस और समय खर्च कर देते थे।

एक सेकण्ड और एक मिनट भी ऐसी चीज़ों में शामिल न हो जो अल्लाह के स्मरण और चिंतन में बाधा उत्पन्न करें।

स्वर्णिम उक्तियाँ: उनकी कुछ स्वर्णिम उक्तियाँ इस प्रकार हैं:.

1.ज्ञान दो प्रकार का होता है, एक ज्ञान और दूसरा अवस्था।

2. तौहीद (ईश्वर की एकता) चार प्रकार की होती है। 1.
तौहीद ईमानी 2. तौहीद इल्म 3. तौहीद हाली (हालत) 4. तौहीद इलाही (अल्लाह)।

1. प्रेम एक ऐसी चीज़ है जिस पर संसार में विश्वास और कर्म की विश्वसनीयता, सुदृढ़ता और दोष है।

और परलोक में पुरस्कार और दण्ड उनका ही हिस्सा है।

2. ऐसी चीज़ का नुकसान, जिसे दरिद्रता कहते हैं, और जिसकी तलाश अल्लाह की तरफ़ से की गई।

3. सब कुछ विस्मृति के हाथ में सौंप देने को विश्वास कहते हैं।

4. उपवास एक श्रेष्ठ उपासना है तथा गुप्त रीति से श्रेष्ठता की उपासना भी है।

आगे उनकी कुछ प्रस्तुतियों का उल्लेख इस प्रकार है।

1. शेख कलीम अल्लाह शाह जहानाबादी नमाज़ के बाद अकेले बैठकर आसमान की तरफ हाथ उठाकर 100 बार 'या रब' कहते थे - जो भी मुराद अल्लाह से मांगी जाए और जो हासिल हो सके। अगर आप 1000 बार पढ़ेंगे तो इस मामले में कामयाबी में कोई शक नहीं रहेगा।

2. उन्होंने कहा कि 'अल्लाह अकबर' कहना मनोकामना पूरी करना अच्छा और लाभदायक है, लेकिन इसे कम से कम 100 बार पढ़ना चाहिए।

3. शत्रु को परास्त करने के लिए: उन्होंने कहा कि जब वह शत्रु का सामना करेंगे, तो उन्हें निम्नलिखित प्रार्थना पढ़नी चाहिए।

"या सुभ, या क़ुद्दूस, या ग़फूर।"

4. सफलता के लिए : जो व्यक्ति इस प्रार्थना को पढ़ेगा वह अपने उद्देश्य में सफल होगा। “या है, या आलिम, या अज़ीज़, या करीम, सुभांका या करीम, तू कारकुनी सब रस्तम। बहक इयाका नबुदु यायाका नास्तैन।”

5. जीविका वृद्धि के लिए: उन्होंने जीविका वृद्धि के लिए प्रतिदिन 100 बार पाठ करने को कहा।

“ला हॉल वला क़ुवता एइला बिल्ला अलिउल अज़ीम।”

रहस्योद्घाटन और चमत्कार: उनके द्वारा कई चमत्कार किए गए थे। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:.

1. जब वह मदीना पहुँचे तो एक जगह रुके जो शहर से बहुत दूर थी। अचानक वह रबात आमेर इमारत से बाहर निकले। उन्होंने वहाँ मौजूद दूसरे लोगों को इमारत से बाहर आने को कहा। जब वह इमारत से बाहर निकले तो देखा कि इमारत की छत गिर चुकी थी। और सभी लोग सुरक्षित थे।

2. उनके शिष्य के अमरूद के दो पेड़ सूख गए थे। उनसे इस विषय में अनुरोध किया गया। उन्होंने उसे स्नान का बचा हुआ पानी दिया और पेड़ों की जड़ों में पानी डालने को कहा। उसने वैसा ही किया और पेड़ हरे हो गए।

3. एक साल दिल्ली में बारिश नहीं हुई। कुछ विद्वान लोग उनके पास आए और इस मामले में प्रार्थना करने का अनुरोध किया। उन्होंने अपने हाथ फैलाए और प्रार्थना की, "हे सृष्टिकर्ता!

मानव जाति पर दया करो। ” इस प्रार्थना पर, दिल्ली शहर में भारी बारिश हुई।

16.हजरत मौलाना फखरुद्दीन फखर जहां

पैगम्बर हजरत मौलाना फखरुद्दीन फखर जहां के चाहने वाले आदि और अंतिम गौरवशाली व्यक्तियों में से एक थे। वे अपने समय में कुतुब थे। साथ ही एक अद्वितीय व्यक्ति भी थे।

और अपने समय की पवित्रता का सिपाही। और चमत्कारों की बैठक का अध्यक्ष।

पारिवारिक विवरण: हज़रत सुहाबुद्दीन सुहेरवर्दी के नाम से उनकी वंशावली खलीफा हज़रत अबू बकर सिद्दीकी के पास पहुंची और उन्होंने 'सिलसिला हदीस' में खुद को सिद्दीकी के नाम से लिखा है।

उनके पिता का विवरण: उनके पिता का नाम हज़रत निज़ामुद्दीन है। उनके परिवार के सदस्य भारत से बाहर से आए थे और अवध के नागरान (काकोरी) में बस गए थे। उनके पिता हज़रत निज़ामुद्दीन दिल्ली आए और हज़रत शेख़ कलीम अल्लाह शाहजहानाबादी के हाथों से प्रतिज्ञा ली और संत की पोशाक पहनी। अपने आध्यात्मिक गुरु की सलाह के अनुसार, वे दक्कन की ओर चले गए। और वे

औरंगाबाद में बस गए और सही मार्ग दर्शन में लग गए।

उनकी माता हजरत सैयद मोहम्मद गेसू दराज के परिवार से ताल्लुक रखती हैं।

भाई: उनके चार भाई थे। हज़रत सैयद इस्माइल उनके बड़े भाई थे। और उनके तीन सौतेले भाई इस प्रकार थे: 1. ग़ुलाम मोइनुद्दीन 2. ग़ुलाम बहाउद्दीन 3. ग़ुलाम कलीम अल्लाह। और ये भाई उनके हाथों पर गिरवी रखे गए थे।

बहन: उसकी बहन ने भी उसके हाथों प्रतिज्ञा की थी।

धन्य जन्म: उनका जन्म 1126 हिजरी में औरंगाबाद में हुआ था।

उनका नाम: उनके पिता को उनके बेटे के जन्म की खबर हजरत शेख कलीम अल्लाह शाहजहानाबादी को दी गई थी।
हज़रत इस बात से बहुत ख़ुश हुए और उनके लिए उनकी ख़ास पोशाक भेजी गई और उनका नाम मौलाना मोहम्मद फ़ख़रुद्दीन बताया गया और उन्होंने कहा, "यह मेरा बेटा है।"

उनके बारे में भविष्यवाणी: हज़रत शेख कलीम अल्लाह शाहजहानाबादी ने उनके बारे में बताया कि "यह मेरा बेटा अपनी सलाह की रोशनी से शाहजहानाबाद को रोशन और चमकाएगा।"

उनकी उपाधि 'मोहिब अल-नबी' के नाम से प्रसिद्ध और मशहूर है। 'मोहिब अल-नबी' के नाम से उनके प्रसिद्ध होने का कारण यह है कि वे अजमेर में हज़रत ख़ाजा ग़रीब नवाज़ के दरबार में गए थे, और उस समय उनके किसी काम से एक पवित्र व्यक्ति वहाँ था। ख़ाजा साहब ने उन्हें ख़ुशख़बरी दी कि उन्हें पहचानो। और तुम्हारा काम उनके द्वारा हो जाएगा। उनका नाम 'मोहिब अल-नबी' है। और उस पवित्र व्यक्ति ने उन्हें ढूँढ़कर इस मामले की पूरी कहानी बताई। और उस दिन से, वे 'मोहिब अल-नबी' की इस उपाधि से प्रसिद्ध हो गए।

कहा जाता है कि एक बार उर्स के दौरान हजरत नासिरुद्दीन चियाराघ देहलवी को सार्वजनिक रसोई से कुछ आशीर्वाद मिला और उन्होंने उनसे कहा कि तुम 'मोहिब अल-नबी' बनोगे और उस दिन से उन्हें 'मोहिब अल-नबी' कहा जाने लगा।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उन्होंने अपने पिता की मदद से कुछ किताबें पढ़ीं। उन्होंने 'शरह वाकिया', 'मशारिक अनवर' और 'नफ़हत अन्स' नामक किताबें पढ़ीं। और चिकित्सा विषयों पर एक किताब। और तीर कला के बारे में एक पत्रिका। और ये सभी किताबें उन्होंने अपने पिता के साथ पढ़ीं। उन्होंने मिया मोहम्मद जान जेव के साथ कुछ और किताबें पढ़ीं, जिनमें 'फ़सुस अल-हुकम' आदि शामिल हैं। उन्होंने मौलवी अब्दुल हकीम की प्रसिद्ध किताब 'हदया' का अध्ययन किया, जो ज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान और न्यायशास्त्र के विशेषज्ञ थे।

उनके बचपन की एक घटना: जब वे सात साल के थे, तब वे अपने पिता के पैर दबा रहे थे।

उस पर नींद हावी हो गई। पैगम्बर को पाँच दाने दिए गए। जब वह जागा तो उसने अपने हाथों में कॉफ़ी के पाँच दाने देखे। उसके पिता भी जाग रहे थे। और उसने उसका हाथ पकड़ कर कहा कि इन दानों में उसका भी हिस्सा है। उसने और उसके पिता ने वे दाने खाए।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: बचपन में ही वे अपने पिता के शिष्य बन गए थे। जब वे 15 वर्ष के थे, तब उनके पिता ने उन्हें खिलाफत की उपाधि दे दी।

पिता की मृत्यु : खिलाफत देने के एक वर्ष बाद ही उनके पिता नश्वर संसार से चले गये और उस समय हजरत की आयु 16 वर्ष थी।

रहस्यमयी क्रियाएँ और प्रयास: अपने पिता की मृत्यु के बाद हज़रत अल्लाह की इबादत में लीन रहने लगे। उन्होंने अपनी स्थिति के बारे में किसी को जानकारी नहीं दी।

जो लोग उसके निकट थे, वे उसकी रहस्यमय क्रियाओं, पूजा और प्रयासों के बारे में नहीं जानते थे।

उनके एक आध्यात्मिक भाई और खिलाफत, खाजा कामगर खान ने उनसे पूछा कि क्या वह ज़िकर का एक चक्र आयोजित करेंगे और जाहरी का ज़िकर आयोजित करेंगे। उन्होंने मुस्कुराते हुए उनसे कहा कि ऐसे कामों में उनकी ईश्वरीय मदद के लिए प्रार्थना करें। उन्होंने अपनी प्रार्थना के लिए अपने हाथ फैलाए। और तुरंत ही उनसे वह कृपा की दौलत वापस ले ली गई जो मिली थी। हज़रत को इस मामले में पछतावा हुआ और हज़रत को इस मामले में माफ़ कर दिया गया और उन्हें दे दिया गया।

अनुग्रह वापस ले लिया गया, और उसकी प्रार्थना के द्वारा उसे और अधिक अनुग्रह दिया गया।

सेवा: उनके अनुरोध पर नवाब निज़ाम दौला ने उन्हें सेनापति या नायब बक्शी नियुक्त किया। उन्होंने तीन साल तक अपने कर्तव्यों का बेहतरीन तरीके से पालन किया, फिर वे अपने पद से इस्तीफा देकर औरंगाबाद चले गए।

दिल्ली आगमन: एक बार की बात है कि वह इबादत में मशगूल थे और उन्हें एक अदृश्य पुकार सुनाई दी। □□□ □□ □□□□□ □□r□ □□□□□ □□□ और इसका अर्थ है एक आज़ाद लड़का बनो। यह सुनकर उनके मन में दिल्ली जाने का विचार आया। जब वह अपने पिता की नूर की क़ब्र पर मौजूद थे, तब वहाँ उन्हें इल्हाम हुआ और एक अदृश्य पुकार सुनी जिसमें यह सुनाई दी। शाह आलम फ़ख़री □□ □□□□□ □□□□□ □□r□□□ □□□ □□□□□ □□Min Rovan Tekt Bikhodi और यह सुनकर हज़रत ने दिल्ली तशरीफ़ लाने का फ़ैसला किया। वह वर्ष 1160 हिजरी में दिल्ली पहुँचे।

□

पाकपतन में आगमन: दिल्ली पहुंचने के बाद छह महीने बाद हजरत बाबा फैरीद गंज शकर की मजार की जियारत करने पाकपतन गए। वे पानीपत में चार रात रुके और हजरत बू अली कलंदर से आशीर्वाद और कृपा प्राप्त की।

विवाह और पुत्र: एक बीमारी के इलाज के लिए उन्होंने हकीमों की सलाह मान ली और 1882 में विवाह कर लिया।

औरंगाबाद में उनके एक लड़का पैदा हुआ और उसका नाम गुलाम कुतुबुद्दीन रखा गया।

मृत्यु: 27 जमादि थानी सन 1199 हिजरी को रात के आखिरी पहर में उन्होंने इस नश्वर संसार को छोड़ दिया । जब उन्होंने इस दुनिया को छोड़ा तब उनकी उम्र 73 साल थी। उनकी कब्र एक बहार है और दिल्ली में मेहरवाली में दुआएं मौजूद हैं।

उनके ख़लीफ़ा: उनके प्रसिद्ध ख़लीफ़ाओं के नाम इस प्रकार हैं।

1. खाजा नूर महारवी 2. हजरत मीर जियाउद्दीन 3. मालवी खुदा बख्श 4. नवाब गाजीउद्दीन मीर खान अलमुतलक निज़ाम शाह फतह अल्लाह। 5. मालवी मोहम्मद गौस 6. शाह रूह अल्लाह। 7. शाह क़मर उद्दीन 8. हज़रत मोहम्मद गौस।

जीवनी विवरण: उनका व्यक्तित्व प्रकट और अंतरतम के आचरणों से परिपूर्ण था। वे विनम्र और मेहमाननवाज़ थे। वे हर आने-जाने वाले व्यक्ति का सम्मान करते थे। और बीमारी में भी वे सम्मान देने के लिए खड़े रहते थे। उनमें बहुत विनम्रता थी। वे अपना ज़्यादातर समय इबादत, रहस्यमयी व्यायाम, प्रयास और रहस्योद्घाटन में बिताते थे। उनकी उदारता का यह आलम था कि जो भी धन और चीज़ें भेंट में आतीं, हज़रत सब कुछ बाँट देते थे।

वह अपने लिये कुछ भी नहीं रखता था।

उनमें इतनी विनम्रता थी कि उनका सफाईकर्मी, जो दो दिन से मंदिर भवन में नहीं आया था,

जब उन्हें इस मामले की जानकारी हुई तो वे उनके घर उनसे मिलने गए और उन्हें कुछ पैसे दिए गए तथा इस बात पर खेद व्यक्त किया कि इस मामले में उनके आने में देरी हुई।

ज्ञान का शौक: उनके पत्र ज्ञान का खजाना हैं और जो 'रुकत मुर्शदी' के नाम से प्रकाशित हुए और उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें इस प्रकार हैं:

'फखर अल-हसन' 'इकाइद निज़ामिया', मोहम्मदिया'। 'एइनल यक़दीन' 'सीरत

उनकी शिक्षा उच्चतर आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त करने और मार्गदर्शन के लिए सहायक है।

मौजिज सफर का हाल: उन्होंने कहा कि बड़ी दुनिया में आरिफ (फकीर) अपने सच्चे महबूब को देखता है। और मौजिज सफर में वह इस दौलत को भी देख सकता है। शुरू में यह सिर्फ एक आईना है, इसमें पाक शख्सियत का अक्स है। दूसरे, इंसान एक छोटी सी दुनिया है। और साफ और पारदर्शी आईने हैं। इसमें वह रोशनी है जिसे आरिफ देखता है। जो पहले अवलोकन से है कि ऊपरी स्तर और मौजिज का पूरा मरणधर्मा होना इस पर निर्भर करता है। सालिक का अंतरतम अल्लाह के अलावा सभी से साफ हो जाएगा। और उस पर अल्लाह की शख्सियत का असर होगा। तो निकटता का एक स्थान मिलेगा और नफिल स्वैच्छिक प्रार्थनाओं के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा।

अल्लाह के साथ मौजूदगी। उन्होंने कहा कि असल में लक्ष्य यही है कि इस मामले में अल्लाह की मौजूदगी हासिल की जाए।

विभिन्न विधियाँ, जैसे छुपकर ज़िकर करना या ऊँची आवाज़ में ज़िकर करना, या सोच, रहस्योद्घाटन, या स्थिरता।

बेहोशी: उन्होंने कहा कि बेहोशी कृपा है, और इसके लिए धन्यवाद की आवश्यकता है। लेकिन सालिक (छात्र) को इससे संतुष्ट होना चाहिए। और इसे लक्ष्य और उच्च ग्रेड चरणों को प्राप्त करने का स्रोत समझें। वे अफीम और भांग (भारतीय भांग के पौधे की युवा पत्तियों और तनों से बना मारिजुआना का एक हल्का मिश्रण) पर भी बेहोश पाए जाएंगे। अंतर यह है कि इस प्रकार की बेहोशी अच्छी नहीं बल्कि बुरी है। जब कोई बेहोश पाया जाता है, तो पूजा और रहस्योद्घाटन में बहुत अधिक संलग्नता की आवश्यकता होती है।

ज़िकर और चेकिंग अकाउंट: उन्होंने कहा कि जितना संभव हो सके ज़िकर में लगे रहें। लेकिन इसकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इससे स्वास्थ्य की स्थिति प्रभावित होगी। इस मामले में चेकिंग अकाउंट की भी आवश्यकता है।

कहावतें: उनकी कुछ कहावतें इस प्रकार हैं।

1. उपस्थिति और अदृश्यता को हृदय से दूर रखना।

2. अल्लाह का ज़िक्र सबसे पहले और सबसे ज़रूरी है।

3. सालिक (छात्र) को समय का नियंत्रण अपने हाथ में नहीं छोड़ना चाहिए था।

4. सालिक (विद्यार्थी) को आत्मा से धोखा नहीं खाना चाहिए।

5. मानव स्वरूप अल्लाह की स्थिति और स्थिति का एक व्यापक रूप है।

रोज़ाना की तिलावत: हज़रत ने अल्लाह जली का ज़िक्र और पननफ़ास की सलाह दी। उन्होंने कहा कि नेक कामों जैसे कि नुआफ़िल, नमाज़ और तहजुद और इशराक़ की नमाज़ और पैग़म्बर पर दुआ (दारूद) और क़ुरान पढ़ना, जो सलीक़ पर अनिवार्य होना चाहिए, का पालन करें।

रहस्योद्घाटन और चमत्कार.

1. नवाब मीर गाजी उद्दीन खान को 'वहदत वजूद' (वहदत अल-वुजूद एक अरबी मुहावरा है जिसका अर्थ है 'अस्तित्व की एकता') के मुद्दे को समझने में गंभीर अनिच्छा थी, और वह अपने रहस्योद्घाटन को जानने में सक्षम थे।

एक दिन हज़रत उनके हुज़ूर में गए और अपनी उँगलियों को उनकी उँगलियों से और अपनी हथेलियों को उनकी हथेलियों से मिलाया। और देखा कि नवाब साहब मुस्कुरा रहे हैं। नवाब साहब बेहोश हो गए। नवाब साहब ने कहा कि "जब वे जागे तो उन्हें हर निर्जीव चीज़, वनस्पति, वनस्पति और जानवर दिखाई दे रहे थे।

1. औरंगाबाद से दिल्ली जाते समय हजरत मुहम्मद साहब के पास एक अंधी बूढ़ी महिला आई। उसने प्रार्थना की कि उसकी आंखों में रोशनी दे दी जाए। हजरत मुहम्मद साहब ने उसकी आंखों पर हाथ रखा और उसी समय उस बूढ़ी महिला की आंखों की रोशनी वापस आ गई।

2.काजी जिया को दर्द हो रहा था, वह उनके पास गए। हजरत उनसे शर्मिंदा थे। उन्हें गले लगाने पर काजी साहब ठीक हो गए। और उनके अंदर ऐसी ताकत महसूस होने लगी, जैसे वह पहले बीमार ही नहीं थे।

17. मिर्ज़ा जना जन मज़हर शहीद

मिर्ज़ा जना जन मज़हर शहीद उस समय के शहीद का श्रृंगार है। और वह स्वर्ग के कोने से ताल्लुक रखते हैं। और वह रहस्यवादी तरीके से मार्गदर्शक हैं। और वह वास्तविकता के लोगों के लिए मार्गदर्शक हैं।

पारिवारिक स्थिति: मोहम्मद बिन हनीफा से लेकर इमाम हज़रत अली इब्न तालेब तक उनकी वंशावली 28 ज़ंजीरों तक पहुँचती है। उनके पूर्वज 800 हिजरी में ताइफ़ से तुर्किस्तान चले गए थे।

जिस समय राजा हिमायूं ईरान से भारत आए और उन्हें भारत की गद्दी पर बैठाया गया, और उनके साथ दो भाई महबूब खान और बाबा खान भी भारत आए। और ये दोनों भाई जो इस वंशावली रिकॉर्ड से जुड़े थे। इनका रिकॉर्ड तीन ज़ंजीरों से अमीर कमालुद्दीन से जुड़ा हुआ है। हज़रत का जेनेटिक लिंक बाबा खान से चार ज़ंजीरों से जुड़ा हुआ है।

माँ का वंशावली रिकॉर्ड अमीर के पास पहुँचा
साहिब क़रान

उनके पिता ने अपना पूरा जीवन राजा औरंगजेब की सेवा में बिताया।
और जीवन के अंतिम समय में वे संसार और संसार के लोगों को छोड़कर चले गए। उन्हें क़ादरिया सूफ़ी सिलसिले के एक पवित्र व्यक्ति से लाभ मिला।

धन्य जन्म: उनके जन्म और उनके चमत्कार के बारे में सादी शिराज़ी ने 500 साल पहले इस विषय में एक फ़ारसी दोहा लिखा है जो इस प्रकार है।

जन दर अव्वल मज़हर दरगाह शूद
जेन जान ख़ुद मज़हर अल्लाह शूद

सन् 1113 हिजरी में उनका इस दुनिया में आगमन हुआ। उनका नाम शम्सुद्दीन है।

पिता की मृत्यु: जब वह 16 वर्ष के थे, उसी समय सन् 1130 हिजरी में उनके पिता की मृत्यु हो गई।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उन्होंने अपने पिता के जीवन काल के दौरान स्वयंसिद्ध ज्ञान का अध्ययन किया है।

और हदीस की किताबें उन्होंने मुहादिसीन के शेख अब्दुल्लाह बिन सलीम मक्की के शागिर्द हाजी मोहम्मद अफजल सियालकोटी के मार्गदर्शन में पढ़ीं और कुरान की शिक्षा उन्होंने हाफिज अब्दुल रसूल देहलवी के शागिर्द शेख अब्दुल खालिक़ी के शागिर्द से ली। 20 साल की उम्र में उनका दिल दुनिया से ठंडा हो गया और उन्होंने तंगी में अपने कदम रख दिए।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: वे सैयद नूरुद्दीन बदायुनी की उपस्थिति में गए और इस मामले में प्रतिज्ञा प्राप्त की और उन्हें नक्शबंदी सूफी श्रृंखला में पवित्र वस्त्र पहनाया गया। और वे प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध हो गए। अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में रहते हुए, उन्होंने प्रयास और रहस्यमय अभ्यास किए। अपने आध्यात्मिक गुरु की मृत्यु के बाद, उन्हें नक्शबंदी सूफी श्रृंखला के कई पवित्र व्यक्तियों से लाभ हुआ।

उसके बाद लंबे समय तक वे शेख शाह आबिद सुनामी की कृपा से लाभान्वित हुए, जिनकी आध्यात्मिक कृपा से उन्हें लाभ मिला। उनसे उन्हें नक्शबंदिया की श्रृंखला की संत जैसी पोशाक मिली और वे प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो गए। अपने आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में रहकर उन्होंने पूजा-पाठ और रहस्यमय अभ्यास में संलग्न होना शुरू कर दिया।

अंतिम दिन: अंतिम दिनों में हज़रत रोज़ाना की इबादत और पूजा-पाठ में बहुत समय बिताने लगे। उनकी तल्लीनता बहुत बढ़ गई। बहुत से लोग उनकी मंडली में शामिल हो गए। जब उन्होंने आँखों में आँसू भरकर मुल्ला नायब को अलविदा कहा तो उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि हमारी मुलाक़ात नहीं हो रही है।

एक दिन अल्लाह की रहमत का शुक्र अदा करते हुए उन्होंने कहा, "मेरे दिल की कोई भी ख्वाहिश ऐसी नहीं रही जो पूरी न हुई हो। हक़ीकत के सच्चे उपकारकर्ता को इस्लाम धर्म की हक़ीकत दी गई और बहुत ज्ञान दिया गया

और कर्मों के प्रति समर्पण दिया। और दृढ़ता का चमत्कार दिया गया। जिस मार्ग की आवश्यकता थी, वह दिया गया, साथ ही रहस्योद्घाटन, चमत्कार और प्रयोग भी दिए गए।

उसने पवित्र लोगों को कामों के लिए भेजा और वह उच्चतर स्तर पर पहुंच गया। उसने प्रत्यक्ष गवाही दी, जो अल्लाह के निकट बहुत उच्च स्तर की है। और उसे उसकी इच्छाएं दिखा दी गईं।

अंतिम सलाह: अपनी अंतिम सलाह में उन्होंने कहा कि उनके अंतिम संस्कार और दफ़न में पैगम्बर की सुन्नत का पालन किया जाना चाहिए। अपने लोगों के लिए उन्होंने सलाह दी कि वे जीवन के अंत तक सुन्नत के तरीके पर चलें। और असली लक्ष्य अल्लाह से दूर नहीं होना चाहिए, और अनुसरण का तरीका पैगम्बर से अलग नहीं होना चाहिए। क्योंकि दरवेश लोगों के रीति-रिवाज़ और आदतें जानी जानी चाहिए। और दुनिया के लोगों की संगति से दूर रहना चाहिए। और धर्म के ज्ञान को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

मृत्यु: बुधवार की रात, 7 मुहर्रम को, नजफ खान की सेना के एक व्यक्ति ने उन पर जानलेवा हमला किया। तीन दिनों तक उनके शरीर से खून बहता रहा। 10 मुहर्रम को नमाज़ के बाद उन्होंने शहीद का प्याला पिया।

उनके ख़लीफ़ा हज़रत शाह अब्दुल्लाह उर्फ़ शाल ग़ुलाम अली अहमदी उनके सुप्रसिद्ध और प्रसिद्ध ख़लीफ़ा हैं।

जीवनी विवरण: ज्ञान और कर्म में, इस्लामी कानून और रहस्यवादी तरीके, वाकपटुता और बयानबाजी, पूजा और प्रयासों में, वह एक अद्वितीय व्यक्ति थे। वह प्रकट और अंतरतम के ज्ञान में एक उच्च श्रेणी के व्यक्ति थे। वह अपने समय के कुतुब होने के साथ-साथ एक आदर्श सूफी व्यक्ति भी थे। और उनके मल्फ़ुज़ात (उपदेश), पवित्रता और उनके पत्रों से, उनके शौक और साथ ही उनकी योग्यता का पता चलता है। उनके मल्फ़ुज़ात और पत्र सूफीवाद के महत्वपूर्ण खजाने हैं।

कविता का शौक: वह एक अच्छे, सधे हुए कवि थे और उनकी कविताएँ भक्तों के लिए हैं।

शिक्षाएं: उनकी शिक्षाएं जीवन को बेहतर और सर्वोत्तम बनाने के लिए पर्याप्त हैं।

नमाज़ की अहमियत: उन्होंने कहा, "नमाज़ की एक जटिल शर्त है। तिलावत और तस्बीह (ईश्वर की स्तुति) और दुआ और इस्तग़फ़ार (ईश्वर से क्षमा याचना) की रोशनी और अज़कार (ईश्वर के नामों और प्रशंसाओं का दोहराव) से सजी हुई नमाज़ में, सही और वास्तविक शर्तें होंगी यदि उसके तरीके पूरे होंगे।

रमज़ान महीने का महत्व: उन्होंने कहा कि रमज़ान के महीने में अंतरतम के संबंधों में सुधार होगा। रोज़े के दौरान चुगली और झूठ से बचना ज़रूरी है, जो कि एक अच्छा काम है।

अवश्य करें; अन्यथा, इस मामले में उपवास भूखा हो जाएगा।

कर्मों का फल: उन्होंने कहा कि हमारे कर्मों के फलस्वरूप दूसरों से हमें जो भी कठिनाई, कष्ट और परेशानी होती है, उसमें बड़े लोगों के साथ आदर और छोटों के साथ दयालुता से पेश आओ, तब कोई भी इस मामले में तुम्हारा बुरा नहीं करेगा।

फ़तह अल-बाब: मज़हरिया की विधि में, शुरू में शिष्य को ख़ुशख़बरी दी जाएगी, और ख़ुशख़बरी फ़तह अल-बाब से है। उस समय, जो दिल अपनी क्षमता से बेपरवाह हो गया था, वह फिर से अपनी मौलिकता को याद करेगा। वह अपनी तरफ़ ध्यान देगा। थोड़े समय में, उसके दिल से प्रकाश की लौ उठेगी, जो दिल में प्रकट होगी।

मनुष्य का हृदय वास्तव में प्रकृति में प्रकाशवान और उज्जवल बनाया गया था। लेकिन सामान्य रूप से, बहुत से सम्बन्धों के कारण, और उसके कारण, वह कोयले की तरह काला और प्रकाशहीन हो गया। इस कारण वह स्वयं को और अपनी मौलिकता को भूल जाएगा।

जब वह अच्छी श्रद्धा और भक्ति के साथ एक सच्चा छात्र बन जाता है और एक पूर्ण शेख और आध्यात्मिक गुरु की उपस्थिति में जाता है, तो गुरु उस पर ध्यान देंगे और उसे ज़िक्र सिखाएंगे (ज़िक्र एक मुस्लिम अनुष्ठान प्रार्थना या प्रार्थना है जिसमें ईश्वर की महिमा और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने के लिए अल्लाह के नाम का दोहराव शामिल है।)

वह व्यक्ति उस मामले पर ध्यान लगाएगा और उस पर ध्यान देने की कृपा से उसके दिल में ज़िकर की रौशनी होगी। और वह काला कोयला इस मामले में जल उठेगा। जब उसका पूरा दिल ज़िकर की रौशनी से रोशन हो जाएगा, तो इस मामले में उसके दिल से एक लौ उठेगी। इस विधि को मज़हेरिया विधि या 'फ़तह अल-बाब' के नाम से जाना जाता है।

सलाह: उनकी कुछ सलाहें इस प्रकार हैं।

1. संयम और धर्मपरायणता की पद्धति का पालन करना।

2. अपना जीवन ईश्वर पर भरोसा और ईश्वर भक्ति के साथ व्यतीत करना।

3.विद्वान व्यक्तियों की संगति से साधनों में वृद्धि करना, क्योंकि अल्लाह के मित्रों की संगति अल्लाह की निकटता का कारण बनती है।

4. विषय-वस्तु का अनुसरण करना.

5. अपने हृदय से लालच और प्रलोभन को दूर करना।

6. मित्रों एवं साथियों से निराशा की स्थिति उत्पन्न होगी।

7.दूसरों को घृणा की दृष्टि से न देखें।

8.अपने आप को निम्न एवं असहाय समझना।

9.आज्ञाकारिता और उपासना पर गर्व मत करो।

10. जहाँ तक हो सके, आत्मा के विरुद्ध कार्य करें, किन्तु वह ऐसा हो कि उसमें तंगी न आए और प्रेम-सुख में वृद्धि न हो।

गायन इस प्रकार है।

दिल की तसल्ली के लिए रोजाना 'हज़्ब बहज़र' किताब पढ़नी चाहिए ।

विपत्ति दूर करने के लिए उन्होंने कहा कि विपत्ति से बचने के लिए सुबह और शाम के समय में आयत 'एलाफ' पढ़ना चाहिए।

बुराई से दूर करने के लिए: सुबह की नमाज़ के बाद 100 बार या 11 बार 'एलाफ़' आयत पढ़ना ज़रूरी है। नबी पर पाँच बार दुआ (दारुद) पढ़ना ज़रूरी है।

भलाई और बरकत के लिए: सुबह फज्र की नमाज़ के बाद 'क़तम ख़जागान' और 'क़तम मुजादिद' किताबों का रोज़ाना पढ़ना ज़रूरी है , जिससे भलाई और बरकत का कारण बनता है।

18.हज़रत शाह वली अल्लाह मुहिदत देहलवी

हज़रत शाह वली अल्लाह मुहिदत देहलवी इस्लामी कानून के सहायक हैं। और रहस्यवादी लोगों के मार्गदर्शक हैं। और पवित्र व्यक्तियों में श्रेष्ठ हैं। और पुण्य व्यक्तियों के आदर्श हैं।

वह एक कृपालु और मददगार व्यक्ति हैं और उन्हीं के कारण भारत को पैगम्बर की हदीसों से ज्ञान प्राप्त हुआ।

पारिवारिक स्थिति: उनका वंशावली संबंध हज़रत उमर बिन क़त्ताब से 33 शृंखलाओं से जुड़ा है, जो इस प्रकार दर्शाया गया है।

वलीह अल्लाह बिन अब्दुल रहीम बिन वजीहुद्दीन शहीद बिन मौजम बिन मंसूर बिन अहमद बिन महमूद बिन कमुद्दीन उर्फ काजी तवाजिन बिन काजी कासिम बिन काजी कबीर बिन उर्फ काजी मुदहा बिन अब्दुल मलिक बिन कुतुबुद्दीन बिन कमालुद्दीन बिन शम्सुद्दीन अलमुफ्ती उर्फ काजी बेरन बिन शेर मलिक बिन अता मेलक बिन अबुल फतह मलक बिन उमरो अलहकीम बिन मलिक बिन आदिल बिन मलिक बिन क़ारून बिन जार्जिस बिन अहमद बिन मोहम्मद शेरयार बिन उस्मान बिन हमन बिन हिमायूं बिन कुरैश बिन सुलेमान बिन अफ्फान बिन अब्दुल्ला बिन मोहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन उमर बिन क़त्ताब।

पिता का विवरण: उनके पिता हजरत शाह अब्दुल रहीम अभिव्यक्ति और अंतरतम के ज्ञानी व्यक्तियों में अद्वितीय थे। उन्हें हजरत शाह सैयद अब्दुल्ला अकबराबादी के हाथों गिरवी रखा गया था। वे उनके पहले खलीफा थे।

जन्म तिथि: उनका जन्म 4 शव्वाल वर्ष 1114 हिजरी को हुआ था।

नाम: उसका नाम अहमद है और उसने खुद कहा है कि वह एक कमजोर गुलाम है और जिसे वली अल्लाह कहा जाता है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: जब वह पाँच साल के थे, तो उनके पिता ने उन्हें स्कूल में भर्ती करा दिया। सात साल की उम्र में उन्होंने कुरान पढ़ना समाप्त कर दिया। फिर वे पढ़ाई में लग गए।

अन्य पुस्तकों का अध्ययन करना। उनके पिता ने अपने बेटे की शिक्षा पर बहुत ध्यान और देखभाल की है। 15 वर्ष की आयु तक, उन्होंने अभिव्यक्ति का ज्ञान पूरा कर लिया था। और इसे पूरा करने के बाद, उन्होंने इस मामले में अंतरतम के ज्ञान की ओर अपना ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया। उनके पिता उन्हें सलाह देते थे और उन्हें बैठकों के ज्ञान के साथ-साथ बैठक स्थलों के तौर-तरीके भी सिखाते थे। उनके पिता ने उन्हें रहस्यवाद की शिक्षा दी है। और इस मामले में, उन्होंने खुद कहा कि "उनसे उन्होंने अभिव्यक्ति का ज्ञान और रहस्यवाद के नियम सीखे हैं। और उनसे उन्होंने चमत्कार देखे हैं। और समस्याओं के बारे में पूछा है। और उनसे उन्होंने इस मामले में रहस्यवादी तरीकों के लाभ सुने हैं।"

प्रतिज्ञा और खिलाफत: 15 साल की उम्र में उन्होंने अपने पिता के हाथों प्रतिज्ञा की थी। और उनके पिता ने उन्हें कई सूफी जंजीरों से छूट दी थी, और इस बारे में उन्होंने खुद कहा था, "हमारे सूफी जंजीरे हैं, और उनमें से कुछ में बिना किसी संगति के हैं; अन्य में बिना किसी निष्ठा या संत की पोशाक के हैं।"

नक्शबंदी की उनकी मूल श्रृंखला। दो साल की प्रतिज्ञा के बाद, उनके पिता ने उन्हें एक संत की पोशाक दी। उन्हें सलाह देने और प्रतिज्ञा लेने की अनुमति दी गई, जिसने उन्हें अपना मुख्य सलाहकार बना दिया। उन्होंने शेख ताहिर मदनी से संत की पोशाक भी प्राप्त की, और इस संत की पोशाक को सभी सूफी श्रृंखलाओं की विशेषज्ञ संत पोशाक कहा जाता है।

पिता की मृत्यु: फिर भी वे पूर्ण नहीं हैं। 17 वर्ष की आयु में उनके पिता इस नश्वर संसार से चले गए। अपनी मृत्यु के पश्चात वे सही मार्ग के मार्गदर्शन के आसन पर बैठे और शिक्षा तथा परामर्श में लग गए।

मक्का और मदीना की यात्रा: उन्होंने 1143 हिजरी में हज यात्रा की और मदीना की यात्रा की और वहाँ से अनुग्रह और आशीर्वाद प्राप्त किया। मक्का और मदीना में उन्हें कई विद्वानों की संगति का लाभ मिला। उन पवित्र शहरों में रहकर उन्होंने हदीसों के प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

वापसी: सन 1145 हिजरी में वे दिल्ली वापस आ गए और यहीं रहकर शिक्षा देने और सलाह देने का काम किया। इसी तरह उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी गुज़ारी।

विवाह और बेटे: जब वे 15 वर्ष के थे, तब उनका विवाह हुआ था। उनके बेटे शाह अब्दुल अजीज मुहादित देहलवी का विवरण अगले एपिसोड में जोड़ा गया है। उनके अन्य बेटे मौलाना शाह रफीउद्दीन, मौलाना अब्दुल कादर और शाह अब्दुल गनी हैं।

मृत्यु: 19 मुहर्रम 1176 हिजरी को उनका देहांत हो गया और उनकी कब्र दिल्ली में स्थित है।

जीवनी विवरण: वे भारत के महान विद्वानों और विद्वानों में गिने जाते थे और उनकी महानता और तीक्ष्णता को नकारने का साहस किसी में नहीं था। वे ज्ञान के सबसे महान व्यक्ति थे। वे तर्कसंगत, रिपोर्ट और वास्तविकता के बीच और अपने ज्ञान में अद्वितीय थे।

ईश्वर। उन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा देने, सलाह देने और ज्ञान में बिताया है। उनके जीवन में बहुत सादगी है। अक़ली पारंपरिक ज्ञान है, जबकि नक़ली कुरान और सुन्नत से प्रकट ज्ञान स्रोत है।

अपने ज्ञान के प्रति लगाव: उन्होंने स्वयं कई पुस्तकें लिखी हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

लामत, हमत, क़ुल जमील फ़े बयान साबिल, इन्फ़ास आरिफ़ीन, मत्तुबत मदनी (उर्दू अनुवाद, अलमुक़लब बा फ़ैसला वहसत वजूद शुद)। रिसाला दुरा थमन फ़े मुबशिरत नबी अल-अमीन, मकतूबत मा मुनैब अब अब्दुल्ला मोहम्मद बिन इस्माइल बुखारी वा फज़िलत इब्न तमिमा।

तफ़सीर क़ुरान, तुफ़हिमत इलाहिया, मकातिब अरबी, इंतबा फ़े असनद अहादीस रसूल। ख़ैर कासिर, क़ुल जेल फ़े असर वली, बदुर बज़ाका फ़ौज़ हरमैन, तवील अहादीस, खमसा रीसेल, इंसाफ, क़सीदा अत्ताब उमूम फ़े मदाह सैयद अरब वा आजम, ईक़ल जैद, चल हदीस मा शरह मंजुम अलमौसुम ब तक्सिर।

शायरी का शौक: हज़रत को शायरी का बहुत शौक है।

उनकी शिक्षाएँ प्रत्यक्ष एवं अन्तरतम ज्ञान की तकनीक का सबसे मूल्यवान खजाना हैं।

वास्तविकता के विद्वानों के शिष्टाचार: उन्होंने कहा, "वह छात्र को इन सब बातों से कुछ बातें समझा रहे हैं कि उसे अमीर लोगों की संगति नहीं करनी चाहिए। लेकिन मानवता पर क्रूरता का बचाव करने या अच्छाई का अनुसरण करने और संगति का अनुसरण न करने के लिए सचेत करने के इरादे से। साथ ही अज्ञानी सूफी लोग, अज्ञानी उपासक, या

ऐसे लोग जो शुष्क तपस्वी या मुहादित्त हैं (मुहद्दिथ वह विद्वान होता है जो मदीसों के अध्ययन, संग्रह और व्याख्या में माहिर होता है।) जो स्पष्ट रूप से फ़ाहिश्मी से दुश्मनी रखते हैं। या विवेकशील विचार वाले लोग जो कथन के लिए वर्णित मामले को बुरा समझते हैं और ज्ञान के तर्क से उस मामले में अतिशयता का न्याय करते हैं।

वास्तविकता के विद्यार्थी के लिए कुछ आवश्यक निर्देश:

उन्होंने कहा कि वास्तविकता के विद्यार्थी को सूफी-विद्वान होना चाहिए और हर समय दुनिया से दूर रहना चाहिए। उसे उच्च श्रेणी की स्थिति में अल्लाह के ध्यान में रहना चाहिए और पैगंबर की सुन्नत के आकर्षण में रहना चाहिए। उसे हदीस और साथियों के प्रभावों की खोज में रहना चाहिए।

हदीस की व्याख्या और भाषण की आवश्यकता के लिए और हदीस में रुचि रखने वाले फ़ुक़ियात के शोध विद्वानों की सहायता से प्रभाव। उन ईमान वालों की वाणी से जिन्होंने सुन्नत से ईमान की बातें जोड़ी हैं। और जो ज्ञान के तर्क में और ज़रूरत से ज़्यादा भूत हैं और रहस्यवादी लोगों की वाणी से जो ज्ञान और सूफ़ीवाद के व्यापक हैं। और वे कौन लोग हैं जो अपनी आत्मा पर अत्याचार नहीं करते? और नबी की सुन्नत पर आगे बढ़कर मुश्किलें खड़ी करने वाले नहीं हैं। और न ही लोगों के साथ बैठते हैं। लेकिन वे उन लोगों को अपने साथ जोड़ते हैं जिनके पास उपरोक्त शिष्टाचार हैं।

एकांत: एकांत अच्छा है, सिवाय इसके कि उसमें पुण्य कार्यों में व्यवधान हो, जैसे रोगियों को देखना, विपत्तिग्रस्त व्यक्तियों को देखना, ज्ञान-सभा में जाना, बुरे स्वभाव को दूर करना, तथा उपरोक्त को छोड़कर अन्य समय में एकांत स्वीकार्य है।

चार आदतें: उन्होंने कहा कि इस्लामी कानून में आत्मा के आचरण में जो कुछ भी है, उसमें चार आदतें स्थापित करने और उसकी नकारात्मकता का विरोध करने की आवश्यकता है। उनमें से एक है स्वच्छता, और दूसरी, अल्लाह के लिए, दिल की दृष्टि को अल्लाह की ओर मोड़ना। और तीसरी है सुनना, और इसकी वास्तविकता यह है कि आत्मा बदला, दुख और लालच की मांग करती है, और इच्छाओं या पापपूर्ण बुरी इच्छाओं पर हावी नहीं होगी। चौथा है निर्णय, जो एक ऐसी प्रणाली है जो सभी राजनीतिक प्रणालियों का प्रबंध करती है, जो केवल प्रकृति में पाई जाती है।

स्वर्णिम कहावत: मनुष्य में अलग-अलग क्षमताएं निर्मित की गई हैं, और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी कुशलता के अनुसार पूर्णता प्राप्त होगी।

1. घटनाओं में एक कारण भाग्य भी होता है।

2. प्रत्येक कालखण्ड में 38 वर्ष का एक क़ुरान काल होता है।
प्रत्येक क़ुरान युग में ज्ञान का वितरण होता है जो क़रान के लोगों तक पहुँचता है।

3. शिष्य को प्रतिज्ञा का आदेश देना और/या इस्लामी कानून के विरुद्ध कार्य बंद करवाना तथा उसका मार्गदर्शन करना, उसकी अंतरात्मा को संतुष्ट करना तथा बुरी आदतों को दूर कर अच्छी आदतें डालना।

दैनिक पाठ: हज़रत के पाठ सफलता की कुंजी हैं।

कुछ विशेष गायन इस प्रकार हैं।

1. अंतरतम और प्रकट धन के लिए: उन्होंने कहा कि 'या माने' को 1100 बार और 'मुज़ामिल' को 40 बार पढ़ें, और यदि 40 बार पढ़ने में असमर्थ हों, तो 11 बार पढ़ें।

2. भूख से सुरक्षा: उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति हर रात 'वाकिया' आयत पढ़ता है, उसे भूख का सामना नहीं करना पड़ेगा।

3. मनोकामना पूर्ति के लिए उन्होंने निम्नलिखित श्लोक 'या बड़ी अजायब बिलक हेयर या बदियू' को 12 दिनों तक 1200 बार जपने को कहा।

4. शासक के प्रति दयालु होना: उन्होंने कहा कि अगर शासक के सामने डर हो तो उसे 'कहया ऐन सा कुफ्यतु हमाइंसका' पढ़ना चाहिए और पहले शब्द के उच्चारण के साथ दाहिने हाथ की प्रत्येक उंगली को बंद करना चाहिए और दूसरे शब्द के अक्षर के उच्चारण के साथ बाएं हाथ की उंगलियों को बंद करना चाहिए। फिर दोनों हाथों की उंगलियां बंद होनी चाहिए। और फिर उंगलियों को खोलना चाहिए।

19. शाह मोहम्मद फरहाद देहलवी

शाह मोहम्मद फरहाद देहलवी दुनिया की गंदगी से आज़ाद हैं। वह पवित्र लोगों के मार्गदर्शक हैं। और वह

रहस्यवादी लोगों की सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ। और रहस्यवादी व्यक्तियों के लोगों का मार्गदर्शन करें। और वह वास्तविकता के आकाश का सूर्य था।

माता-पिता: पिता शाही दरबार से जुड़े थे।
और दरबार के महान व्यक्ति। वह बुरहानपुर के गवर्नर थे। वह बुरहानपुर में रहते थे और बुरहानपुर के गवर्नर के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करते थे।

जन्मस्थान: उनका जन्म दिल्ली में हुआ था।

नाम: मोहम्मद फरहाद.

बुरहानपुर में रहना: जब उनके पिता को बुरहानपुर का राज्यपाल नियुक्त किया गया, तो वे अपने पिता की देखरेख में उनके साथ वहीं रहे। और अपनी शिक्षा जारी रखी।

वास्तविकता की खोज: सैयद दोश मोहम्मद जो अपने आध्यात्मिक गुरु सैयद शाह अमीर अबुल अला अहरारी अकबराबादी के साथ रहते थे, के आदेशानुसार वे बुरहानपुर में रहने लगे। वे बुरहानपुर में अपने चमत्कारों से लोगों को अपना आशीर्वाद दे रहे थे। उनके नाम और प्रसिद्धि को जानकर लोग उनके पास आने लगे।

उनके पिता भी अपनी टोली के साथ सैयद दोस्त मोहम्मद के पास जाया करते थे, उस समय उनकी आयु 13 वर्ष थी। उनके चरण चूमने का शौक उनमें बढ़ गया था, वे अकेले ही सैयद दोस्त मोहम्मद के पास जाया करते थे।

प्रतिबंध: उसके पिता को पता चल गया कि वह
सैयद दोस्त मोहम्मद अकेले थे, इसलिए इस कारण से उन्होंने

इस मामले में उसे पाबंद किया गया कि वह उससे मिलने न जाए। लेकिन उस पर पहले से ही प्रेम का प्रभाव था। क्योंकि इस मामले में उसका भाग्य चमकने वाला था। और इस मामले में पाबंदी बेकार हो गई।

अनुरोध: जब उसके पिता को लगा कि उसकी रोक का कोई असर नहीं हो रहा है तो उसने सैयद दोस्त मोहम्मद के पास जाकर उनसे इस मामले में अनुरोध करना उचित समझा। इसलिए वह सैयद दोस्त मोहम्मद के पास गया और उनसे कहा, "उसके साथ एक लड़का है और अगर वह आपके सामने यहाँ आ गया तो वह दुनिया में बेकार हो जाएगा।" उसने कहा, "हम दोनों उसे मना करेंगे कि वह हमारे यहाँ न आए।"

प्रयत्न विफल हो जाएंगे: उसने उसे फिर मना किया, लेकिन उसने इस मामले में सैयद दोस्त मोहम्मद के यहां जाना बंद नहीं किया। प्रेम का तीर उसके हृदय में गहराई तक घुस गया था, और इस कारण उसे निकालना इस मामले में कठिन ही नहीं, बल्कि असंभव भी था।

दूसरी बार: पिता को चिंता हुई तो इस मामले में फिर से सैयद दोस्त मोहम्मद से बात की गई और इस बार हजरत को दूसरे तरीके से जवाब दिया गया और उन्होंने कहा, "आप चाहते हैं कि वह राजा के सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहे। लेकिन अल्लाह चाहता है कि राजा उसके सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहे।"

प्रतिज्ञा और खिलाफत: अंत में उनके पिता ने उन्हें इधर-उधर जाने से मना कर दिया। कुछ दिनों के बाद वे दोस्त मोहम्मद की भक्ति मंडली में शामिल हो गए।

आध्यात्मिक गुरु की सलाह: उनके आध्यात्मिक गुरु दोस्त मोहम्मद ने उनकी मृत्यु के समय उन्हें सलाह दी थी कि उनके बाद वे बुरहानपुर में न रुकें और दिल्ली चले जाएं तथा वहीं रहकर मानवता को सही मार्ग दिखाने में लग जाएं तथा शिक्षा और सलाह दें।

दिल्ली आगमन: अपने आध्यात्मिक गुरु की सलाह पर, बुरहानपुर से प्रवास करके, वे दिल्ली आ गए। उन्होंने अपना पूरा जीवन दिल्ली में रहकर लोगों को सही मार्ग दिखाने और मानवता की सहायता करने में बिताया। उनके अनुग्रह के बारे में सुनकर दूर-दूर से लोग उनके पास आते थे और उनकी संगति में शामिल होते थे। अबुल आलिया फरहादिया के सिलसिले से कई हज़ार लोगों को उनका अनुग्रह और लाभ मिला। कई लोग धर्मपरायण हो गए।

मृत्यु: 25 जमाद थानी सन 1135 हिजरी को उनका देहांत हो गया। उनकी कब्र दिल्ली में स्थित है।

उनके ख़लीफ़ा: शाह मोहम्मद ख़ुदा नुमा और शाह असद अल्लाह उनके प्रसिद्ध ख़लीफ़ा हैं।

जीवनी विवरण: वे उस समय के दुर्लभ संत और कुतुब थे। उनके अदृश्य होने का ऐसा प्रभाव था कि लोग बेहोश हो जाते थे। उनकी संगति और प्रशिक्षण के कारण लोगों ने

ईश्वर के ज्ञान के पद पर पहुँचे। उन्हें जिन्स और अन्स का शेख कहा जाता है। जिन्स मानव रूप में ईश्वर के ज्ञान की उनकी सभाओं में भाग लेते थे और अनुग्रह और लाभ प्राप्त करते थे। उन पर इस हद तक तल्लीनता थी कि उन्हें इस मामले में अपने भोजन और पोशाक का भी ध्यान नहीं रहता था।

हज़रत हमेशा पूरी तरह से और हर समय तल्लीन रहते थे। कभी-कभी ऐसा होता कि शिक्षण की कुर्सी पर बैठे-बैठे ही वह कुछ खोजने लगते।

लोग उससे पूछेंगे कि वह क्या खोज रहा है? और वह कहेगा कि फरहाद यहाँ बैठा था और उसे नहीं पता था कि वह यहाँ से कहाँ चला गया। संक्षेप में, उसके मानवीय गुण स्वर्गदूतों के गुणों में बदल गए।

20. हज़रत शाह मुहादित अब्दुल अज़ीज़ देहलवी।

हज़रत शाह मुहादित अब्दुल अज़ीज़ देहलवी अल्लाह की कृपा का स्रोत हैं। वे ज्ञान के स्रोत हैं। वे अल्लाह के ज्ञान की नदी हैं। और उनकी हक़ीकत की खान का हीरा हैं।

पारिवारिक विवरण: इस पुस्तक के पिछले अध्याय में उनके परिवार और उनके पिता हजरत शाह वली अल्लाह मुहादित देहलवी का विवरण है। यहां यह कहना काफी है कि उनका परिवार हदीस और फिका (इस्लामी न्यायशास्त्र) के अपने ज्ञान के लिए प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध है।

जन्म: उनका जन्म वर्ष 1159 ई. में हुआ था।

उनका नाम अब्दुल अज़ीज़ है, जबकि उनका ऐतिहासिक नाम गुलाम हलीम है।

शिक्षा और प्रशिक्षण: उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण उनके पिता की देखरेख में हुआ। उनके पिता ने उन्हें अभिव्यक्ति और अंतरतम के सभी ज्ञान का अध्ययन कराया।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: उनके पास शिष्य की श्रेष्ठता और पिता की खिलाफत है। उन्होंने अपने पिता के रहस्यवाद के मार्ग का अनुसरण किया है। और इस तरीके को इस मामले में अल्लाह को पाने का सबसे नजदीकी रास्ता कहा जाता है। उनके पिता शाह वली अल्लाह ने कहा, "अल्लाह ने मुझ पर और मेरे समय के लोगों पर बहुत एहसान किया, क्योंकि उसने मुझे रहस्यवाद का ऐसा रास्ता दिया जो इस मामले में अल्लाह तक पहुँचने का सबसे नजदीकी रास्ता है और जो पाँच तरह की श्रेष्ठताओं से युक्त है:

1. इमान हक़ी (विश्वास) 2. क़ुर्ब नवाफ़िल (सुपररोगेटरी प्रार्थनाएँ)। 3. क़ुर्ब वजूब (आवश्यक) 4. क़ुर्ब फ़र्ज़ (अनिवार्य) 5. क़ुर्ब मलाइक (फ़रिश्ते)

जो व्यक्ति इस मार्ग पर चलने का निश्चय करेगा, अल्लाह उसे अवश्य प्रदान करेगा। जैसा कि अल्लाह ने उसे वह्य में सूचित किया है कि अल्लाह ने उसे इस मार्ग का मार्गदर्शक नियुक्त किया है। और मैं तुम्हें आकाश की मंजिल तक पहुंचा दिया। और आज से इस मार्ग के सिवाय वास्तविकता के निकट के सभी मार्ग बंद हो गए। और जो मार्ग तुम्हारा है वह है

प्रेम और अनुसरण का तरीका। और जो तुमसे दुश्मनी करेगा, उसके लिए इस मामले में आसमान और धरती की नेमतें बंद कर दी जाएँगी। इसका मतलब है कि तुम्हारे सारे दुश्मन इस मामले में तुम्हारी सारी नेमतों से दूर रखे जाएँगे।"

पिता की मृत्यु: जब वे 16 वर्ष के थे, तब उनके पिता का निधन वर्ष 1176 हिजरी में हो गया। वे अपने पिता की देखभाल और ध्यान से वंचित रह गए। प्रत्यक्ष रूप से वे अपने पिता के आध्यात्मिक अनुग्रह से दूर हो गए। लेकिन अंतरतम रूप से उन्हें अपने पिता का लाभ और अनुग्रह प्राप्त हो रहा था। अपने पिता के मार्गदर्शन में आसन पर बैठने पर उन्हें सही मार्ग और शिक्षा और शिक्षण में मार्गदर्शन मिलना शुरू हुआ।

शिक्षण: वह पूरे जीवन काल में हदीस निर्देशों की परंपराओं में लगे रहे।

हदीस का पाठ पढ़ाना उनका प्राथमिक कार्य था।
हदीस के ज्ञान का पौधा, जो उनके पिता ने भारत में लगाया था और जिसे उन्होंने बड़ा किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन इसी में बिताया।

1. शिक्षा देना 2. कानूनी राय देना 3. दुश्मनी से अलग करना 4. तज़किर (नसीहत) और उपदेश 5.

शिक्षण एवं प्रशिक्षण।

उनके शिष्यों की संख्या बहुत अधिक थी, तथा उनके द्वारा किए गए अध्ययन का प्रमाण-पत्र प्रकट और अंतरतम था, जिसे गर्व की बात समझा जाएगा।

लोग उनके आशीर्वाद से लाभान्वित हुए और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। उनके शिष्यों में से एक बड़ी संख्या विद्वानों, उत्कृष्ट लोगों, न्यायशास्त्रियों और मुहादितों में से है।

उनके छात्र: उनके गौरवशाली छात्रों की एक बड़ी संख्या विद्वानों, श्रेष्ठ लोगों, न्यायविदों और मुहादितों में से हैं, जो इस प्रकार हैं: उनके भाई मौलाना शाह रफीउद्दीन 2. उनकी बेटी के बेटे, शाह मोहम्मद इशाक मोहादित देहलवी 3. मुफ्ती सदरुद्दीन देहलवी 4.

मौलाना रशीद खान देहलवी 5. हजरत शाह गुलाम अली शाह। 6. उनके दामाद मौलवी अब्दुल हई 7. उनके सगे भाई के बेटे मौलवी मोहम्मद इस्माइल 8. शहीद मौलाना 9. श्री महबूब अली देहलवी। 10. मौलाना हसन अली लखनवी.

विवाह और बेटे: उनका कोई बेटा नहीं है। उनकी तीन बेटियों की मृत्यु उनके जीवनकाल में ही हो गई थी। उनकी बड़ी बेटी का विवाह ईसा से हुआ था, और दूसरी बेटी का विवाह शेख मोहम्मद इस्माइल बिन शेख अहमद से हुआ था। तीसरी बेटी का विवाह मौलाना अब्दुल हई से हुआ था।

अंतिम दिन: वे बीमार हो गए थे और बहुत कमजोर हो गए थे। वे सप्ताह में दो बार अपने प्रवचनों की सभा करते थे। ऐसी बीमारी में, साप्ताहिक प्रवचन देने का दिन आया और फिर, उनकी सलाह के अनुसार, दो व्यक्ति थे जो उन्हें सभा स्थल पर संभाले हुए थे। जब उन्होंने प्रवचन शुरू किया, तो वे दोनों व्यक्ति उनसे अलग हो गए।

उन्होंने अपना उपदेश देना शुरू किया, और उस दिन वे अगली पंक्ति के लिए अपना उपदेश दे रहे थे।

“ज़िवल क़ुर्बा वलियतमा वल मास्किन वा इब्न साबिल।”

इस श्लोक के क्रम के अनुसार उसे अपनी सम्पत्ति और माल का भाग बना दिया गया। उसे आधे श्लोक के बाद पढ़ा गया, जो इस प्रकार है।

“मन निज़ हाज़री शोम तफ़सीर क़ुरान दर बग़ल।”

उनकी अंतिम सलाह: वे फिल्मी लिनेन की शर्ट और हथकरघे का पायजामा पहनते थे। उन्हें सलाह दी गई कि उनका कफ़न उनके पहनावे के अनुसार होना चाहिए। उनके अंतिम संस्कार की प्रार्थना के बारे में कहा गया कि इसे शहर के बाहर आयोजित किया जाना चाहिए। उन्हें राजा के अंतिम संस्कार समारोह में उपस्थित होने से मना किया गया था।

मृत्यु: वर्ष 1239 हिजरी के शव्वाल महीने में उन्होंने इस दुनिया को छोड़ दिया। और उनकी अंतिम सलाह पर अमल किया गया। लोगों की भारी भीड़ थी। 55 बार जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी गई। कब्र पर लगी रोशनी महेंद्र दिल्ली में उनके पिता की कब्र के पास की है।

उनकी कब्र से उपहार स्वरूप कुछ वस्तुएं मिली हैं।

जीवनचरित्र: वे प्रत्यक्ष और अंतरतम के ज्ञान में अद्वितीय थे। उत्कृष्टता और कला में वे असाधारण थे। दया और उपकार के साथ-साथ वे अद्वितीय व्यक्तित्व थे। ज्ञान और कर्म में उनके जैसा कोई व्यक्ति नहीं था।

उन्हें कातिम मुफ़स्सिरिन कहा जाता था (मुफ़स्सिर वह होता है जो तफ़सीर लिखता है, जो कुरान की व्याख्या या भाष्य होता है।)

और मुहद्दियों का नेता (मुहद्दिथ वह व्यक्ति होता है जो हदीस, या पैगंबर मुहम्मद के कथनों, कार्यों और अनुमोदनों को बयान करता है।) वह न केवल एक पवित्र व्यक्ति था, बल्कि वह एक उच्च श्रेणी का मुहद्दिथ और इस्लामी न्यायशास्त्र का विद्वान था। उसके साथ विद्वानों और विद्वानों का एक समूह था। ज्ञान और नक़ीला ज्ञान, वैकल्पिक और गैर वैकल्पिक ज्ञान के ज्ञान में उनकी बहुत पूर्णता थी। अक्ली पारंपरिक ज्ञान है, जबकि नक़्ली कुरान और सुन्नत से प्राप्त ज्ञान, और वर्तमान ज्ञान और पुराने का ज्ञान है। वह सपनों की व्याख्या, उपदेश, लेखन, ज्योतिष, आत्मा के अनुसंधान, बहस के ज्ञान में प्रसिद्ध था, और वह कार्रवाई के विद्वान थे। वह धर्मपरायण, समझ, ज्ञान, अंतर्दृष्टि और क्षतिपूर्ति के व्यक्ति थे, और संतत्व का व्यक्तित्व था।

ज्ञान के प्रति लगाव: उनकी लिखी पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं। प्रसिद्ध पुस्तकें इस प्रकार हैं।

इजाला नफ़ा उसुल हदीथ, बस्तान मुहादितिन, मजमुमा ख़ास रीसेल, शरह मिज़ान अल-मुंतक, रिसाला (पत्रिका) फ़ज़ल ख़ुल्फ़ा, उर्फ़ अज़ीज़ अल एकतबास फ़े फ़ाज़िल बिना अनफ़ास, रेसाला तुहफ़ा एसना अशरी, तफ़सीर फ़तह अल अज़ीज़, रेसाला घना, रेसाला बाई कनिज़न , रेसाला वसीला नजात, रेसाला तफ़सील, रेसाला उसूल मज़हब अबी हनीफा, रिसाला मद जिस्मानी। उनकी कानूनी राय सर्वविदित है। उनके पत्र मौजूद हैं

उन्हें विभिन्न समस्याओं के समाधान खोजने का शौक है। उन्हें कविता का शौक है।

शिक्षाएँ: उनकी शिक्षाएँ धर्म के अनुकूल तथा आचरणपूर्ण हैं, तथा अनेक प्रकार के उपकारों और आशीर्वादों से परिपूर्ण हैं।

• पवित्र व्यक्तियों के प्रकार: उन्होंने कहा कि पवित्र व्यक्ति कई प्रकार के होते हैं। कुछ मुसलमान होते हैं, कुछ हदीस के अनुयायी होते हैं, जैसे कुतुब और ग़ौस, और कुछ तफ़रीद (एकांत, अलगाव) और तफ़रीद (दूसरों से अलग होना) के अनुयायी होते हैं।

ध्यान के प्रकार: उन्होंने कहा कि ध्यान के विभिन्न प्रकार हैं। 1. एनकासी (प्रतिबिंबित) 2. अलकाई (प्रेरणा) 3.

जज़्बी (जुनून) और चौथी किस्म, जिसमें हर तरह की तवज्जुह और खूबियाँ पाई जाएँगी और यहाँ तक कि ज़ाहिर के चेहरे भी एक जैसे हो जाएँगे।

पवित्र लोगों के प्रकार। उन्होंने कहा कि पवित्र व्यक्ति चार प्रकार के होते हैं। 1. सालिक मज्जुब, जो जीवन के आरंभ में पुरुषार्थ करेंगे और आयु के अंतिम काल में आकर्षण रखेंगे। वे सभी लोगों में श्रेष्ठ हैं।

दूसरे, मज्जुब सालिक और शुरू में जोश पाओ और रहस्यवाद अपनाओ। पैगम्बर मूसा की तरह वह आग लाने गए और अल्लाह की रोशनी पाई।

तीसरा है सालिक बख्त, जो जुनून में शामिल नहीं है।
चौथी क़िस्म के मज्जूब माहज़ हुए और अल्लाह के प्रकाश से उनकी बुद्धि छीन ली गई।

इस्लामी कानून में निषिद्ध अवैध कार्यों के प्रभाव: उन्होंने कहा कि इस्लामी कानून में निषिद्ध अवैध कार्यों के कारण कोई संदेह नहीं है और मन में उदासी पाई जाएगी। कुछ अवैध कार्यों के प्रभाव ऐसे होते हैं कि इस कारण से शिष्य का अल्लाह से जो संबंध होगा वह टूट जाएगा। जैसे छल, कपट, अभिमान, घमंड, दिखावा, दुनिया की मांग, पद की मांग, और कुछ लोगों द्वारा यदि छोटा सा पाप भी भूल हो जाए तो दिल पर रोशनी की जगह अंधेरा और छाया छा जाती है।

पूर्ण विद्वान की परिभाषा: उन्होंने कहा कि पूर्ण विद्वान वह व्यक्ति है जो चार चीजों में निपुण होता है। 1. शिक्षण 2.
किताबें पढ़ना। 3. लिखना और बोलना। 4. वाद-विवाद।

क़ुरआन पढ़ने के आचार-विचार: उन्होंने कहा कि क़ुरआन पढ़ने के लिए कुछ आचार-विचार ज़रूरी हैं और मक्का के क़िबला की तरफ़ बैठना। और शब्दों का उच्चारण अच्छी तरह करना। और इसका मतलब है मद्द के अक्षरों से आवाज़ को लंबा करना। और रुकने की जगह पर रुक जाना। और ये ज़ाहिर के आचार-विचार हैं।

और अंतरतम के दूसरे तौर-तरीके ये हैं कि पाठक को यह सोचना चाहिए कि वह अल्लाह के सामने पढ़ रहा है। और अल्लाह वहाँ बैठकर शिक्षक की जगह सुन रहा है। पाठक को यह सोचना चाहिए कि वह अल्लाह के सामने पढ़ रहा है।

उसे यह सोचना चाहिए कि वह अल्लाह की ज़बान से पढ़ रहा है।

वाद-विवाद: एक पादरी मिटकाफ के साथ उनके समक्ष आया।
शर्त तय हुई कि 2000 रुपये की राशि हजरत को दी जाएगी, अगर पादरी बहस हार गए तो। अगर हजरत नहीं जीते तो मिटकैट अपने हाथ से पादरी को शर्त की एक राशि देगा।

पादरी का सवाल: अगर आपके नबी अल्लाह के दोस्त हैं, तो आपके नबी ने कर्बला की जंग में हज़रत इमाम हुसैन के शहीद होने पर कोई शिकायत नहीं की। दोस्त का प्यारा दोस्त ही उसका सबसे प्यारा और सबसे प्यारा होगा। इसलिए अल्लाह बहुत तवज्जो देगा।

हज़रत का जवाब जब पैगम्बर साहब इस मामले में शिकायत करने गए तो उन्हें अदृश्य तरीके से जवाब देते हुए सुना गया, "हां, आपकी बेटी के बेटे पर क्रूरता और निर्दयता थी, और उसे राष्ट्र द्वारा शहीद कर दिया गया था। उस समय, हम अपने बेटे ईसा मसीह की फांसी के कारण ताजा दुख का सामना कर रहे हैं। इसलिए हमारे पैगम्बर यह सुनकर चुप हो गए। इस जवाब से पादरी निरुत्तर हो गए और मिटकाफ ने उन्हें इस कारण शर्त की रकम के दो हजार रुपये भेंट किए।

कानूनी राय: क्या वेश्या स्त्रियों की जनाज़ा नमाज़ पढ़ना जायज़ है या नहीं?

जवाब: जो लोग उनके दोस्त हों और जिनकी नमाज़ जाइज़ हो, तो ऐसी महिलाओं की जनाज़ा की नमाज़ भी जाइज़ है।

दिल्ली में एक व्यापारी ने जाते समय अपनी पत्नी से कहा कि यदि वह उसके पिता के घर चली गई तो उसकी ओर से उसे तलाक हो जाएगा। जब व्यापारी यात्रा से वापस आया और उसे पता चला कि उसकी पत्नी उसके पिता के घर चली गई है तो पत्नी ने विद्वानों से कानूनी राय मांगी जिन्होंने पुष्टि की थी कि उसके लिए तलाक हो गया है। जब वह व्यक्ति उसके सामने आया तो उसे कानूनी राय दी गई कि वह उसके पिता की मृत्यु के बाद चली गई थी। उस स्थिति में वह घर उसके पिता का नहीं बल्कि उसकी पत्नी का था। इसलिए वह अपने घर गई, न कि उसके पिता के घर। सभी विद्वान व्यक्ति उसकी कानूनी राय से सहमत हैं।

1.अल्लाह के ज़िक्र से दिल को शांति मिलेगी।

2. कौशल के लिए प्रेम की शर्त है।

3.सलूकी प्रयासों के अर्जित कौशल का नाम है।

4. प्रत्येक धर्म में पाँच शर्तें अनिवार्य हैं।
बुद्धि की सुरक्षा, आत्मा की सुरक्षा, धर्म की सुरक्षा, उत्तराधिकार की सुरक्षा और धन की सुरक्षा।

5. उपासना का अस्तित्व शरीर का ऐसा उपकार है, जैसा आत्मा शरीर के बिना है।

6.पुरुष में दयालुता की आवश्यकता है, विशेष रूप से निकट-संबंधों में; उसे वफादारी का व्यवहार करने की आवश्यकता है।

गायन :

रिज़्क़ में इज़ाफ़ा के लिए चार रकातों की नमाज़ अदा करें, फिर सजदे में जाकर 104 बार 'या वहाब' पढ़ें, और अगर समय न हो तो 50 बार ही पढ़ें।

निम्नलिखित आयतों की मध्यस्थता से प्रार्थना स्वीकार होगी।

1. ला इलाहा इल्ला अन्ता सुभानका ईनी कुमतुम मिन ज़ालिमिन फास्टजाबाना लहु वा नाजैना गुम्मी वा काज़ालिक नुजेउ अल-मोमिनीन।

2. रब्बी एन्नी मुस्नी फर्रु अन्ता अर्रह्म रहीमिन।

3. वफू मिन अमरी इलाही एनलाहा बसीर बिल-एबाद।

4. क़लू हुस्बनलहु वा नमल वकील।

5. रब्बी इन्नी मक़लूब फंतासीर।

उन्होंने कहा कि शासकों पर नियंत्रण के लिए उन्हें 17 बार नमाज पढ़नी चाहिए और अपनी बगल में फूंक मारनी चाहिए।

“या रहमान कुल शै वा अरहमु या रहमान।”

शासकों के घर की दिशा में एक घर में बैठकर इस प्रार्थना को 200 बार पढ़ना।

“या मुक़ल्लिब अल-क़ुलूब।”

चमत्कार और रहस्योद्घाटन: जब हज़रत जुमे की नमाज़ के लिए जामा मस्जिद जाते थे, तो अपनी पगड़ी से अपनी आँखों को ढक लेते थे। एक व्यक्ति जिसका नाम फ़सीह उद्दीन था, से इस मामले में कारण पूछा गया। तब हज़रत ने अपनी टोपी अपने सिर पर रख ली। वह बेहोश हो गया। उसने कहा कि जामा मस्जिद में पाँच या छह हज़ार लोगों में से केवल 125 इंसान थे, और बाकी कुछ बंदर, भालू और दूसरे जानवरों की शक्ल में थे। उन्होंने उस व्यक्ति से कहा कि इस मामले में एक कारण है कि वह किस तरफ़ देखता है।

कर्नल इस्कीज़ हज़रत के मुरीद हैं और उनके कोई बेटा नहीं है। उन्होंने दरख़्वास्त की है कि हम उनके बेटे के लिए दुआ करें। उन्होंने दुआ की और उन्हें ख़ुशख़बरी दी गई कि उनके घर एक लड़का पैदा होगा। उन्होंने कहा कि जब लड़का पैदा होगा तो उस लड़के का नाम यूसुफ़ रखना।

जब लड़का पैदा हुआ तो कोरोनेल इस्किस ने लड़के का नाम जोसेफ इस्किज़ रखा। जोसेफ और यूसुफ़ दोनों

दोनों का नाम एक ही है, केवल भाषा में अंतर है।

21. हज़रत शाह मोहम्मद अफ़ाक देहलवी

हज़रत शाह मोहम्मद आफ़ाक़ देहलवी जो दुनिया में मशहूर और मशहूर हैं। उन्हें ज़मीन और आसमान पर नाज़ है। वो दीन और दुनिया के गोताखोर हैं। और वो रहस्यों के जानकार हैं। और रौशनियों के भण्डार हैं।

मुबारक जन्म: हजरत जन जन शाह की दुआ से इनका जन्म हुआ। इनका मुबारक जन्म 1160 हिजरी में हुआ।

उसका नाम मोहम्मद अफाक है।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: वे हजरत खाजा जिया अल्लाह नक्शबंदी की भक्ति की मंडली में शामिल हो गए। वे उनके शिष्य बन गए और कुछ समय बाद उन्हें खिलाफत का पद प्राप्त हुआ। प्रयासों और रहस्यमय अभ्यासों के माध्यम से, उन्होंने पूर्णता का पद प्राप्त किया।

प्रतिज्ञा का वंशावली रिकॉर्ड: मोहम्मद अफाक, हजरत खाजा जिया अल्लाह नक्शबंद, खाजा के शिष्य
मोहम्मद जुबैर, खाजा हुज्जत अल्लाह मोहम्मद

नक्शबंद थानी, खाजा मोहम्मद मासूम, और हज़रत मुजदता।

भ्रमण और यात्रा: वह अफ़गानिस्तान गए। अफ़गानिस्तान के लोगों में उनका बहुत सम्मान था।

और बहुत बड़ी संख्या में लोग उनकी भक्ति में शामिल हो गए। अफगानिस्तान का राजा जो उनका शिष्य, भक्त और आज्ञाकारी था।

उनकी पवित्रता का अंदाजा इस मामले में हजरत शाह मोहम्मद गुलाम से लगाया जा सकता है, जो अपने कुछ शिष्यों को उनकी हजूरी में भेजते थे। ये शिष्य ज्ञान पूरा होने पर उनकी हजूरी में लौट आते थे, लेकिन उनका ज्ञान तब मुकम्मल होगा जब हजरत इस मामले में अपनी पूर्णता पा लेंगे।

मृत्यु: हजरत मुहम्मद साहब 7 मोहर्रम सन 1251 हिजरी को इस दुनिया से चले गए । उनकी कब्र दिल्ली में है, जो आज भी उनकी कब्र पर आने वाले लोगों की मुरादें पूरी होने के लिए मशहूर है।

उनके खलीफा हजरत मौलाना फजल गंज मुरादाबादी और हजरत मौलाना नसीर उनके प्रसिद्ध और सुप्रसिद्ध खलीफा हैं।

उनकी शुद्ध जीवनी: वे जुनूनी व्यक्ति थे। वे हमेशा तल्लीनता की स्थिति में पाए जाते थे। प्रेम के संबंध की स्थिति, जो उन पर बहुत हावी थी। वे इस्लामी कानून के साथ-साथ रहस्यवादी तरीके में भी निपुण थे। उनके पास प्रसिद्ध रहस्य थे। और वे

वे एक आदर्श आध्यात्मिक गुरु थे। निर्धनता, विश्वास, संतोष, तप और संयम, पूजा और रहस्यमय अभ्यास, प्रयास और धर्मनिष्ठा में वे सभी से अद्वितीय थे।

और वह अपने समय के शेख थे।

उनकी शिक्षाएँ: वे नक्शबंदिया की सूफी श्रृंखला से संबंधित थे। वे श्रृंखला के पवित्रतम व्यक्ति थे। इसमें निषेध और पुष्टि के स्मरण पर जोर दिया जाएगा।

हज़रत मुजादिद को उनके इस कथन से पता चला कि मनुष्य दस स्तरों से बना है। पाँच स्तर आज्ञाओं की दुनिया के हैं।

और पाँच तत्व सृष्टि की दुनिया से संबंधित हैं। हृदय, आत्मा, सिर, ख़फ़ी (छिपा हुआ) और अख़फ़ी (अधिक छिपा हुआ)। आत्मा, चार तत्व, सृष्टि की दुनिया से संबंधित हैं।

आदेश की दुनिया का हर स्तर एक पैगम्बर के पैरों के नीचे है। दिल का स्तर (लताइफ़ अल क़ल्ब) पैगम्बर आदम के पैरों के नीचे है। सिर का स्तर (लताइफ़ अल सिरी) पैगम्बर मूसा के पैरों के नीचे है। गुप्त स्तर (लताइफ़ ख़फ़ी) पैगम्बर ईसा के पैरों के नीचे है। अकफ़ी का स्तर (लताइफ़ अकफ़ी) पैगम्बर मोहम्मद के पैरों के नीचे है।

इसके बाद तीन तरीकों की सलाह दी गई।

1. ज़िकर 2. रहस्योद्घाटन 3. आध्यात्मिक गुरु का ध्यान, और यही इस मामले में मुख्य विधि है।

ज़िकर दो प्रकार के होते हैं:

1. इस्म ज़ात (व्यक्तिगत) का ज़िकार; 2. निषेध और पुष्टि का जिक्र।

खुलासे इस प्रकार हैं:

1. अहदीस (एकता) 2. फ़ना ज़ात (विनाश)। इसे मैत (संगति) का अवतरण भी कहते हैं। फिर दायरा (चक्र) सुग़रा का अवतरण होगा। फिर दायरा कुबरा का अवतरण हुआ। फिर वेलायत आइला (क्षेत्र) का अवतरण हुआ, फिर दायरा कमालत रेसलात (नबी) का अवतरण हुआ।

उसके बाद दायरा कमालत औवालाज़म (महत्वाकांक्षी), और फिर सलात (प्रार्थना) के दायरा हैकत का रहस्योद्घाटन। फिर दायरा मबुदियात (भगवान)। फिर दायरा हैकत इब्राहीमी, फिर हकत मुसावी, फिर हकत मोहम्मदी, और दायरा हकीकत अहमदी। दायरा हब सराफ (शुद्ध प्रेम) और दायरा तयिन (फिक्सेशन)।

मुर्शद का ध्यान करने का मतलब है कि गुरु अपना दिल शिष्य के दिल के सामने रखता है और अपने साहस को इस बात के लिए खर्च करता है कि ज़िकर की रोशनी, जो उसके दिल में है, शिष्य के दिल में मिल सके।

उन्होंने आध्यात्मिक गुरु के बारे में सोचने पर बहुत ध्यान दिया, और वे शास जहात (छह दिशाएँ) का बहुत ज़िकर करते थे। इसका मतलब है आदेशों की दुनिया। उसके बाद, हब्स डैम (सांस रोककर) द्वारा नकारात्मक और पुष्टि की जाती है

प्रति विषम संख्या। इसका मतलब है कि एक सांस में 21 बार नम्रता से रहें। ध्यान के चार प्रकार हैं: नज़री (नज़र), लसानी (जीभ), कल्बी (दिल), और रूह (आत्मा)।

उनकी कुछ बातें इस प्रकार हैं।

1.हम चाहते हैं कि हमारे रिश्तेदार, परिवार के सदस्य, दोस्त और शुभचिंतक तरक्की करें। लेकिन वह तरक्की नहीं करेंगे। लेकिन जिसके साथ अल्लाह चाहेगा, उसके साथ तरक्की होगी।

2. एक ही ध्यान से सभी चरणों को पार किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए शिष्य में कौशल की आवश्यकता होती है।

3.क्या वहां ग़ौस या कुतुब होंगे जो इस्लामी कानून के विरुद्ध कार्य में शामिल होंगे और ऐसा वहां नहीं होगा।

गायन

हज़रत पैगम्बर पर निम्नलिखित दुआ पढ़ा करते थे।

"अल्ला हम्मा सल्ला अला सैयदना मोहम्मदिन वा अला आले सैयदना मोहम्मद वा बारिक सल्लम।"

वह पैगम्बर पर दस हज़ार बार दुआएँ पढ़ते थे। वह तय्यबा का वाक्य भी 50,000 बार पढ़ते थे। ज़ुहर की नमाज़ के बाद हिज़ बहार नामक किताब पढ़ने का चलन था।

रहस्योद्घाटन और चमत्कार

हाफ़िज़ अशरफ़ कोई शायर नहीं थे और एक दिन उन्होंने अपनी टोपी अपने सिर पर रख ली। और उस दिन से वे एक अच्छे शायर बन गए।

हजरत मौलाना फजल रहमान शाहिब दिल्ली से अपनी मां के लिए पांच रुपये भेजना चाहते हैं। उन्हें मौलाना ने पांच रुपये दिए और कहा कि यह रकम भेज दी जाएगी।

इसके बाद उसने मौलाना को बताया कि यह रकम उसकी मां के पास भेज दी गई है। कुछ दिनों बाद वह अपनी मां से मिलने गया।
तब उसे पता चला कि उसी रात उसे उसकी माँ के दरवाजे पर बुलाया गया था, और वह रकम उसकी माँ को दे दी गई थी। उसे अच्छी तरह से सूचित किया गया था, क्योंकि वह उसका बेटा था।

22. शाह अबू सईद देहलवी

शाह अबू सईद देहलवी पवित्र व्यक्तियों के प्रिय हैं।
वह रहस्यों का खजाना है और वह अल्लाह की असीमित रोशनी की खान है।

पारिवारिक विवरण: उनके पिता की ओर से उनकी वंशावली रिकॉर्ड हजरत शेख अहमद सरहिंदी अलिफ थानी से इस प्रकार जुड़ी हुई है।

अबू सईद बिन शेख सफी अल-कादिर बिन शेख अजीज अल-कादर बिन शेख मोहम्मद ईसा बिन सैफ उद्दीन बिन शेख मोहम्मद मासूम बिन शेख अहमद सरहिंदी अल-मुज्जादिद अलिफ थानी शीर्षक से प्रसिद्ध हैं।

पिता का नाम: शेख सफी अल-कादर.

जन्म: उनका जन्म दूसरी ज़कीद सन 1196 हिजरी को मुस्तफ़ाबाद उर्फ़ रामपुर में हुआ था।

नाम : अबू सईद.

शिक्षा और प्रशिक्षण: उन्होंने दस साल की उम्र में पवित्र कुरान को याद कर लिया था। उन्होंने क़ारी नसीम से कुरान की तिलावत का ज्ञान प्राप्त किया है। उन्होंने नक़ली ज्ञान (कुरान और हदीस से प्राप्त ज्ञान, या प्रकट ज्ञान) के ज्ञान में पूर्णता प्राप्त की है, जबकि अक्ली ज्ञान अर्जित ज्ञान (पारंपरिक) है, और उन्होंने हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ से हदीस (पैगंबर मुहम्मद के कथनों से युक्त परंपराओं का एक संग्रह, जो उनके दैनिक व्यवहार (सुन्नत) के विवरण के साथ, कुरान के अलावा मुसलमानों के लिए मार्गदर्शन का प्रमुख स्रोत है - हदीस से कोई भी कथन) के ज्ञान में प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

प्रतिज्ञा और खिलाफत: ज्ञान पूरा होने पर उसने अल्लाह की खोज का रास्ता अपनाया।

सबसे पहले उन्होंने अपने पिता के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त किया।
फिर अपने पिता से अनुमति लेकर वह हजरत शाह दरगाही के हुजूर में गया और उसके हाथ पर दस्तखत हुआ और कुछ ही दिनों में हजरत शाह दरगाही को अनुमति और खिलाफत दे दी गई।

वह रामपुर से दिल्ली आए थे। उन्होंने काजी सना अल्लाह पानीपती की मौजूदगी में एक पत्र भेजा। काजी साहब ने उनके पत्र का जवाब देते हुए बताया कि हजरत गुलाम अली से बेहतर कोई दरवेश नहीं है।

काजी साहब का पत्र पाकर वह हजरत गुलाम अली के पास गया और उसने अपनी प्रतिज्ञा के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की। इसलिए उसकी प्रार्थना को हजरत गुलाम अली ने अपनी भक्ति में शामिल करके स्वीकार कर लिया और इस मामले में उसे आशीर्वाद मिला। उस समय उसके पहले पीर हजरत दरगाह साहब जीवित थे। उन्होंने इस मामले में भी उसे पहले की तरह ही सम्मान और आदर दिया है।

प्रतिज्ञा का वंशावली रिकॉर्ड: हजरत शेख अहमद सरहिंदी से जुड़ी प्रतिज्ञा का वंशावली रिकॉर्ड इस प्रकार है।

अबू सईद, शिष्य हज़रत गुलाम अली शाह, हज़रत मिर्ज़ा महज़र जेन जान, हज़रत नूर मोहम्मद बदायूँनी, हज़रत सैफ उद्दीन, हज़रत मोहम्मद मासूम, और हज़रत शेख अहमद सरहिंदी।

राष्ट्रीयता की स्थिति: उन्होंने उल्लेख किया है कि "अल्लाह की कृपा से, लंबे समय के बाद वर्ष 1233 हिजरी में जमादिल अल-अव्वल की 15 वीं तारीख को, हजरत पीर दस्तगीर ने उन्हें इस मामले में राष्ट्रीयता प्रदान करने की एक सुखद भविष्यवाणी की। और उन्होंने मुझे सूचित किया कि उनके लिए एक रहस्योद्घाटन हुआ था, और इस कारण से मैंने आपको यह अच्छी खबर बताई है।

वह उसे लखनऊ से मांग रहा था।

और एक पत्र में उन्हें इस प्रकार संबोधित किया गया था: "मैं इस महान परिवार के अंतिम पद के व्यक्ति को देख रहा हूँ, जो आपके बारे में कहा गया है। इससे पहले, मेरी आखिरी बीमारी में, मैंने देखा कि आप मेरे बिस्तर पर बैठे थे। आपको एक राष्ट्र का पद दिया गया है। और अजीब चीजों पर ध्यान देने की योग्यता आपके अलावा किसी और में नहीं पाई जाती। इसलिए इस पत्र को अपने बेटे अहमद सईद को वहाँ अपनी जगह पर रखकर अकेले शुरू करें।

एक अन्य पत्र में उन्होंने उसे निम्नलिखित लिखा।

“अदृश्य को मालूम है कि अबू सईद की मांग करनी है।
हज़रत मुजादद की रूह भी इसकी वजह है। मैंने देखा है कि मैंने तुम्हें अपनी जाँघ पर बैठाया है। जिसके लिए इस मामले में तुम्हारे द्वारा देखे जाने वाले प्रभाव होंगे। जिसे मैंने तुम्हारे हवाले कर दिया है। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ और शहर के बहुत से अमीर लोगों को उनके व्यवहार, सौम्य आदतों, उनकी परिस्थितियों, सरल शहर और मुआवज़ा, ज़िकर और सोच, धैर्य और सहनशीलता और भरोसा, किसी के साथ साझा किए बिना और सही और सही सोचने के लिए। और मेरे पास एक रहस्योद्घाटन भी है।

आपके साथ काम करने की क्षमता है। इसलिए आप यहाँ रहें और सौम्य व्यवस्था का लाभ उठाएँ। और आजीविका और रोजगार के प्रयासों के लिए अल्लाह को समर्पित हो जाएँ।

“हुस्बना लहु नेमत वकील।” (अल्लाह का वादा काफी है।)

हजरत जी को आध्यात्मिक गुरु के आदेशानुसार दिल्ली पहुंचाया गया और सही मार्ग पर मार्गदर्शन में लगाया गया।

उनके आध्यात्मिक गुरु ने उन्हें निम्नलिखित सलाह दी, जो इस प्रकार है।

1. अपने अंतरतम संबंध को हमेशा सुरक्षित रखें।”

2.उपस्थिति और ध्यान में व्यस्त।

3. हर समय और हर परिस्थिति में अपनी याददाश्त मत छोड़ो।”

4. सभी कामों में पैगम्बर की सुन्नत का पालन करें।

5. अपना सारा समय अतिरिक्त नफिल नमाज़ और इबादत में व्यतीत करें और इबादत के सभी स्तंभों को बिना किसी अन्य तिलावत और अज़कार (ईश्वर के नामों और प्रशंसाओं की पुनरावृत्ति, पाठ) और कुरान पढ़ने, आशीर्वाद, अस्तगफ़ार (ईश्वर से क्षमा मांगना) के समायोजन के बिना और सभी मामलों को अल्लाह को सौंपने के बिना सही नमाज़ में करें।

6.रहस्यवादी मार्ग का उद्देश्य आचरण की सजावट है। हमेशा अल्लाह की ओर ध्यान होना चाहिए। ताकि हमेशा बेबसी, विनम्रता और ईमानदारी बनी रहे।

उसका घोषणापत्र पैगम्बर की सुन्नत पर अमल करने के लिए ज़रूरी होना चाहिए। और उसका सबसे बड़ा इरादा अल्लाह की अवज्ञा से दूर रहना चाहिए। हमेशा अल्लाह की तरफ़ ध्यान होना चाहिए।

7. अदृश्य स्रोत से जो भी आय होगी उसे रिश्तेदारों पर खर्च किया जाएगा तथा शेष राशि गरीब लोगों को दी जाएगी।

मृत्यु: हज़रत मुहम्मद साहब सन् 1249 हिजरी में मक्का और मदीना गए और मक्का और मदीना की यात्रा करके दिल्ली वापस आ गए। 22 रमज़ान को वे टोनक गए।

और बीमारी की वजह से वहीं रह गए। ईद-फितर के दिन ज़ुहर और असर की नमाज़ के बीच हज़रत ने 1250 हिजरी में इस दुनिया को छोड़ दिया। उन्हें टोनक में दफ़न किया गया और 40 दिन बाद उनका ताबूत टोनक से दिल्ली लाया गया और उनके शव को ताबूत से निकाल कर ज़मीन में दफ़न कर दिया गया।

खलीफा: उनके बेटे हजरत शाह शाह सईद को उनका उत्तराधिकारी और खिलाफत, साथ ही उनका संरक्षक बनना था।

जीवनचरित्र: वह तीखेपन और कड़वाहट से विचलित नहीं होता। उसे गरीबी और भूख पर गर्व था। हज़रत अपने आध्यात्मिक गुरु के आदेश का सख्ती से पालन करते थे। वह एक महान, विद्वान व्यक्ति थे। वह दरवेश और चमत्कारों वाले व्यक्ति थे।

ज्ञान का शौक: उनकी किताब 'हिदायत तालिबीन' ज्ञान की एक यादगार किताब है।

शिक्षाएँ: छात्र उनकी शिक्षाओं से बहुत लाभान्वित हो सकते हैं।

ज़हीर और बातिन के नामों में अंतर.

हज़रत ने फ़रमाया कि ज़ाहिर और बातिन के नाम में फ़र्क यह है कि ज़ाहिर (प्रकट) नाम के चलने में व्यक्तित्व के नाम की परवाह किए बिना सफ़ाती तजीलात (चमक का एक गुण) व्याप्त होगी।

यहां तक कि अंतरतम के नाम की चाल में भी व्यक्तित्व के नाम की विशेषताओं की चमक मिलेगी। लेकिन कभी-कभी उच्च और पवित्र व्यक्तित्व का अवलोकन भी होगा।

पसंदीदा पूर्णता, नबूवत.

उन्होंने कहा कि हजरत पीर ने महीने ज़काद में धूल के गुलाम के तत्व पर ध्यान दिया है। और नबूवत की पूर्णता का पक्ष लिया है। (इसका अर्थ है व्यक्तित्व की निरंतर चमक) मेरे लतीफा (स्तर) पर भेजा। इस स्थिति और इसके ज्ञान और ज्ञान के क्षेत्रों के लिए केवल यही है कि सभी ज्ञान और क्षेत्र कम हो जाएं। अंतरतम की सभी स्थितियां अज्ञात हो जाएंगी। और इस स्थान पर रंगहीनता और अस्वस्थता की स्थिति होगी, जो समय की प्राप्ति है।

आस्था और विश्वास में सभी प्रकार की शक्ति होगी।
और ज्ञान का कारण स्पष्ट हो जाएगा। और इस स्थिति के अनुयायी नबियों के धार्मिक कानून के अनुयायी हैं।
इस स्थिति में, एक चौड़ाई और

अंतरतम का आकार। और दाग़-धब्बे, जो इस तरह से बढ़ेंगे कि इसकी मोटाई और परिधि ऐसी ही होगी, और इसके कनेक्शन के पहलू में केवल कुछ नहीं होगा, और इस मामले में कसावट और कसावट और कुछ भी नहीं है।

दिरात हकीकत नमाज़ (प्रार्थना की हकीकत): घेरे के बीच में हज़रत की शख्सियत की पूर्णता और चौड़ाई देखी गई। उस जगह की चौड़ाई और ऊंचाई, जिसका उल्लेख करना बहुत मुश्किल है। लेकिन इतनी हकीकत जान लो कि कुरान इसका एक हिस्सा है, और दूसरा हिस्सा काबा की हकीकत (हकीकत) है। इसकी जगह घटना और स्थिति की विशेषता का वर्णन करना मुश्किल है। इस जगह पर हज़रत बीच और इसकी पूर्णता और चौड़ाई के अवतरण में हैं।

जो सालिक (शिष्य) इस पवित्र वास्तविकता से सीख गया है और नमाज़ के समय वैसा ही है, वह इस दुनिया को छोड़कर दूसरी दुनिया में प्रवेश करेगा। आख़िरकार के कथन के अनुसार, उसे इसके बराबर की स्थिति मिलेगी।

तकबीर कहते समय अपने दोनों हाथ दोनों जहानों से उठा ले। और दोनों जहानों को पीछे करके अल्लाहो अकबर का नारा लगाए। और वह सुल्तान के दरबार में उच्च दर्जे का झंडा पेश करेगा और अपने आप को तुच्छ और तुच्छ समझकर डर और महानता के दरबार के खिलाफ सच्चे महबूब पर कुर्बान होगा। और तिलावत के द्वारा जो इस दर्जे के लिए उपयुक्त है, वह हकीकत की शख्सियत से बात करेगा और हजरत को इस मामले में संबोधित करेगा और उसकी जुबान हजरत की संत परंपरा की तरह हो जाएगी।

पैगम्बर मूसा। जब वह सर झुकाने जाएगा, तो यदि वह उद्देश्य-स्तर का ध्यान रखेगा, तो निश्चय ही, बहुत निकटता के साथ, वह श्रेष्ठ के पास आएगा।

प्रसी के समय उसे एक विशेष स्थिति का सामना करना पड़ेगा।
फिर अनावश्यक रूप से प्रशंसा करें, और वह क़ौमा का पालन करेगा।
अपनी भुजाओं को अपनी बगल में रखते हुए सीधी स्थिति में वापस आएँ। फिर वह वास्तविकता के व्यक्तित्व की उपस्थिति में फिर से बगल में खड़ा हो जाएगा।

कुमा करना (अपनी भुजाओं को अपनी बगल में रखकर सीधे खड़े हो जाना)। मेरी दोषपूर्ण बुद्धि के अनुसार, रहस्य यह है कि अब उसका इरादा सजदा करने से संतानोत्पत्ति का है। तो फिर क़ियाम (खड़े होकर सजदा करना) से जाना। और झुकने से सजदा करने तक, इस संबंध को आगे बढ़ाने के लिए बहुत ईमानदारी और ईमानदारी की आवश्यकता है।

सजदा करते समय एक विशेष निकटता प्राप्त होगी, जिसका इस विषय में वर्णन नहीं किया जा सकता। और उसकी समझ के लिए बुद्धि असहाय अवस्था में है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रार्थना का सार यही है कि केवल सजदा करके ही हम उसकी निकटता प्राप्त कर सकें।

बैठने की स्थिति में पिछले अपराध के लिए वह क्षमा मांगेगा। “अल्लाह हुम्मा अघफिरली वा अरहमनी।”

फिर निकटता की मांग के लिए, वह फिर से उकसावे में जाएगा और उसके बाद तुषाद में बैठेगा। rrrrrrr, जिसका अर्थ है तशह्हुद (अरबी: "गवाही

(□□□□□ [विश्वास का]"), जिसे अत-तहियात (अरबी: □□□□□ मुस्लिम प्रार्थना का वह हिस्सा है □□ □, जहां व्यक्ति क़िबला की ओर मुंह करके घुटने टेकता है या ज़मीन पर बैठता है) के नाम से भी जाना जाता है। (मक्का की दिशा में) अल्लाह की स्तुति करता है, और मुहम्मद और "ईश्वर के नेक बंदों" को सलाम करता है, उसके बाद दो प्रशंसापत्र हैं। और अल्लाह के दरबार में अल्लाह की निकटता की कृपा का धन्यवाद और दायित्व।

इस्लामी पंथ के व्यवहार का कारण ईश्वर और पैगम्बरत्व की एकता को प्रमाणित करना है। और जो इसके बिना संभव नहीं है।

फिर वह पैगम्बर पर दुआ पढ़ेगा, क्योंकि उनकी सिफ़ारिश से उसे इस मामले में सभी फ़ायदे मिल सकते हैं।

नबी इब्राहीम की नेमत, जो इसलिए अपनाई गई क्योंकि नमाज़ के वक़्त सच्चे महबूब से तन्हाई मिलती थी। और साथ ही एक ख़ास बैठक और ख़ास संगति, जो नबी इब्राहीम का हिस्सा थी। दरूद की नेमत की वजह से वह इस मामले में एक साथी और दोस्त की बैठक की मांग कर रहे हैं।

कहावतें

1.अनुसरण करने या छोड़ने पर, तब मनुष्य को मानव स्वभाव मिलेगा।

2.निर्धारण पर कार्रवाई करने से स्वामित्व का संबंध स्थापित होगा।

3.जब किसी व्यक्ति पर बिना उद्देश्य के उपकार किया जाएगा तो वह उपकार उसके किसी मित्र के माध्यम से ही उस तक पहुंचेगा।

4. जो व्यक्ति बुद्धि से नहीं मिलता और उसे शुभ समाचार नहीं देता तथा बधाई नहीं देता, वह फकीरों के समान है तथा अपने सम्बन्धियों पर दोषारोपण करता है।

चमत्कार: 40 दिन बाद उनका ताबूत टोंक से दिल्ली लाया गया। जब ताबूत को खोला गया तो पता चला कि अभी-अभी उन्हें अंतिम संस्कार के लिए नहलाया गया था। ताबूत में कोई बदलाव नहीं था। ताबूत के नीचे जो रुई रखी गई थी, उसमें खुशबू आ रही थी।

अंत.